॥ अथ श्री वैराग्यरत्नाकर भाग १ लो. ॥

॥ प्रारंभः ॥

॥ श्री वैराग्यरत्नाकर भाग १ लो. ॥

छपावी प्रसिद्ध करनार

शास्त्री. रामचंद्र दीनानाथ तथा श्रावक कचराभाइ गोपालदास.

घीकांटे अमदावाद "युनियन्" प्रिन्टिंग प्रेसमां शा. घेलाभाइ नरसिंहदासे छाप्यो.

ता. १७-११-१८९० संवत १९४७ ना कार्तिक शुदि ५

किम्मत् रु १ (एक रूपियो.)

॥ अथ श्री शास्त्री अने गूजराती कक्को ॥

॥ ९० ॥

अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ऋ	ॠ	ऌ	ॡ	ए	ऐ	ओ	औ	अं	अः	॥
અ	આ	ઇ	ઈ	ઉ	ઊ	ઋ	ૠ	ઌ	ૡ	એ	ઐ	ઓ	ઔ	અં	અઃ	॥
क	ख	ग	घ	ङ	च	छ	ज	झ	ञ	ट	ठ	ड	ढ			
ક	ખ	ગ	ઘ	ઙ	ચ	છ	જ	ઝ	ઞ	ટ	ઠ	ડ	ઢ			
ण	त	थ	द	ध	न	प	फ	ब	भ	म	य	र	ल	व		
ણ	ત	થ	દ	ધ	ન	પ	ફ	બ	ભ	મ	ય	ર	લ	વ		
श	ष	स	ह	क्ष	ज्ञ ॥	१	२	३	४	५	६	७	८	९	० ॥	
શ	ષ	સ	હ	ક્ષ	જ્ઞ ॥	૧	૨	૩	૪	૫	૬	૭	૮	૯	૦ ॥	

१

क का कि की कु कू के कै को कौ कं कः॥
ક કા કિ કી કુ કૂ કે કૈ કો કૌ કં કઃ॥

क्क ख्ख ग्ग ग्घ ङ्ग. च्च च्छ ज्जज्ज ञ्ञज्झ ञ्ञ ट्ट ठ ड्ड ड्ढ ढ्ढ ण्ण
ક્ક ખ્ખ ગ્ગ ગ્ઘ ઙ્ગ ચ્ચ ચ્છ જ્જ જ્ઝ ૦ ટ્ટ ઠ ડ્ડ ઢ્ઢ ણ્ણ

त्त थ्थ द्द ध्ध न्न प्प प्फ ब्ब भ्भ म्म य्य रर ल्ल व्व श्श ष्ष स्स॥
ત્ત ત્થ દ્દ ધ્ધ ન્ન પ્પ પ્ફ બ્બ ભ્ભ મ્મ ય્ય રર લ્લ વ્વ શ્શ ષ્ષ સ્સ ॥

कृ खृ गृ घृ ङृ चृ छृ जृ झृ ञृ टृ ठृ डृ ढृ णृ तृ थृ दृ
धृ नृ पृ फृ बृ भृ मृ यृ रु लृ वृ शृ षृ पृ सृ हृ ह्रृ क्षृ ज्ञृ

ॐ क्र क्त्र क्त क्त्व क्न क्च क्म क्य क्ल क्व क्ष
ओम् क्र क्त्र क्त क्त्वं क्न क्च क्म क्य क्ल क्व क्ष

क्ष्ण क्ष्म क्ष्य क्ष्व ॥ ख्र ख्य ॥ ग्घ ग्ध ग्न ग्र ग्य ग्र्य
क्‌ष्‌ण क्‌ष्‌म क्‌ष्‌य क्‌ष्‌व ॥ ख्‌र ख्‌य ॥ ग्‌घ ग्‌ध ग्‌न ग्‌र ग्‌य ग्‌र्‌य

ग्ल ग्व ॥ घ्य घ्न घ्र घ्व ॥ ङ्क ङ्क्त ङ्ग ङ्य ङ्म ङ्र
ग्‌ल ग्‌व ॥ घ्‌य घ्‌न घ्‌र घ्‌व ॥ ङ्‌क ङ्‌क्‌त ङ्‌ग ङ्‌य ङ्‌म ङ्‌र

ञ्च ञ्य ॥ च्र च्य च्म च्छ्र छ्य छ्र छ्व च्छ्व ॥ ज्र ज्व
ञ्‌च ञ्‌य ॥ च्‌र च्‌य च्‌म च्‌छ्‌र छ्‌य छ्‌र छ्‌व च्‌छ्‌व ॥ ज्‌र ज्‌व

ज्ज्व ज्य ॥ झ्य झ्र ॥ ट्य ट्र ट्ठ ॥ ठ्य ठ्र ॥ ड्क ड्ग ड्य
ज्‌ज्‌व ज्‌य ॥ झ्‌य झ्‌र ॥ ट्‌य ट्‌र ट्‌ठ ॥ ठ्‌य ठ्‌र ॥ ड्‌क ड्‌ग ड्‌य

ड्व ड्र ड्म ॥ ढ्र ढ्ठ ढ्य ढ्व ॥ ढ्य ढ्र ॥ ण्म ण्र ण्य ण्ह
ड्‌व ड्‌र ड्‌म ॥ ढ्‌र ढ्‌ठ ढ्‌य ढ्‌व ॥ ढ्‌य ढ्‌र ॥ ण्‌म ण्‌र ण्‌य ण्‌ह

ण्व ॥ त्त्र त्र त्न त्व त्य त्म त्प त्प्र त्फ त्ब त्क

ण्‌व ॥ त्‌त्‌र त्‌र त्‌न त्‌व त्‌य त्‌म त्‌प त्‌प्‌र त्‌फ त्‌ब त्‌क

त्स त्स्न त्स्य त्र्य ॥ थ्य थ्र थ्व थ्म थ्ल थ्न ॥ द्ग द्व

त्‌स त्‌स्‌न त्‌स्‌य त्‌र्‌य ॥ थ्‌य थ्‌र थ्‌व थ्‌म थ्‌ल थ्‌न ॥ द्‌ग द्‌व

द्ब द्व्र द्न द्भ्र द्ध्र द्ध्य द्म द्य द्र द्र्य द्व्य द्न्य द्द्र द्व्र ॥ ध्र

द्‌ब द्‌व्‌र द्‌न द्‌भ्‌र द्‌ध्‌र द्‌ध्‌य द्‌म द्‌य द्‌र द्‌र्‌य द्‌व्‌य द्‌न्‌य द्‌द्‌र द्‌व्‌र ॥ ध्‌र

ध्य ध्न ध्म ध्व ॥ न्र न्य न्म न्व न्च न्त न्त्र ॥ प्र प्य

ध्‌य ध्‌न ध्‌म ध्‌म ॥ न्‌र न्‌य न्‌म न्‌व न्‌च न्‌त न्‌त्‌र ॥ प्‌र प्‌य

प्त प्त्य प्न प्म प्ल प्स प्त्र प्व प्च ॥ फ्र फ्य फ्न

प्‌त प्‌त्‌य प्‌न प्‌म प्‌ल प्‌स प्‌त्‌र प्‌व प्‌च ॥ फ्‌र फ्‌य फ्‌न

फ्म ॥ ब्र ब्य ब्द ब्ध ब्व ब्ल ब्न ब्न ब्ज ॥ भ्य भ्र
फ्‌म ॥ ब्‌र ब्‌य ब्‌द ब्‌ध ब्‌व ब्‌ल बन ब्‌न ब्‌ज ॥ भ्‌य भ्‌र

भ्ण भ्न भ्व भ्म ॥ म्र म्य म्ल म्व म्न म्ह ॥ य्र
भ्‌ण ॥ भ्‌न भ्‌व भ्‌म ॥ म्‌र म्‌य म्‌ल म्‌व म्‌न म्‌ह ॥ य्‌र

र्य ण्र्य स्य स्म्र्य क्म्र्य भ्म्र्य घ्र्य य्व ॥ ल्र ल्य ल्क
र्‌य र्‌णय र्‌य सम्‌र्‌य कम्‌र्‌य भम्‌र्‌य घ्‌रय य्‌व ॥ ल्‌र ल्‌य ल्‌क

ल्ग ल्प ल्म ल्व ॥ व्र व्न व्य व्ध व्ह ॥ श्च श्न श्म
ल्‌ग ल्‌प ल्‌म ल्‌व ॥ व्‌र व्‌न व्‌य व्‌ध ॥ व्‌ह ॥ श्‌च श्‌न श्‌म

श्य श्र श्ल श्व ॥ ष्य ष्र ष्क ष्क्र ष्ट ष्ट्य ष्ट्र ष्ट्व
श्‌य श्‌र श्‌ल श्‌व ॥ ष्‌य ष्‌र ष्‌क ष्‌कर ष्‌ट ष्‌टय ष्‌टर ष्‌ट्‌व

२

ष्ट्व ष्ठ ष्ठ्य ष्ण ष्प ष्प्र ॥ स्र स्य स्ख स्व स्क स्ग

ष्‌ट्‌व ष्‌ठ ष्‌ठ्‌य ष्‌ण ष्‌प ष्‌प्‌र ॥ स्‌र स्‌य स्‌ख स्‌व स्‌क स्‌ग

स्त स्त्व्र स्थ स्ध स्प स्ञ स्म स्ज स्न स्प्र स्फ स्त्र

स्‌त स्‌त्‌व्‌र स्‌थ स्‌ध स्‌प स्‌ञ स्‌म स्‌ज स्‌न स्‌प्‌र स्‌फ स्‌त्‌र

स्त्व ॥ ह्ण ह्म ह्न ह्य ह्व ह्ल ह्र ॥

स्‌त्‌व ॥ ह्‌ण ह्‌म ह्‌न ह्‌य ह्‌व ह्‌ल ह्‌र ॥

आमांनो कक्को जूदो छपाव्यो छे. तेनी किम्मत् फक्त २ बे पैसाज राखी छे. जोइए तेमणे अमारे त्यांथी मंगावी लेवो.

प्रस्तावना.

आ सर्व ग्रंथनो अभिप्राय ग्रंथकारे पोतेज, पहेली गाथाना पहेलाज पदमां जणाव्यो छे; के, "संसारंमि असारे" आ सर्व संसार असारज छे. अर्थात् सार वस्तुनी अपेक्षायेज असार कह्यो छे. माटे सार वस्तु ते शी छे ? ने असार वस्तु ते शी छे ? ते बुद्धिमान् पुरुषे तो अवश्य जाणवी जोइए. ते संबंधी थोडामां जाणवा योग्य तो, एटलुंज छे के, जे आत्मभावने विषे वर्त्तवुं, तेज सार छे. अने जे परभाव एटले पुद्गलिक भावमां वर्त्तवुं, ते असार छे. अने आ आखा ग्रंथमां पण तेज वातनो विस्तार वारंवार जणाव्यो छे.

वली आ ग्रंथमां प्रथम असार एवुं संसारनुं विशेषण जे मूक्युं छे, ते वर्णन करवा योग्य एवा वैराग्य रूप वृक्षनुं बीज छे. अर्थात् संक्षेपमां आखा ग्रंथनो अभिप्राय एज पदमां जणाव्यो छे. हवे असार शब्दनो लेश मात्र अर्थ देखाडीए छीए. जेने विषे सार नथी, ते असार कहीए. आ संसारमां कल्पना करीने मानी लीधेली सारी सारी वस्तु शी छे? प्रथम पोतानो देह, स्त्री, पुत्र, परिवारादिक सघलुं छते पण, जो स्त्री आदिकना शरीरमां आत्मा न होय तो, ते सर्वे असार थइ पडे; माटे आत्मा छे एज सार छे. कारण के, अनंतुज्ञान अनंतुदर्शन अनंतुअव्याबाध सुख पण, एज आत्मामां रहेलुं छे. अने ते आत्माने लीधे बीजां सर्वे पदार्थो पण सारां लागे छे. एटले आत्मा वडेज बीजुं सर्वे सुख छे. वली, जेम जेम सूर्यनी समीपे जइए, तेम तेम वधारे वधारे प्रकाश जणाय, वली जेम जेम चंद्रमानी समीपे जइए, तेम तेम वधारे शीतलता जणाय, वली जेम जेम समुद्रनी समीपे जइए, तेम तेम ठंडी हवा वधारे जणाय; तेम, जेम जेम आत्मगुणनी समीपे

जता जइए, तेम तेम वधारे सुखशांति जणाय. अने जेम जेम तेथी (आत्मगुणथी) छेटुं थवाय, एटले परज्ञा-वमां पेसाय, तेम तेम वधारे अशांति थाय, माटे आत्म गुण तो अवश्य प्रकट करवा जोइए. एटले जेम जेम सार वस्तु जणाती जाय, तेम तेम असार उपरथी सहेजेज प्रीति उतरती जाय, जेम के, कोइनी पासे कोडी होय, ने तेने पैशो मळे, त्यारे तेने कोडी छांडवी ते कांइ कठण नथी. तेमज रुपियो मळे, त्यारे पैशो छांडवो कठण नथी. तेमज सोना महोर मळे, त्यारे रुपियो छांडवो कठण नथी. तेमज रत्न मळे, त्यारे सोना महोर छांडवी कठण नथी. तेमज पार्श्वमणि मळे, त्यारे रत्न छांडवुं कठण नथी. तेमज चिंतामणिरत्न मळे, त्यारे ते पूर्वे कहेलुं सघलुं धन मूकवुं कांइ कठण नथी. माटे चिंतामणि रत्न समान तो आत्मगुण छे. ते आत्मगुण प्रकट करवाने माटेज सर्व क्रिया अनुष्ठान करवां पडे छे. ते पण आत्मज्ञान पूर्वक विधि सहित करे, त्यारेज आत्मगुण प्रकट थाय छे. ते आत्मगुणोनो अंत कोइथी कही शकाय तेम नथी. जेम के, आकाशनो अंत कोइ पक्षीथी पामी शकातो नथी. जेम जे पक्षी, पोताना बळवडे जेटला आकाशमां उडी शके छे, ते पक्षी आ आटलुंज आकाश छे, एम समजे छे. जेम मगनरु, चरकलु, समळी, अनल पक्षी, अष्टापद-नामा पक्षी अने गरुड पक्षी ए सर्वे पक्षी कहेवाय छे, तेओ पोत पोतानी पांखना बळ प्रमाणे आकाशमां गमन करी शके छे, परंतु ते सर्वने पण, आकाश अपारने अपार रहे छे. तेम छद्मस्थ जीवोथी पण आत्माना ज्ञानादिक गुणोनो पार पामी शकातो नथी. माटे सर्वोपरि साररूप तो आत्माना ज्ञानादिक गुणोज छे. एम विचारीने तेथी उलटो एटले आ सघलो संसार असाररूप छे. अर्थात् अनेक प्रकारना आधि तथा व्याधि तथा उपाधि तेणे करीने आ संसार भरेलो छे, एवी रीते आ जीव जाणे छे, देखे छे, अने अनुभवे छे,

तोयपण ते आत्मगुण प्रकट करवानो उद्यम बिलकुल करतो नथी. ने कदापि करे छे, तो देहने पोतानुं रूप मानीने करे छे, एटले मनावा पूजावादिकनी लालचे करे छे. माटे ते आत्मगुण शी रीते प्रकट थाय? परंतु ते आत्मगुणो तो, क्यारे प्रकट थाय? के, ज्यारे आ संसारने विषे देहादिक सर्व पदार्थने असाररूप जाणे त्यारेज आत्मगुण प्रकट थाय छे. अर्थात् वैराग्य पाम्या विना आत्मगुण प्रकट थायज नहीं. माटे मोक्ष मार्गमां चालनार पुरुषने तो, वैराग्य पगने ठेकाणे छे, ज्ञान हृदयने ठेकाणे छे, अने धर्म माथाने ठेकाणे छे. तोयपण एक बीजाने परस्पर संबंध रहेलो छे. एटले मोक्षमां जनार पुरुषने पूर्वोक्त त्रणे पदार्थोनुं संपूर्ण बल जोइए. परंतु तेमां प्रथम पगनुं बल बरोबर जोइए; केम के, पगविना चाली शकातु नथी. एटलाज माटे वैराग्यनुं बल दृढ जोइए, ते वैराग्यने जागृत करनार एवो आ वैराग्यशतक नामनो ग्रंथ प्रथम स्थापन कर्यो छे. किं बहुना.

॥ लि. शा, रा. दी. ॥

॥ श्री रंभामंजरी नाटिका. जैनी. ॥

(श्री नयचंद्रसूरि कृत.)

मूल मागधी अने टीका संस्कृत भाषामां छे. अने तेमां आवा ग्रंथना मागधी शब्दानो कोश छे. आ ग्रंथ विद्वानोने अवश्य वांचवा योग्य छे. किम्मत मात्र रु०--८--० छे. जोइए तेमणे शास्त्री रामचंद्र दीनानाथने त्यांथी मंगावी लेवो.

ग्राहकोए याद राखवुं के, आ सुपररोयल वीश फारमनो प्रथम भाग, आखर सूधीमां पण, एक रुपियाथी ओछी किम्मते नहि वेचाय; वळी आ ग्रंथनी १ थी ९९ नकल राखनार पासेथी दरेकनी एक रुपिया प्रमाणे किम्मत् लेवामां आवशे. अने सामटी १०० अने तेथी वधारे राखनारने, शेंकडे दश नकल वधारे आपवामां आवशे. वळी आ ग्रंथना बीजा भागोमां पण वैराग्य तथा अध्यात्मनीज पुष्टि करनारा ग्रंथो आवशे. जेवा के, वैराग्यकल्पलता, अध्यात्मगीता, समकितकौमुदी, इंद्रियपराजयशतक, इष्टोपदेश, सज्जनचित्तवल्लभ, प्रशमरति विगेरे घणा अपूर्व ग्रंथोनो नवो बालावबोध करी प्रसिद्ध करवामां आवशे. तेनी किम्मत् पण, आ भागना हीसाबथीज लेवामां आवशे. वळी, जो ग्राहकोनी मरजी बीजा ग्रंथोना एटले लोकप्रकाश, तथा त्रेशठशलाका पुरुषनुं चरित्र इत्यादिकना बालावबोध ग्रहण करवानी हशे, तो तेम पण थइ शकशे. परंतु ते सघळुं पांचशें ग्राहको थवाथी सत्य थशे; माटे ग्राहकोए पोतानुं नाम, स्थान, लखवुं.—वळी आ ग्रंथ मंगावनारे टपाल खरचना रु ०—२—० साथे ग्रंथनी किम्मत् मोकली आपवी. नहिं तो वेल्युपेएबल पारसलथी मोकलवामां आवशे.

लि. शास्त्री. रामचंद्र दीनानाथ.. सांकडीशेरी जतिनीपोळ. मु. अमदावाद.

॥ श्री जैन बोलविचार संग्रह ॥

આ ગ્રંથમાં ઘણા સિદ્ધાંતોમાંથી, જીવ વિચાર પ્રમુખ પ્રકરણોમાંથી, અને લોક પ્રકાશાદિક ગ્રંથોમાંથી ઘણા શ્રમે કરીને ઉદ્ધાર કરી, બાલ જીવોને સુખે બોધ થવાને, તથા કંઠે કરવાને તથા દરેક જૈનસ્કુલોમાં ચલાવવાને અને થોડી કિમ્મતમાં ઘણું જાણપણું થવાને માટે છપાવી પ્રસિદ્ધ કરવાનો આરંભ કર્યો છે. તેની કિંચિત્ દિશામાત્ર દેખાડવા માટે, આ ગ્રંથને અંતે તે બોલ દાખલ કર્યા છે. આ ગ્રંથ, આ જાહેર ખબર જેવા ટાઈપથી અને આવા (ખીસ્સામાં રહે તેવા) કદનાં (૩૨૦) પૃષ્ઠનો બનાવવામાં આવશે. પુંઠું પાકુ બંધાશે. તેની કિમ્મત્ અગાઉથી ગ્રાહક થનાર પાસેથી ફક્ત રૂ ૦-૮-૦ લેવામાં આવશે. અને પાછળથી તો, અમારી મરજી મૂજબ લેવામાં આવશે. ગ્રાહક થનારે નીચેના શિરનામે પત્ર લખવો. શાસ્ત્રી. રામચંદ્ર દીનાનાથ. સાંકડીશેરી જતિનીપોળ.

મુ૦ અમદાવાદ.

॥ श्री प्रबन्धचिन्तामणिः ॥

તેનું ગુજરાતી ભાષાંતર અમે કર્યું છે. તેમાં સિદ્ધસેન દિવાકરે વિક્રમરાજાને, પાદલિપ્તાચાર્યના શિષ્ય નાગાર્જુને શાલિવાહનરાજાને, શોભનાચાર્યના ભાઈ ધનપાલે ભોજરાજાને, હેમાચાર્યે કુમારપાલરાજાને જૈની કર્યા. તેનો સવિસ્તર ઇતિહાસ, તથા વનરાજથી માંડીને વસ્તુપાલ તેજપાલ સુધી ગુજરાતના રાજાઓનો અનુક્રમે ઇતિહાસ; તથા કાલિદાસ પંડિતને ભોજરાજાની સાથે થયેલો રસિક સંવાદ, તથા મહાકવિ કાલિદાસ અને માઘપંડિત વિગેરેનાં જન્મ ચરિત્ર, આમાં આવેલાં છે. "આ ગ્રંથના અંતમાં કવીશ્વર દલપતરામ ડાહ્યાભાઇ, પોતાના આપેલા અભિપ્રાયમાં લખે છે કે, ટાડ રાજસ્થાન તથા ફાર્બસ સાહેબે રાસમાલાનો ગ્રંથ પણ એ આધારે કરેલો છે." આ શિવાય આ ગ્રંથને માટે વિદ્વાનોના ઉત્તમ અભિપ્રાયો મલેલા છે.

કેવલ સંસ્કૃત	રૂ ૨-૦-૦
કેવલ ભાષાંતર	રૂ ૨-૦-૦
સંસ્કૃત સહિત ભાષાંતર	રૂ ૩-૦-૦

જોઇએ તેમણે નીચેના શરનામેથી મંગાવી લેવું.

શાસ્ત્રી. રામચંદ્ર દીનાનાથ. સાંકડીશેરી જતિનીપોળ.

અમદાવાદ.

॥ ॐ श्री वीतरागाय नमः ॥

॥ श्री वैराग्यरत्नाकर ॥

भाग १ लो.

प्रणम्य परमात्मानं । बालबोधाय लिख्यते ॥
वैराग्यशतकस्यास्य । भाषा टीकानुसारिणी ॥ १ ॥

आ वैराग्य रत्नाकर* नामना ग्रंथना घणा भाग, उत्तेजन मलवाथी प्रकट थवाना छे. तेमां प्राये करीने वैराग्य दशानेज पुष्टि करनार ग्रंथोनो समावेश करवामां आवशे. तेमां आ प्रथम भागमां श्री पूर्वाचार्य महाराजे पूर्वमांथी उध्धार करीने वैराग्यशतक नामनो ग्रंथ रच्यो छे. अने तेनी टीका संवत् १६४७ ना वर्षमां खरतर गछीय श्री जिनचंद्रसूरिना राज्यमां थएला श्री गुणविनयनामा आचार्ये करी छे. तेनो भावार्थ लेइने आ बालावबोध करयो छे. अने एवीज रीतना ग्रंथो पण बीजा भागोमां आवशे. एटलाज माटे आ ग्रंथनुं नाम श्री वैराग्य रत्नाकर राखवामां आव्युं छे.

* वैराग्यने जणावनार ग्रंथोनो समुद्र.

॥ आर्यावृत्तम ॥

४ १ ६ ५ २

संसारंमि असारे । नह्नि सुहं वाहिवेअणापउरे ॥

७ ३ ८ ११ १२ ९ १०

जाणंतो इह जीवो । न कुणइ जिणदेसियं धम्मं ॥ १ ॥

अर्थ–(असार के०) सार रहित एवो, अने (वाहि के०) व्याधि. एटले शरीर संबंधि ड़ःख, (वेअणा के०) वेदना. एटले मन संबंधि ड़ःख, तेणे करीने (पउरे के०) प्रचुर. एटले बहुल अथवा नरेलो एवो, (इह के०) आ (संसारंमि के०) संसारने विषे (सुहं के०) सुख जे ते (नह्नि के०) नथी. (जाणंतो के०) ए प्रकारे जाणतो एवो (जीवो के०) जीव जे ते (जिण-देसियं के०) जिनराजना प्ररूपेला (धम्मं के०) धर्मने (न कुणइ के०) नथी करतो! ॥१॥

नावार्थ–अनेक प्रकारना आधि, व्याधि, अने उपाधि तेणे करीने आ संसार नरेलो ठे, एटले आ असार संसारमां कांइ पण सुख नथी. एवी रीते आ जीव जाणे ठे, देखे ठे, अने अनुनवे ठे; तोयपण आ मूढ जीव! जिन परमात्माना कहेला धर्मने केम नथी करतो !!

आ प्रथम गाथामां एम कह्युं के, आ जीव संसारनुं असारपणु जाणे छे, तोयपण श्री जिनप्रणीत धर्मने नथी करतो; एवुं कह्युं. परंतु न्हानी उम्मरवाळा अने तेज नवने विषे मोक्ष जनारा अने श्री वीरभगवाननी देशना फकत् एकजवार सांभळवाथी दृढ वैराग्यवान् थएला, एटलुंज नही पण ते संसारना असारपणा संबंधी मातापिता साथे प्रत्युत्तर करी, छेवटे माता पितानी आज्ञा लेइ जेणे बाल्यावस्थामां दीक्षा अंगीकार करी एवा श्री अतिमुक्तक कुमारनुं वृत्तांत श्री अंतगडदशांग अने भगवत्यादि सूत्रने अनुसारे नीचे प्रमाणे जाणवुं.

कथा.

पोलासपुर नगरने विषे विजय नामे राजा, तेनी श्री नामनी पट्टदेवी एटले पटराणी ते बे जणानो अतिमुक्तक एवे नामे पुत्र हतो. ते पुत्र बहु उद्यमे करीने महोटो थयो, अनुक्रमे करीने छ वर्षनो थयो, ते अवसरे नगरने बहार श्री वीरस्वामी समोसर्या एटले पधार्या. त्यार पछी ज्ञानवंत एवा गौतम गणधर, श्री वीरस्वामीने पूछीने भिक्षा लेवाने अर्थे नगर मध्ये आव्या, ते अवसरे छोकराउनी संगाथे रमतो एवो अतिमुक्तक कुमार, गौतमस्वामीने देखीने ए प्रकारे पूछतो हवो के, तमे कोण छो? अने केम फरो छो? एम पूछे सते गौतमस्वा-

मीए कह्युं के अमे श्रमण ठीए, अने जिक्षाने अर्थे फरीए ठीए. त्यारे कुमर बोल्यो. हे पूज्य! आवो, हुं तमने जिक्षा अपावुं. एम कहीने ते कुमार गौतमस्वामीनी आंगळीए वळगीने पोताने घेर लाव्यो. ते अवसरे श्रीदेवी घणी खुशी थइ सती जक्तिये करीने गौतमस्वामीने नमस्कार करीने प्रतिलाजती हवी. एटले आहार पाणी आप्यो. त्यार पठी अतिमुक्तक कुमार फरीने ए प्रकारे पूठतो हवो. के, तमे क्यां रहो ठो? त्यार पठी गौतमस्वामी कहेता हवा. हे जद्र! जे उद्यानमां अमारा धर्माचार्य श्री वर्द्धमानस्वामी वसे ठे त्यां अमे वसीए ठीए. एवुं कह्युं. ते अवसरे ते कुमर बोल्यो. हे स्वामिन्! तमारी साथे श्री वीरस्वामीने वंदन करवा माटे हुं आवुं? त्यार पठी गौतमस्वामी कहेता हवा. यथासुखं देवानुप्रिय एटले हे देवताउने वल्लज! जेम तने सुख उपजे तेम. त्यार पठी गौतमस्वामीनी साथे आवीने अतिमुक्तक कुमार जगवंतने वंदन करतो हवो. त्यार पठी जगवंते धर्मनो उपदेश दीधो, ते उपदेश सांजळीने प्रतिबोध पाम्यो एवो अतिमुक्तक कुमार, दीक्षा ग्रहण करवाने इछतो सतो मातापितानी अनुज्ञा लेवाने अर्थे घेर आवीने माता पिताने ए प्रकारे कहेतो हवो. हे अंब! हे तात! में आज श्री वीरस्वामीजीनी पासे धर्म सांजल्यो. ते धर्म, मने रुच्यो.

एटले ते धर्म करवानो मने अभिलाष थयो छे. ते अवसरे ते मातापिता कहेतां हवां. हे पुत्र! तुं धन्य छुं. तुं कृतपुण्य छुं. तुं कृतार्थ छुं. एटले तने धन्य छे अने कर्युं छे पुण्य ते जेणे एवो तुं थयो. अने कर्यो छे अर्थ नाम प्रयोजन ते जेणे एवो तुं थयो. जे कारण माटे तें वीरस्वामीजीनी समीपे धर्म सांभल्यो, अने वली ते धर्म, तने रुच्यो, ते कारण माटे. त्यार पछी ते कुमार फरीने ए प्रकारे कहेतो हवो. हे अंब! हे तात! हुं ते धर्म सांभलवादिके करीने संसारना भये करीने उद्विग्न एटले उपरांठा मनवालो एवो अने जन्ममरणना भय थकी भय पामेलो एवो थयो छुं. ते कारण माटे तमारी अनुज्ञाए करीने एटले रजाए करीने श्री वीरप्रभुजीनी समीपे प्रव्रज्या ग्रहण करवाने इच्छुं छुं, एवुं कह्युं. त्यार पछी ते कुमारनी माता अनिष्ट कहेतां वल्लभ नही एवुं, अने अकांत कहेतां अणागमतुं एवुं, अने अप्रिय एवुं, अने प्रथम कोई दहाडो न सांभलेलुं एवुं, ते कुमारनुं वचन सांभलीने तत्काल शोकना समूह प्रत्ये पामी. एटले शोकातुर थइ. अने दीन अने उदास एवा मने करीने सहित छे मुख ते जेनुं एवी थइ सती, मूर्छा पामीने अंगणातलने विषे एटले घरना आंगणामां धसती सर्व अंगोए करीने पडी: ते अवसरे दासीउए शीघ्र, सोनानो कलश लावीने

ते कलशना मुख थकी नीकलतुं एवुं शीतल अने निर्मल एवुं जल तेनी धाराउए करीने एटले ते पाणीनी धाराउए करीने शींची, एटले छांटी, अने कर्यो छे ताढा वायरानो उपचार ते जेने एवी थइ सती चेतना पामीने विलाप करती थकी पुत्र प्रत्ये ए प्रकारे कहेती हवी. हे जात! तुं अमारे एकज पुत्र छुं. अने अमने इष्ट कहेतां वल्लभ, अने कांत कहेतां मनोज्ञ, अने प्रिय कहेतां प्रियकारी एवो, अने आभरणना करंडिया समान, एटले अमूल्य रत्न तुल्य एवो, अने हृदयने आनंद उत्पन्न करनार एवो, अने उंबराना फूलनी पेठे दुर्लभ एवो, तुं अमारे छुं. एज कारण माटे क्षण मात्र पण तारा विजोगने अमे सहन करवाने समर्थ नथी. ते कारण माटे हे जात! ज्यां सूधी अमे जीवीए त्यां सूधी तुं घरमां रहे. पछी सुखे करीने प्रव्रज्या ग्रहण करजे. एटले दीक्षा लेजे. त्यार पछी ते कुमार कहेतो हवो. हे अंब! तमारुं कहेवुं सत्य छे. परंतु आ मनुष्यनो भव, अनेक जन्म जरा मरणरूप, तथा शरीर अने मन संबंधि अतिशे दुःखनुं वेदवुं एटले भोगववुं ते रूप, उपद्रवे करीने पराभव पामेलो एवो, अने अध्रुव कहेतां अशाश्वत एवो; अने संध्यासमयनां वादलांना रंग सरखो एवो; अने जलना परपोटा सरखो एवो; अने वीजलीना सरखो चंचल एवो;

अने सडी जवुं, पडी जवुं, नाश पामवुं, एछे धर्म कहेतां स्वभाव ते जेनो एवो छे. ते प्रथम अथवा पछी जरूर त्यागवा जोग्य छे. एटले मूकवोज पडशे. हवे कोण जाणे? आपणा मध्ये कोण पहेलुं परलोके जशे? अथवा कोण पछी जशे? एवी खबर पडती नथी. ते कारण माटे तमारी आज्ञाए करीने हमणांज हुं दीक्षा लेवाने इच्छुं छुं. ए रीते कुमारे कह्युं. त्यार पछी फरीने माता पिता ते कुमरने कहेतां हवां. हे पुत्र! आ ताहारुं शरीर विशेष रूपवालुं एवुं अने *लक्षण, †व्यंजनरूप गुणे करीने सहित एवुं, अने नाना प्रकारनी व्याधिए करीने रहित एवुं, अने सौभाग्यपणाए करीने सहित एवुं, अने न हणाएलां एवां, अने उदात्त कहेतां मनोहर अने कांत कहेतां मनोज्ञ एवां, पांच इंद्रिय तेमणे करीने शोभायमान एवुं, एटले अखंडित मनोहर पांच इंद्रियोए करीने सहित एवुं, अने अनेक उत्तम गुणोए करीने सहित एवुं छे. ते कारण माटे, पोताना शरीररूप सौभाग्यादि गुणोने अनुभवीने एटले भोगवीने परिणत वयवालो थइने एटले परिपक्व अवस्थावालो थइने पछी प्रव्रज्या ग्रहण करजे. त्यार पछी ते कुमार फरीने आ प्रकारे कहेतो हवो. हे अंब! हे तात!

---

* लक्षण.=हाथपगनी रेखादिक. † व्यंजन.=मषतिलकादिक.

जे तमे शरीरनुं स्वरूप कह्युं ते मनुष्य·संबंधि शरीर, खलु कहेतां निश्चे डुःखनुंज स्थानक छे. अने नाना प्रकारनी शैकडो व्याधियोने रहेवानुं घर एवुं, अने हाडकांरूप लाकडांथी उत्पन्न थएलुं एवुं; अने नसाजाले करीने विंटाएलुं एवुं, अने माटीना जांमनी पेठे डुर्बल एवुं, अने अशुचिना पुद्गलोए करीने व्याप्त एवुं, अने सडी जवुं, पडी जवुं, अने नाश थवुं ए छे धर्म नाम स्वजाव ते जेनो एवुं आ शरीर, प्रथम अथवा पछी जरूर त्यागवा जोग्य थशे. ए कारण माटे आवा शरीरमां कोण बुद्धिवंत पुरुष रीझ पामे? एटले जे बुद्धिशाली पुरुष होय ते तेवा शरीरमां रंजित नज थाय. ए रीते कुमारे कह्युं. त्यार पछी कुमारनां मातापिता फरीने कहेतां हवां. हे पुत्र! आ ताहारा बापदादाथी आवेलुं एवुं विस्तारवंत धन, कनक, रत्न, मणि, मोती, शंख प्रवालां, आदि पोताने वश्य एवुं प्रधान डव्य छे. जे डव्य सात पेढी सूधी, अतिशे दीनादिकने एटले गरिब लोकोने आपवा मांड्युं अने पोते जोगववा मांड्युं पण क्षय न थाय, एटले खुटी न जाय एवुं छे. ते कारण माटे ए प्रकारनुं आ डव्य ते प्रत्ये पोतानी खुशी प्रमाणे रूडे प्रकारे जोगवीने, पोताने सदृश रूप लावण्यादि गुणोए करीने शोजायमान एवी अने पोताना मननी रुचि प्रमाणे चालनारी एवी घणी

राजकन्याउ परणीने तेमनी साथे आश्चर्यकारी एवां संसार संबंधि नोगसुख नोगवीने पछी दीक्षा लेज्यो. त्यार पछी कुमार कहेतो हवो, हे अंब ! हे तात ! तमे जे द्रव्यादिकनुं स्वरूप कह्युं तेनुं एवी रीते जाणवुं के, ते द्रव्य, खलु कहेतां निश्चे अग्नि, जल, चोर, राजा, दायाद कहेतां गोत्रीलोको ए आदिक घणा लोकोने साधारण छे, एटले घणा लोकोने वश्य छे; पण द्रव्य कांइ एक जणानी पासे रहेतुं नथी. अने अध्रुव कहेतां अशाश्वतुं छे. एटले ते द्रव्य कांइ निरंतर रहेतुं नथी. अने प्रथम अथवा पछी जरूर त्यागवा योग्य थशे. एटले मूकवुं पडशे. तथा मनुष्य संबंधि कामनोग पण अशुचि एटले अपवित्र एवा, अने अशाश्वत एवा, अने वात, पित्त, कफ, शुक्र कहेतां वीर्य अने शोणित कहेतां रुधिर एटलानो छे आश्रय ते जेमने एवा, एटले वात, पित्त, कफ, शुक्र, शोणितमय एवा, अने अमनोज्ञ कहेतां असुंदर एवा, अने विरुप कहेतां मागा मूत्र अने पुरीष कहेतां विष्टा तेणे करीने नरेला एवा, अने दुर्गंध एवा छे उच्छ्वास अने निश्वास ते जेमना, एटले उंचोश्वास अने निचोश्वास जेमनो दुर्गंध छे एवा, अने मूर्ख लोकोए अतिशे करीने सेवेला एवा, अने निरंतर साधुजनने निंदवा जोग्य एवा, अने उत्कृष्टनांगे अनंत संसारना वधारनार

एवा, अने कडुआं फल रूप छे विपाक ते जेमनो, एटले अंते दुर्गतिना फलने आपनार एवा कामभोग छे. इहां कामभोग कहेवे करीने तेना आधारभूत एटले तेमने रहेवानुं स्थानक एवां स्त्री पुरुषनां शरीर जाणवां. ते शरीर पूर्वे कहेला विशेषणोए करीने सहित छे एज कारण माटे तेमने अर्थे एटले ते कामभोगोने अर्थे कोण पुरुष पोताना जीवितने निष्फल करे? एटले जे डाह्यो पुरुष होय ते नज करे. आ रीते कुमारे उत्तर आप्यो. त्यार पछी ते कुमारनां माता पिता, ए प्रकारे विषयने अनुकूल एवां बहु वचनोए करीने ते कमारने लोभाववाने असमर्थ थयां. पछी विषयने प्रतिकूल एवां, अने संजमना भयने देखाडनार एवां वचनोए करीने आ प्रकारे कहेतां हवां. हे पुत्र! नैर्ग्रंथं प्रवचनं कहेतां वीतरागनुं कहेलुं एवुं सिद्धांत अथवा शासन ते सत्य छे. कहेतां साचुं छे. अने अनुत्तर कहेतां प्रधान छे. अने शुद्ध कहेतां दोष रहित छे. अने शल्यकर्त्तन कहेतां माया शल्य, नियाण शल्य, अने मिथ्यात्व शल्य, ए त्रण शल्यनुं नाश करनारुं छे. अने मुक्तिनो मार्ग छे. अने सर्व दुःखने नाश करनार एवुं वीतरागनुं कहेलुं प्रवचन छे. ते प्रवचनमां एटले जैनशासनमां रहेला एवाज जीवो सिद्धिपदने वरे छे. एटले वीतरागनी आज्ञाना पालनार एवाज जीवो

सर्व कर्मे करीने रहित थाय छे. परंतु आ प्रवचन लोढाना चणा चाववानी पेठे अतिशे दुष्कर छे. अने वेलुना कोलियानी पेठे स्वादे करीने रहित छे. अने बे भुजाओए करीने महोटा समुद्रनी पेठे दुस्तर छे एटले दुःखे तरवा जोग्य छे. अने वली आ प्रवचन छे ते तीक्ष्ण खड्गादिने उलंघन करवा जेवुं छे, तथा दोरडादिके करीने बांधेलुं एवुं महाशिलादिक वस्तु तेने हस्तादिके करीने धारण करवा जेवुं छे. तथा असिधारा व्रत सेवन करवानुं छे, एटले जेम खड्गादि, अतिक्रमण करवाने अशक्य छे, तेम आ महाव्रतनुं पालवुं अशक्य छे. वली जैनशासनमां साधुजने आधाकर्मिक औदेशिकादि भोगववाने न कल्पे. एटले जैनना जे साधु होय ते पोताने वास्ते करेलुं ए आदिक बेतालीश दोष सहित वस्तु, ग्रहण करे नही. अने हे पुत्र! तुं तो सदायकाल सुखमां उत्पन्न थएलो छुं. कोइ दहाडो पण दुःखमां रह्योज नथी. एज कारण माटे तुं शीत कहेतां तहाढ अने उष्ण कहेतां घाम, क्षुत् कहेतां क्षुधा, पिपासा कहेतां तृषा, दंश कहेतां डांस, मशक कहेतां मगतरां, अने नाना प्रकारना रोगादिरूप परिषह उपसर्गो प्रत्ये सहन करवाने समर्थ नथी. ते कारण माटे हमणां तने दीक्षा लेवाने अर्थे आज्ञा आपवाने अमे इछतां नथी. अर्थात् हमणां

तने आज्ञा नही आपीए. त्यार पछी कुमार कहेतो हवो. हे अंब! हे तात! त्मेँ जे संजमनी डुष्करता देखाडी, ते डुष्करता खलु कहेतां निश्चे क्लीब पुरुषोने अने कातर पुरुषोने एटले कायर लोकोने अने कुत्सित पुरुषोने अने आ लोकने विषे प्रतिबंधवाला पुरुषोने एटले आ लोकमांज सुख मानी बेठेला तेवाउने, अने परलोकथी अवला मुखवाला थएला एवा लोकोने एटले परलोकना सुखना अजाण लोकोने, अने विषयनी तृष्णावाला लोकोने छे. एटले पूर्वे कहेला एवा लोकोने संजमनुं डुष्करपणु लागे छे. पण खलु कहेतां निश्चे धीरपुरुषने अने संसारना जयथी उद्विग्न थएला एवा पुरुषने डुष्कर नथी. एटले संजम पालवुं कठण नथी. ते कारण माटे हुं तमारी आज्ञाए करीने हमणांज प्रव्रज्या लेवाने इच्छुं छुं. त्यार पछी ते माता पिता फरीने कहेतां हवां. हे बाल! आटलो हठ तुं न कर. तुं शुं समजे छे? त्यारे अतिमुक्तक कुमार कहेतो हवो. हे अंब! हे तात! जे हुं जाणुं छुं तेज नथी जाणतो. अने जे नथी जाणतो तेज हुं जाणुं छुं. त्यार पछी ते माता पिता कहेतां हवां. हे पुत्र! आम केम बोले छे? त्यारे ते कुमर कहेतो हवो. हे माता पिताउ! हुं जाणुं छुं के, जे जन्म्यो तेने जरूर मरवुं छे. परंतु एटलुं नथी जाणतो के, ते क्यारे मरशे?

अथवा किया स्थानमां मरशे? अथवा केवे प्रकारे मरशे? अथवा केटले काले मरशे? ए हुं नथी जाणतो. तथा हुं नथी जाणतो के, किया कर्मोए करीने नरकादिकने विषे जीवो उत्पन्न थाय छे.? पण आटलुं जाणुं छुं के, पोताना करेला कर्मोए करीने जीव नरकादिकोमां उत्पन्न थाय छे. ए रीते कुमारे उत्तर आप्यो. त्यार पछी तेनां माता पिताउ ते कुमरनुं, संजमने विषे स्थिर चित्त जाणीने महोटा आडंबरे करीने निकलवानो महोटो उत्सव करतां हवां. ते अवसरे अतिमुक्तक कुमार स्नान कहेतां नहावुं, अने विलेपन कहेतां शरीरे चंदनादिकनो लेप करवो, अने वस्त्र आभरणादिकोए करीने शोभाव्युं छे शरीर ते जेणे एवो, अने माता पितादिक बहु परिवारे करीने परिवरेलो एवो, महोटी शिबिकामां(पालखीमां) बेसीने नाना प्रकारना वाजिंत्रनो शब्द थए सते ज्यारे नगर मध्ये थइने निकलतो हवो, त्यारे घणा द्रव्यना अर्थि भट्टादि लोको, मनोज्ञ वाणीए करीने आ प्रकारे आशिष् देता हवा. के, हे राजकुमार! तुं धर्मे करीने अने वली तपे करीने कर्मरुपी शत्रु प्रत्ये जीतो. वली हे जगतने आनंदना करनार! तहारुं कल्याण थाउ. वली तुं उत्तम कहेतां प्रधान एवा ज्ञान दर्शन चारित्रोए करीने न जीतेलां एवां इंद्रियो प्रत्ये जीतो. अने अंगीकार करेलो

एवो साधुनो धर्म ते प्रत्ये रूडे प्रकारे पालो. वली तुं निर्विघ्नपणे करीने सिद्धि स्थानकने पामो. ए प्रकारे आशिष् दीधी. त्यार पछी ते अतिमुक्तक कुमार ए प्रकारे जाचक लोकोए स्तवना करवा मांडेलो एवो, अने नगरना रहेनार नर नारीउए आदर सहित जोवा मांडेलो एवो, अने जाचक लोकोने वांछित दान प्रत्ये आपतो एवो, नगर थकी बहार निकलीने ज्यां श्री वीरस्वामीजीनुं समवसरण छे; त्यां आवीने शिबिका थकी उतरयो. एटले पालखीथी हेठो उतरयो. त्यार पछी माता पिता ते कुमारने आगल करीने श्री वीरस्वामीजीनी समीपे आवीने वंदनादि पूर्वक एटले वंदनादि नमस्कार करीने आ प्रकारे कहेतां हवां. हे स्वामिन्! आ अतिमुक्तक कुमार अमने वहालो छे, अने अमने मनोज्ञ छे, अने ए अमारे एकज पुत्र छे. परंतु जेम कमल कादवने विषे उत्पन्न थाय छे, अने वली पाणीने विषे वृद्धि पामे छे. पण कादव अने पाणीए करीने लेपातुं नथी; तेम आ अतिमुक्तक कुमार पण शब्द, रूप, ए छे लक्षण ते जेमनुं एवा कामोने विषे उत्पन्न थयो छे, अने गंध, रस, अने स्पर्श ए छे लक्षण ते जेमनुं एवा भोगोने विषे वृद्धि प्रत्ये पाम्यो छे, पण ते काम भोगोने विषे अने मित्र, ज्ञाति, स्वजन, संबंधि एवा लोकोने विषे लेपायो मथी. अर्थात् म-

मताए करीने रहित छे. वळी आ कुमार संसारना नये करीने उद्विग्न थयो सतो एटले विरक्त मनवाळो थयो सतो आपनी पासे दीक्षा लेवाने इच्छे छे. ते कारण माटे अमे आपने आ शिष्य रूप भिक्षा प्रत्ये आपीए छीए. आप पण आ शिष्यरूप भिक्षा प्रत्ये अंगीकार करो. त्यारे स्वामिए कह्युं, हे देवानुप्रियो! जेम तमने सुख उपजे तेम, पण प्रतिबंध करशो नही. एटले ममता करशो नही. त्यार पछी अतिमुक्तक कुमार भगवंतनुं वचन सांभळीने खुशी थयो सतो भगवंत प्रत्ये त्रण प्रदक्षिणा करीने अने नमस्कार करीने उत्तर पूर्व दिशिने विषे एटले ईशान कूणमां जइने पोतानी मेळेज आभरण माल्य अलंकार प्रत्ये मूकतो हवो. ते अवसरे माता, उज्वल वस्त्रे करीने आभरणादिक प्रत्ये ग्रहण करीने आंखो थकी आंसु मूकती थकी अतिमुक्तक कुमारने ए प्रकारे कहेती हवी. हे पुत्र! पामेला एवा संजम जोगोने विषे तहारे प्रयत्न करवो. अने न पामेला एवा संजम जोगोने पामवाने अर्थे घटना एटले रचना करवी. वळी प्रव्रज्या पाळवाने विषे पोताना पुरुषपणानो अभिमान सफळ करवो. अने प्रमाद तो करवोज नही. ए प्रकारे कहीने त्यार पछी माता पिताओ भगवंत प्रत्ये नमस्कार करीने परिवार सहित पोताने स्थानके

गयां. त्यार पछी अतिमुक्तक कुमार, श्री वीरस्वामी समीपे आवीने वंदनादि करीने प्रवर्जित थयो. त्यार पछी श्री वीरस्वामीए पण पंचमहाव्रत ग्रहण कराववा पूर्वक एटले पंचमहाव्रत ग्रहण करावीने क्रिया कलापादि शीखवाने अर्थे गीतार्थ एवा स्थविर मुनियोने सुंप्यो. त्यार पछी प्रकृतिए करीने जद्रक एवो, अने विनीत एवो, अतिमुक्तक नामे कुमार श्रमण, एक दहाडो महोटी वृष्टि पडे सते एटले घणो वरसाद पडे सते काखने विषे पात्रु अने रजोहरण लेइने बहार निकल्यो. त्यां जलनो प्रवाह वहेतो देखीने बाल अवस्थाना वश थकी माटीए करीने पाल बांधीने जेम नावनो चलावनार नाव प्रत्ये चलावे छे, तेम आ अतिमुक्तक साधु पात्राने, आ महारी नाव छे, ए प्रकारे कल्पना करीने ते पाणीमां चलावतो सतो रमतो हवो. ते अवसरे स्थविर मुनियो तेनी ते अतिशे अघटित चेष्टा देखीने ते साधु प्रत्ये हांशी करता होय ने शुं जेम! एम जगवत् समीपे आवीने जगवंतने ए प्रकारे पूछता हवा. हे स्वामिन्! आपनो अंतेवासी अतिमुक्तक नामे कुमार श्रमण, केटला जवोए करीने सिद्धिपदने वरशे? त्यारे जगवंते कह्युं, हे आर्यो! महारो अंतेवासी अतिमुक्तक साधु, एज जवमां सिद्धिपदने वरशे. ते कारण माटे हे रूडा पुरुषो! तमे अतिमुक्तक कुमार श्रमणनी

जात्यादिकने उघाडवा थकी हीलना न करशो. अने तेने उचित सेवा न करवे करीने निंदा न करशो. अने मने करीने लोकनी समक्ष गर्हा न करशो. अने तेनी अवज्ञा न करशो. वली हे देवानुप्रियो! ए अतिमुक्तक साधुने अखेदे करीने अंगीकार करो. अने अखेदे करीने तेनी सहाय्य करो. तथा भात पाणी लावी आपवारूप विनय करीने एनी वैयावच्च करो. जे कारण माटे आ मुनि, भवनो अंत करनारज छे. एटले संसारनो उच्छेद करनारज छे. अने चरम शरीरवालो छे. एटले आ एने छेल्लुं शरीर छे. ए रीते ते ज्ञानवंत एवा स्थविर मुनियोने भगवंते कह्युं. त्यार पछी ते स्थविर मुनियो भगवंतने वंदन नमस्कार करीने भगवतना वचनने विनय पूर्वक अंगीकार करीने अतिमुक्तक कुमार श्रमण प्रत्ये अखेदे करीने अंगीकार करता हवा. जावत् वैयावच्च प्रत्ये करता हवा. त्यार पछी अतिमुक्तक मुनि जे ते पण, ते पापस्थानने आलोवीने नाना प्रकारनी तपश्चर्यादिके करीने संजम प्रत्ये सम्यक्प्रकारे आराधन करीने अंते अंतकृत केवली थइ सिद्धि प्रत्ये जता हवा. इति अतिमुक्तक मुनिनुं वृत्तांत जाणवुं. इहां अतिमुक्तक कुमारने छ वर्षनी उम्मरमां दीक्षा आपी छे. तेनुं कारण के, भगवंत पोतेज दीक्षा आपनार छे; माटे तेमां विरोध जाणवो नही.

२० ३ ४ ५ १ ७ ६

अद्यं कल्लं परं परारिं। पुरिसा चिंतंति अत्थसंपत्तिं॥

८ १० ९ ११ १२ १३ १४

अंजलिगयं व तोयं। गलंतमाऽऽउं न पिच्छंति ॥ २ ॥

अर्थ–(पुरिसा के०) पुरुष. अर्थात् मूढ पुरुषो जे ते, (अद्यं के०) आज (कल्लं के०) काल्य (परं के०) पहोर. एटले आवते वर्ष, (परारिं के०) परारय. एटले तेथी पण आगल्ये वर्ष, (अत्थ के०) अर्थ. एटले धन तेनी, (संपत्तिं के०) प्राप्ति तेने (चिंतंति के०) चिंतवे छे. एटले विचारे छे. अर्थात् आज महारे संपत्ति थशे, काल्य महारे संपत्ति थशे, पहोर महारे संपत्ति थशे, अथवा परार थशे; एवी आशाये करीने दिवस गमावे छे, परंतु ते पुरुष (अंजलिगयं के०) अंजलिने विषे रहेलुं एवुं (तोयं व के०) पाणी तेनी पेठे (गलंतं के०) गलतुं. एटले स्रवतुं एवुं (आउं के०) आउखाने (न पिच्छंति के०) नथी देखता. ॥२॥

भावार्थ–वली ते मूढ पुरुषो मनमां एम विचारे छे के, महारे आज, काल्य, पहोर अथवा परारय धननी घणी प्राप्ति थशे. एम विचार कस्या करे छे. परंतु हाथोलिमां रहेला पाणीनी पेठे क्षणे क्षणे नाश पामता एवा पोताना आउखानो विचार नथी करता. ॥२॥

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८

जं कल्ले कायवं । तं अज्जं चिय करेह तुरमाणा ॥

११ १० ९ १३ १२ १४

बहुविग्घो हु मुहुत्तो । मा अवरण्हं पडिक्खेह ॥३॥

अर्थ–हे प्राणियो! (जं के०) जे धर्मकार्य (कल्ले के०) काल्य (कायवं के०) करवा योग्य होय, (तं के०) तेने (अज्जं चिय के०) आजज (तुरमाणा के०) उतावळा (करेह के०) करो. केम के, (मुहुत्तो के०) मुहूर्त्त. एटले काळ विशेष जे ते, (हु के०) निश्चे (बहुविग्घो के०) घणा विघ्नवाळो छे. माटे जे धर्मकार्य पहेला पहोरमां करवानुं होय तेने (अवरण्हं के०) अपराह्ण एटले पाछला पहोरे करीशुं. एम (मा पडिक्खेह के०) विलंब न करो. ॥३॥

भावार्थ–हे भव्य जीवो! जे धर्म संबंधी काम काल्य करवानुं होय, तेने उतावळथी आजज करो. केम के, सारां काम करवानी वखते, निश्चे घणां विघ्न आवी पडे छे. माटे जे धर्म कार्य पाछला पहोरे करवानुं होय, तेने पहेला पहोरमांज करी ल्यो. अर्थात् जे धर्म कार्य, जे वखते करवुं घटतुं होय, तेने तेज वखते करी ल्यो. ॥३॥

२ १ ४

ही संसारसहावं,चरियं नेहाणुरायरत्तावि ॥

३ ५ ६ ७ ८ ९ १०

जे पुवएहे दिघा। ते अवरएहे न दीसंति ॥४॥

अर्थ-(संसार सहावं चरियं के०) संसारनो जे स्वन्नाव, तेनुं जे आचरण, तेने देखीने मने, (ही के०) घणो खेद थाय छे. केम के, (जे के०) जे (नेहाणुरायरत्तावि के०) स्नेहना अनुरागे करीने रक्त एवा पण, अर्थात् प्रेम बंधने करी बंधायेला एवा पण, स्वजनादिक जेते (पुवएहे के०) प्रातःकालने विषे (दिठा के०) दीठा, (ते के०) तेज (अवरएहे के०) सांजे (न दीसंति के०) नथी देखाता!! ॥४॥

न्नावार्थ-ही इति खेदे!! अहह!!! अहो! आ संसारनो श्यो स्वन्नाव छे? के, जेना स्वन्नावनो विचार करतां तरतज खेद उत्पन्न थायछे!! केम के,जे परस्पर प्रेमबंधने करीने गाढा बंधायेला छे, तेवा स्वजनादिक पण जे प्रातःकाले दीठा होय, तेना तेज,स्वजनादिक सांजे देखातां नथी!! एटले स्नेहानुरागे करीने गाढपणे बंधायेलाने परस्पर विजोग न पडवो जोइए,

तोपण संसारनो एवो स्वन्नाव ठे के, जे प्रथम क्षणमां दीठुं, ते बीजा क्षणमां तेवुंने तेवुं नथी देखातुं; माटे तेमनो विजोग थाय ठे. एटलुंज नहिं पण स्थूल विजोग पण थया करे ठे.।४।

२ ३ १ ४ ५ ६

मा सुअह जग्गिअव्वे । पलाइअव्वंमि कीस वीसमेह ॥

१३ १४ १५ ७ ८ ९ १० ११ १२

तिन्नि जणा अणुलग्गा । रोगो अ जरा अ मच्चू अ ॥५॥

अर्थ—हे लोको! (जग्गिअव्वे के०) जागवाने ठेकाणे. अर्थात् धर्म कृत्यने विषे (मा सुअह के०) न सूइ रहो. अर्थात् धर्म कृत्यने विषे प्रमाद न करो. अने (पलाइअव्वंमि के०) नासवानी जग्याए (कीस के०) केम (वीसमेह के०) विसामो करो ठो? अर्थात् आ संसार नासवानी जग्या ठे, तो तेमां निरांते केम बेसी रह्या ठो? केम के, (रोगो के०) रोग (अ के०) वली (जरा के०) वृद्धावस्था (अ के) वली (मच्चू के०) मृत्यु (अ के०) ए (तिन्नि जणा के०) त्रण जण जे ते (अणुलग्गा के०) तमारी पुंठे लाग्या ठे. एटले तमारी केडे पड्या ठे. माटे धर्म कृत्यमां प्रमाद न करो. ॥५॥

भावार्थ–हे धर्मार्थि जीवो! जेम आ ठेकाणे लोकोक्ति एवी छे के, जेनी पासे धन होय, तेमणे लूटवानी जग्याए जागता रहेवुं, अने नासवानी जग्याए बेसी न रहेवुं, तेम धर्म कृत्यने विषे प्रमाद न करवो. अने नासवा योग्य एवो जे संसार तेमां बेसी न रहेवुं, शाथी के, रोग, जरा, अने मृत्यु ए त्रण दुश्मनो तमारी पूंठे निरंतर पडेलाज छे, माटे प्रमाद छोडीने धर्म करणीमां सावधान रहो. ॥५॥

२ ४ ३ ५
दिवसनिसाघडिमालं । आउसलिलं जीआए घित्तूणं ॥
१ ६ ७
चंदाइच्चबइल्ला । कालरहट्टं भमाडंति ॥६॥

अर्थ–(चंदाइच्च के०) चंद्र सूर्य रूपी (बइल्ला के०) बलद जे ते (दिवस निसा घडिमालं के०) दिवस रात्रि रूपी घडानी श्रेणीयो वडे (जीआए के०) जीवनुं (आउ के०) आउखा रूपी (सलिलं के०) पाणीने (घित्तूणं के०) ग्रहण करीने (कालरहट्टं के०) काल रूपी रहेंटने (भमाडंति के०) ऊंचे नीचे भमावे छे, अर्थात् ऊंचे नीचे फेरवे छे, ॥६॥

भावार्थ—चंद्र ने सूर्य ए रूप धोळो ने रातो एवा घणा बळवान् बे बळद, ते दिवस ने रात्रि रूपी धोळा ने काळा घडानी श्रेणियोवडे, जीवोनुं आउखा रूप पाणीने उलेची नांखवाने काळ रूप रहेंटने फेरवे छे, माटे हे भव्य प्राणियो! आवुं नजरे जोइने पण तमने संसार उपरथी उदास भाव केम नथी थतो? ॥६॥

६ ८ ७ ९ ११ १० १२ १५ १३ १४

सा नत्थि कला तं नत्थि । उसहं तं नत्थि किंपि विन्नाणं॥

४ ५ ३ २ १

जेण धरिज्जइ काया । खज्जंति काळसप्पेणं ॥७॥

अर्थ—हे भव्य जीवो! (काळ सप्पेणं के०) काळ रूपी सर्पे (खज्जंति के०) खावा मांडेली एवी (काया के०) देह जे ते (जेण के०) जेणे करीने (धरिज्जइ के०) धारण करीए, अर्थात् रक्षा करीए, (सा के०) ते. अर्थात् तेवी (कला के०) बहोतेर कला मांहिली कोइ पण कला (नत्थि के०) नथी (तं के०) ते. अर्थात् तेवुं (उसहं के०) औषध (नत्थि के०) नथी. (तं के०) ते अर्थात् तेवुं (किंपि के०) कांइ पण (विन्नाणं के०) विज्ञान अर्थात् शिल्प चातुरी

(नहि के०) नथी. अर्थात् पडता शरीरनी रक्षा करे, एवी कोइ पण वस्तु नथी. ॥७॥

भावार्थ—काळ रूपी सर्प, आ शरीरनुं भक्षण करी ले छे, ते काळरूपी सर्पने निवारण करे एवी कोइ पण कळा नथी. तथा काळ रूपी सर्पे डशेली कायानुं झेर उतारवा समर्थ कोइ पण औषध नथी. तथा जगतमां अनेक प्रकारनी शिल्प चातुरी छे, पण कोइ शिल्प चातुर्य एवुं नथी के, जेथी काळ रूपी सर्पनुं झेर लागेज नही. माटे हे भव्य प्राणियो! मोटा मोटा समर्थ पुरुषोनां वज्र समांन शरीरने पण काळ रूपी सर्प गळी गयो छे; तो आपणा रांक जेवानी काची कायानो श्यो भरुसो? माटे शीघ्रपणे धर्म कृत्य करी ल्यो. ॥७॥

३ ४ ५
दीहरफणिंदनाले । महिअरकेसर दिसामहदलिल्ले ॥
१ ८ २ ७ ६
ऊ पीअइ काळभमरो । जणमयरंदं पुहविपउमे ॥८॥

अर्थ—(ऊ के०) ऊ इति खेदे! एटले आ घणी खेद कारक वार्त्ता छे. अर्थात् आ वात जे न जाणे तेने पश्चात्ताप घणो थाय छे. (काळ भमरो के०) काळ रूपी भ्रमर जे ते

(दीहर के०) दीर्घ एटले महोटुं (फणिंदनाले के०) शेषनाग रूप छे नाल ते जेनुं एवुं, ने (महिहर केसर के०) महिधर एटले पर्वत ते रूप छे केसरा ते जेने विषे एवुं, ने (दिसा महदलिल्ले के०) दिशा रूप छे महोटां पत्र ते जेने विषे एवुं (पुहवि पउमे के०) पृथ्वी रूप कमलने विषे (जणमयरंदं के०) जनरूप मकरंदने अर्थात् लोक रूपी रसने (पीअइ के०) पीए छे. ॥८॥

जावार्थ—लोकमां एवी प्रसिद्धि छे के, जमरो कमलमांथी एवी रीते रस ले के, जेथी करीने ते कमलने लगार मात्र इजा न थाय, तेवी रीते पोताने रवप जेटलोज मधुरे स्वरे बोलीने थोडो थोडो रस ले छे; परंतु आ जग्याए तो तेनाथी तमाम उलटी रीते जाणवा जेवुं छे. माटे ते वार्त्तानो विचार करतां जव्य प्राणियोने तो दयाना अधिक प्रणामथी कंपारो छूट्या विना रहेज नही!! जेम के, कालरूप असंतोषी एवो एक जमरो छे. ते पृथ्वीरूप कमलमांथी लोकरूपी तमाम रसने व्याधि वेदनारूप क्रूरपणु वापरीने चूशी ले छे. एटले कोइ माणसने ते काल जक्षण कर्या विना रहेतोज नथी. इहां पृथ्वीरूप कमलनुं शेषनाग रूप नालवुं कह्युं, ते लोकोक्तिथी जाणवुं. एटले लोकमां एवुं कहेवाय छे के, आ बधी पृथ्वीने शेषनागे मांथा उपर उपाडी लीधी छे. वली ए पृथ्वी रूपी कमलमां पर्वतो,

ते केसराने ठेकाणे छे. ने दश दिशायो ते महोटां महोटां पांनडांने ठेकाणे छे. आवा महोटा कमलनो रस निरंतर पीतां पण कालरूप भमरो आज सूधी पण तृप्त थयो नथी; ने थतो पण नथी, अने थशे पण नही. माटे हे भव्य प्राणियो ! काल रूपी भमराना आस्वादनमां न अवाय, एवा आत्म स्वरूपने पामवाना साधनमां; प्रमाद छोडीने उद्यम करो ! ! ॥८॥

४ ३ ५ १ २

छायामिसेण कालो । सयलजीआणं छलं गवेसंतो ॥

६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३

पासं कहवि न मुंचइ । ता धम्मे उद्यमं कुणह ॥९॥

अर्थ–(छलं के०) छलने (गवेसंतो के० गवेषणा करतो एवो (कालो के०) काल जे ते, (छायामिसेण के०) शरीरनी छायाने मिषे (सयलजीआणं के०) सकल जीवोनुं (पासं के०) पासु तेने (कहवि के०) कोइ प्रकारे पण (न मुंचइ के०) नथी मूकतो. (ता के०) ते हेतु माटे (धम्मे के०) धर्मने विषे (उद्यमं के०) उद्यमने (कुणह के०) करो. ॥९॥

भावार्थ–हे भव्य प्राणियो ! रात्रि दिवस, छिद्रने खोलतो एटले आ प्राणि क्यारे

स्खलना पामे के, एने हुं पकडी लेउ, एवी वांछाये निरंतर छायाने मिषे पकडवाने माटे पछवाडे पडेलो एवो जे काल,ते कोइ प्रकारे पण पाछो हठे एवो नथी एतो जरूर उचिंतो झाली लेशे. ते वखते तमने घणो पश्चात्ताप थशे, के, अरेरे !! आपणे कांइ पण धर्म साधन करी शक्या नहीं ! माटे जिनप्रणीत अहिंसादिक धर्मने विषे, ज्यां सूधी कालना झपाटामां बराबर नथी आव्या, त्यां सूधीमां कांइ पण प्रयत्न करी ल्यो. ॥ए॥

२ १ ४ ३

कालंमि अणाईए । जीवाणं विविहकम्मवसगाणं ॥

१० ११ ७ ५ ६ ८ ए

तं नत्थि संविहाणं । संसारे जं न संभवइ ॥१०॥

अर्थ–(अणाईए के०) आदि रहित एवा (कालंमि के०) कालचक्रने विषे परिभ्रमण करता एवा, ने (विविहकम्मवसगाणं के०) नाना प्रकारना कर्मने वश थएला एवा (जीवाणं के०) जीवोने (संसारे के०) संसारने विषे (जं के०) जे (संविहाणं के०) संविधान, अर्थात् एकेंद्रियादिक भेद (न संभवइ के०) प्राप्त थयेलो नथी संभवतो एम,

(तं नत्थि के०) ते नथी. अर्थात् सर्वे एकेंड्रियादिक नेद ए जीवने थएला संनवे छे. ॥१०॥

नावार्थ–काल, कर्म, जीव, अने संसार ए सर्वेनुं अनादिपणुं छे. माटे आ जीव कर्मना वशे करीने अनादि कालनो कालचक्रने विषे परिभ्रमण करतां करतां संसारने विषे सघला एकेंड्रियादिक नेदने पामी चूक्यो छे. पण एवुं न कही शकाय के, अमुक नेद नथी पाम्यो. माटे हे नव्य प्राणियो! आज तमे अहंकार करोछो, पण तमे तो केटलीएक वखत गधेडा पण थया छो, कूतरा पण थया छो, अनेवली ज्यारे बोर मूला मोगरीआदिकनी जातिमां उत्पन्न थया त्यारे तो तमने न्हानां छोकरांए पण दाणा साटे वेचाथी लीधा, एटलुंज नही पण उपर माग्यामां पण गया; यावत् विष्टाने विषे कीडापणे पण उत्पन्न थइ चूक्या छो. तेना तेज तमे, आज शेठ शाहूकार बनीने बेठा छो. माटे तमे सर्व प्रकारनुं मान मूकीने धर्म कार्यमां प्रवर्त्तो. ॥१०॥ ॥अनुष्टुप्वृत्तम्.॥

२ ३ १ ४ ५
बंधवा सुहिणो सव्वे। पिअमाया पुत्तन्नारिया॥
८ ९ ७ ६
पेअवणाउ निअत्तंति। दाऊणं सलिलंजलिं॥११॥

अर्थ-(सव्वे के०) सर्व एवा (बंधवा के०) बांधव (सुहिणो के०) सुहृद् एटले मित्रो तथा (पिअमाया के०) माता पिता (पुत्तदारिया के०) पुत्र तथा स्त्री, ते सर्व जे ते, मरी गयेला मनुष प्रत्ये (सलिलंजलिं के०) पाणीनी अंजलीने (दाऊणं के०) आपीने (पेअवणाउ के०) श्मशान थकी (निअत्तंति के०) पाछा घेर आवे छे. पण मरेला मनुष्यनी संगाथे कोइपण मनुष्य जता नथी. ॥ ११ ॥

भावार्थ-हे जीव! आ सघला देहना संबंधि छे. पण ए कोइ तहारु संबंधी नथी. केमके, स्वजन तथा मित्रो, माता, पिता, पुत्र, अने स्त्री ए कोइ माणस तहारां सगां नथी. केमके, जे देहनी संगाथे तेमने संबंध हतो, ते देहने बाली कूटीने पछी पाणीनी अंजली आपीने अर्थात् ते फरीथी पाछा घेर आववाना नथी एवी आशा मूकीने श्मशान थकी पोत पोताना स्वार्थने संभारतां पाछां पोत पोताने घेर जायछे. पण तेमानुं कोइ वहालुं सगु ते जीवनी साथे जतु नथी. ॥११॥

॥आर्यावृत्तम्.॥

३ २ ५ ४ ७ ६ ८

विहडंति सुआ विहडंति । बंधवा वल्लहा य विहडंति ॥

९ १२ १३ १४ ११ १ १०

इक्को कहवि न विहडइ । धम्मो रे*जीव जिणभणिउ ॥१२॥

अर्थ–(रे जीव के०) हे अज्ञानी जीव! (सुआ के०) पुत्र तथा पुत्रीयो जे ते (विहडंति के०) विघटे छे. अर्थात् तेनो विजोग थाय छे. तेज रीते (बंधवा के०) स्वजन जे ते (विहडंति के०) विघटे छे. अर्थात् स्वजननो पण विजोग थाय छे. (य के०) वली (वल्लहा के०) वहाली स्त्रीयो पण (विहडंति के०) विघटे छे. एटले तेनो पण विजोग थाय छे. एज रीते सर्वे वस्तुनो विजोग थाय छे, पण (इक्को के०) एक (जिणभणिउ के०) जिनपरमात्माये कहेलो (धम्मो के०) धर्म जे ते (कहवि के०) क्यारे पण (न विहडइ के०) वियोग पामतो नथी. ॥ १२ ॥

*इहां हे एवुं संबोधन न मूकतां रे एवुं जे अधम सबोधन मूक्युं छे, तेनु ए प्रयोजन छे के, आ जीवने धर्म विना कोइ पण सहाय्यकारी नथी. तोपण तेने मूकीने अज्ञानताथी बीजाने सहाय्यकारी मानी बेठो छे माटे.

नावार्थ—हे मुग्ध जीव ! तुं विचार करय के, आ संसारमां तहारुं कोण छे? केम के, पुत्र, स्वजन, अने वहाली स्त्रीयो इत्यादिक सर्वेनो विजोग थायछे. एटले तेमने मूकीने तुं जईश, अथवा तने मूकीने ते जशे. माटे ज्यां संयोग छे, त्यां निमाये विजोग छेज. पण एक जिनराजनो कहेलो धर्म एटले जीवने दुःखमां पडतां धरी राखे माटे धर्म कहीए. ते धर्मनो कोइ काले पण विजोग नथी थतो. अर्थात् आ जीवने साचुं सगपण तो धर्मनुंज छे. अने बीजुं सर्वे सगपण फोगट छे. ॥१२॥

१ २ ३ ४
अडकम्मपासबद्धो । जीवो संसारचारए ठाइ ॥
५ ६ ७ ८
अडकम्मपासमुक्को । *आया सिवमंदिरे ठाइ ॥१३॥

अर्थ—हे आत्मन् ! (अडकम्मपासबद्धो के०) आठ कर्म रूपी पासे बंधाणो एवो

*आ जीव ज्यां सूधी कर्म वडे बंधायेलो छे, त्यां सूधी एने महोटा पुरुषो जीव कहे छे. अने जेम जेम कर्मथी मूकातो जाय छे, तेम तेम तेने आत्मा कहीने बोलावे छे. तेवी वात जणाववाने माटे आ गाथामां जीव तथा आत्मा एवा बे शब्दो मूकेला छे.

(जीवो के०) प्राणी जे ते (संसारचारए के०) संसार रूपी बंधिखानाने विषे (गइ के०) रहे छे. ने (अडकम्मपासमुक्को के०) आठ कर्म रूपी पासथी मूकाएलो एवो (आया के०) आत्मा जे ते (सिवमंदिरे के०) मोक्ष मंदिरने विषे (गइ के०) रहे छे. एटले एक समयमां बीजा क्षेत्रने न स्पर्श करतो मोक्षने पामे छे. ॥१३॥

भावार्थ–हे जीव! तुं विचार करय के, आ जगत्मां एक पास वडे बंधायेलो मनुष्य पण मूकाइ शकतो नथी, तो, तुंतो आठ कर्म रूपी आठ पास वडे बंधायेलो छुं, ने तेमां वली संसार रूपी बंधिखानाना घरमां पड्यो छुं. तोपण तेमां मिथ्या सुख मानी बेठो छुं, पण तेमांथी निकलवानो उद्यम नथी करतो, पण ज्यारे त्यारे, तेमांथी निकलवानो उद्यम करीने ज्यारे आठ कर्म रूपी पासने तोडीश; त्यारेज तुं मोक्ष मंदिरमां जईश. पण ते विनातो तने अविनाशी सुख क्यारे पण मलवानुं नथी. ॥१३॥

१ २ ४ ३
विहवो सज्जणसंगो । विसयसुहाइं विलासललिआइं ॥
६ ५
नलिणीदलग्गघोलिर। जललवपरिचंचलं सव्वं ॥१४॥

अर्थ–(विहवो के०) विभव एटले लक्ष्मी जें ते, तथा (सज्जणसंगो के०) माता, पिता, भाई, भार्या, इत्यादिकनो जे संबंध ते, तथा (विलास के०) विलासे करीने (ललिआइं के०) सुंदर एवां (विसय सुहाइं के०) विषय सुख (सव्वं के०) ए सर्व जे ते (नलिणी के०) कमलिनी (पोयणी) तेना (दलग्ग के०) पांनडाना अग्र भागने विषे (घोलिर के०) घुमरातु अर्थात् रहेलुं एवुं (जललव के०) पाणीनो बिंद तेना जेवुं (परिचंचलं के०) अतिशे चंचल छे. अर्थात् अल्प वायुथी पण शीघ्रपणे पडी जाय तेवुं छे. ॥१४॥

भावार्थ–आ जीवे मानी लीधेला एवा जे सुखकारी पदार्थ, जेवां के, लक्ष्मी, सगां, संबंधी, तथा अनेक प्रकारना विलासे करीने शोभतां एवां पंच विषयनां सुख ए सर्वे अतिशे चंचल छे. जेम कमलना पांनडाना अग्रभागमां रहेलुं पाणीनुं टींपुं थोडी वारमां स्वभावेज नाश पामे छे. तेम ते सघलुं सुख पण थोडा कालमां हतुं नहोतुं थइ जाय छे. माटे हे जीव! एवा अतिशे अस्थिर विषय सुखने विषे तुं शुं आसक्त थाय छे? ॥१४॥

१ ३ २ ४ ६ ५ ७ ८

तं कह बलं तं कह । जुव्वणं अंगचंगिमा कह ॥

११ १२ १३ १० ९

सव्व मऽणिच्चं पिच्छह । दिठ्ठंनठ्ठं कयंतेण ॥१५॥

अर्थ—हे प्राणियो ! (तं के०) ते (बलं के०) शरीरनुं बल (कह के०) क्यां गयुं? वली (तं के०) ते (जुव्वणं के०) जवानीपणु (कह के०) क्यां गयुं? वली (अंगचंगिमा के०) शरीरनुं सुंदर पणु (कह के०) क्यां गयुं? ते हेतु माटे (कयंतेण के०) काले करीने (दिठ्ठंनठ्ठं के०) प्रथम दीठुं, ने पछी नाश पाम्युं एवुं, (सव्वं के०) सर्व वस्तु (अणिच्चं के०) अनित्य एवाने (पिच्छह के०) अवलोकन करो. अर्थात् विचारी जुओ. ॥१५॥

भावार्थ—केटलाएक पुरुषोने प्रथम जवानीपणामां घणा बलादिके सहित जोइने, पछी तेमने वृद्ध अवस्थामां अति निर्बल जोइने उपदेश करेछे. के, हे प्राणी! तारी जवानीपणानी शोभाये सहित शरीरनुं बलादिक क्यां गयुं? अहो! काले करीने हतुं नहोतुं थइ गयुं.!! माटे सर्वे वस्तु अनित्य छे. एम जाणी रात्रि-दिवस करवा मांडेली एवी शरीरनी सु-

श्रुषा तेने उंडी करो, केमके, तमे गमे तेटलुं इव्यादिकनुं खरच करीने शरीरनी साचवणी करो, तोपण ते शरीरनी जवानी कादि काळे तेवीने तेवी रहेवानी नथी. माटे जेनी सेवा निष्फळ न जाय, एवा धर्मनी सेवामां तत्पर थाउ. ॥१५॥

घणकम्मपासबद्धो । जवनयरचउप्पहेसु विविहाउ ॥
पावइ विडंबणाउ । जीवो को इह्न सरणं से ॥१६॥

अर्थ–(घणकम्मपासबद्धो के०) निविड कर्म रूप पासाए एटले गांठ्योए बंधायेलो एवो (जीवो के०) जीव जे ते (जवनयर के०) संसाररूपी नगरना (चउप्पहेसु के०) चौटाने विषे. अर्थात् च्यार गति रूप चौटाने विषे (विविहाउ के०) अनेक प्रकारनी दुःख दाइ एवी (विडंबणाउ के०) विटंबनाने (पावइ के०) पामे छे. ए हेतु माटे (इह्न के०) ए संसारने विषे (से के०) ते प्राणीने (को के०) कोण (सरणं के०) रक्षण करनार छे? अर्थात् कोइ पण नथी. ॥१६॥

भावार्थ–हे प्राणिन्! आ जीव घणां कर्म रूप पासबंधथी बंधायेलो एवो संतो च्यार गति रूप संसारना चोगानमां (चौटामां) अनेक प्रकारनी शरीरने तथा मनने दुःखदायक बंधनादि रूप विटंबनाने पामे छे. त्यां तेने रक्षण करवा कोण समर्थ छे? अर्थात् ते जीवनी रक्षा करनार धर्म विना बीजुं कोइ पण समर्थ नथी. ॥१६॥

घोरंमि[2] गप्नवासे[4] । कलमलजंबालअसुइबीनछे[3] ॥

वसिओ[7] अणंतखुत्तो[6] । जीवो[1] कम्माणुनावेण[5] ॥१७॥

अर्थ–(जीवो के०) जीव जे ते (घोरंमि के०)घोर एटले नयानक एवो(कलमल के०) पेटमां रहेला द्रव्यनो (पदार्थोनो) समूह ते रूप (जंबाल के०) कादव तेणे करीने (असुइ के०) अशुचि नरेलो एवो, ने (बीनछे के०) बीनत्स. कहेतां कमकमाट नरेलो एवो (गप्नवासे के०) गर्नवासने विषे (कम्माणुनावेण के०) शुनाशुन कर्मना प्रनावे करीने (अणंतखुत्तो के०) अनंतीवार (वसिओ के०) रहेलो छे. पण ते दुःखने नूली जइने फरीथी अनंती

वार गर्जावासमां डुःख जोगववुं पडे, एवुं कृत्य करे छे. परंतु फरीथी गर्जावासमां न आववुं पडे; एवो उद्यम नथी करतो ए घणुं आश्चर्य छे! ॥१७॥

जावार्थ—हे महामुग्धप्राणिन्!! आ संसारमां सारा माणसनी एवी रीत छे के, जे जग्याए घणुंज डुःख पड्युं होय, ते जग्याए फरीथी न जाय. पण आ जीवनोतो एवो अवलो स्वजाव छे के, तेज जग्याए वारंवार जवाय एवो उपाय कस्या करे छे. पण ते थकी विराम नथी पामतो. तेने जोइने ज्ञानी पुरुष उपदेश करे छे के, गर्जावासमां घणुंज कष्ट छे. के, जेनुं वर्णन पण बरोबर थइ शक्तुं नथी. तोयपण इहां यत्किंचित् कहीए छीए. ते गर्जावास अनेक प्रकारना मलमूत्रनी डुर्गंधथी जरपूर छे. के, जेमां सारी हवा आववानो तो लेश मात्र रस्तोज नथी. ने अनेक प्रकारना सूक्ष्म जंतुउ ते गर्जना कोमल शरीरने घणी वेदना उपजावे छे. ने, ते गर्जने नाशी जवानी जग्या नथी मलती, तेथी वारंवार मूर्छा खाइ तेनी ते वेदना सहन करे छे. वली त्यां अनेक प्रकारनी रूंधणा थायछे तेनी वेदना, तथा जठराग्निथी थयेली उष्ण वेदना, इत्यादिक कमकमाट जरेली अनेक वेदनाउने सहन करतो उंधे मांथे नवमास सूधी टटलतो हतो. माटे हे जीव! ते डुःखना दिवस तें अनंतीवार जोगव्या

तोपण तुं केम नूली जाय छे? अनै फरीथी पाछां तेनांतेज छुःख पामवाना उपाय केम करया करे छे? ॥ १७ ॥

३ ५ १ २ ४

चुलसीइ कीर लोए। जोणीणं पमुहसयसहस्साइं ॥

७ ८ ६ ए १०

इक्किक्कम्मि अ जीवो। अणंतखुत्तो समुप्पन्नो ॥१८॥

अर्थ–(लोए के०) लोकने विषे (जोणीणं के०) जीवनी उत्पत्तिनां स्थानक (चुलसीइ के०) चोराशी (पमुह के०) प्रमुख (सय सहस्साइं के०) लाख, एटले चोराशी शब्दने प्रमुख कहेतां अग्रेसर करीने लाख शब्द जोडवो. अर्थात् चोराशी लाख जीवने उपजवानां स्थानक छे. (कीर के०) निश्चे. एटले ए वात शास्त्रमां कहेली छे. ते चोराशीलाख योनिने विषे (जीवो के०) जीव जे ते (इक्किक्कम्मि के०) एकेक योनिने विषे (अ के०) वली (अणंतखुत्तो के०) अनंतीवार (समुप्पन्नो के०) उत्पन्न थयो छे. ॥१८॥

नावार्थ–हे जीव! तुं चोराशी लाख जीवा जोनीने विषे अनंतीवार भ्रमण करी

आव्यो तुं. ने, ते ते जीवा जोनीने विषे अनेक प्रकारनां छेदन भेदननां दुःख, तें अनंतीवार सहन कर्यां, तोय पण ते उत्पत्ति स्थानमांथी कंटाळो पामीने, धर्मकृत्य करवाने विषे तुं प्रीति केम जोडतो नथी? ॥१८॥

३ १ ५ ४

मायापियबंधुहिं । संसारत्थेहिं पूरिओ लोगो ॥

२ ११ ६ ८ ७ १० ९

बहुजोणीनिवासीहिं । नय ते ताणं च सरणं च ॥१९॥

अर्थ—(संसारत्थेहिं के०) संसारने विषे रहेला एवां, ने (बहुजोणी के०) घणी एवी योनि एटले चोराशी लाख योनी, तेने विषे (निवासीहिं के०) निवास करीने रहेलां एवां (माया पिय बंधुहिं के०) माता पिता ने बंधु, तेमणे करीने (लोगो के०) लोक जे ते (पूरिओ के०) पूरेलो छे. (ते के०) ते सर्व (च के०) वळी तहारुं (ताणं के०) रक्षण करनार, अने (च के०) वळी तहारे (सरणं के०) शरण करवा योग्य (नय के०) नथीज. केम के, जे पोतेज बंधनमां पड्यो होय, ते सामाने बंधनथी शी रीते छोडावे? ॥१९॥

भावार्थ—हे जीव ! आ जगत्मां रहेला सर्वे जंतु कदाचित् तहारुं पालण पोषण करवा माटे, माता, पिता तथा बंधु रूपे थयां छे, ने तेमणे करीने आ सर्व लोक पूरेलो छे. परंतु ते सर्वेथी पण आज सूधी तहारुं रक्षण थइ शक्युं नथी. माटे ते तहारे शरण करवा योग्य पण नथी. कारण के, संसारना महा दुःखरूप प्रवाहमां खेंचाता प्राणियोने, जेमां सारो कर्णधार (नावनो चलावनार) छे, एवी नौका (नाव) रूप जिनधर्म जे तेज, शरण करवा योग्य तथा ग्रहण करवा योग्य छे, पण माता पितादिक शरण करवा योग्य नथी.॥१ए॥

२ १ ४ ५ ३ ६

जीवो वाहिविलुत्तो । सफरो इव निज्जले तडप्फडई ॥

७ ८ ए १० १२ १३ ११

सयलो वि जणो पिच्छइ । को सक्को वेअणाविगमे ॥२०॥

अर्थ—(वाहि के०)व्याधिये करीने(विलुत्तो के०)उपद्रव वालो एवो (जीवो के०) जीव जे ते (निज्जले के०) जल रहित प्रदेशने विषे (सफरो इव के०) माछलांनी पेठे (तडप्फडई के०) तडफडे छे. एटले आकुल व्याकुल थाय छे. ते प्रकारना रोगे करीने पीडाता प्राणीने

(सयलो वि के०) सकल एवो पण (जणो के०) जन. एटले लोक जेते (पिछइ के०) देखे छे. परंतु ते जीवनी (वेअणाविगमे के०) वेदनानो नाश करवाने विषे (को के०) कोण पुरुष (सक्को के०) समर्थ होय? अपितु कोइ पण समर्थ न होय. ॥२०॥

भावार्थ—आ जीव अनेक प्रकारना व्याधि वडे ग्रस्त थइने ज्यारे जलविनाना माछलानी पेठे तडफडे छे, ते वखत हे मा! हे बाप!! इत्यादिक सामाने अतिशे करुणा उत्पन्न थाय एवा पोकार करे छे; त्यारे तेनी वेदनाने लेशमात्र ओछी करवाने कोइ पण समर्थ थतुं नथी. उलटा तेना मनने बीजी वेदना उत्पन्न थाय, एवी रीतना करुणा भरेला शब्दो वापरीने अने औषधादिकना घणा खरचमां नांखीने अने आंखोमां आंसु लावीने, उलटा तेने वधारे गभराममणमां नांखे छे. अने पोते ज्यारे निराश थाय छे, त्यारे निसासा मूकीने छेवटे तेने धर्मनुं शरण बतावे छे. पण तेमांथी कोइथी कांइ पण दुःख लइ शकातुं नथी. माटे हे जीव! परिणामे धर्मनुं शरणतो करवुंज पडे छे, तो प्रथमथीज तुं धर्मनुं शरण करच. कारण के, जे धर्मना प्रभावथी तहारे फरीथी एवुं दुःख भोगववुं पडे नही, माटे तेवा धर्मने करच. ॥२०॥

६ ७ १ ५ २ ३ ४
मा जाणसि जीव तुमं । पुत्तकलत्ताइ मज्झ सुहहेऊ ॥

११ १२ १० ८ ९
निउणं बंधण मेयं । संसारे संसरंताणं ॥२१॥

अर्थ-(जीव के०) हे प्राणिन्! (पुत्तकलत्ताइ के०) पुत्र तथा स्त्री इत्यादिक जे ते (मज्झ के०) महारे (सुहहेऊ के०) सुखनुं कारण थशे. एम (तुमं के०) तुं (मा जाणसि के०) न जाणीश. केम के, (संसारे के०) संसारने विषे (संसरंताणं के०) नरक तिर्यंच इत्यादि रूपे भ्रमण करता एवा जीवोने (एयं के०) ए पुत्र कलत्रादिक जे तेज, उलटा (निउणं के०) अतिशे गाढ एवा (बंधणं के०) बंधन रूपे थाय छे. ॥२१॥

भावार्थ-अरे रे जीव! तहारी शी विपरीत बुद्धि थइ छे? के, जे दुःखनुं कारण छे, तेनेज तुं, एकांते सुखनुं कारण मानी बेठो छुं! केमके, संसारने विषे स्त्री पुत्रादिक एज महोटुं बंधन छे. ते बंधनने तुं एम जाणे छे के, एथी महारे सुख थशे, परंतु तेथी कदि पण तहारे सुख थवानुं नथी. कारण के, तेमने विषे गाढ प्रीति राखवाथी नरकने विषे जवुं पडे

छे. तथा तिर्यंच गतिने विषे गधेडा कूतरादिकना निःशंकपणे विषय भोगववाना अवतार धरवा पडे छे. अने त्यां त्यां अनेक प्रकारनां दुःख सहन करवां पडे छे., तेनुं कारण एज के, आ महारी स्त्री, आ महारो पुत्र इत्यादिक ममत्वभाव करवाथी एवां फल मले छे. ने आ भवमां तेनु पालण पोषण करवामां रात्रि दिवस गमावे छे. पण एम विचार करतो नथी के, आज बधो दिवस गयो, तथा आज बधी रात्रि गइ, पण तेमां केटली घडि में महारा आत्मानुं साधन कर्युं? एवो विचार तुं केम नथी करतो? ॥२१॥

५ १३ ६ ८ ७ ११ ९ १२ १०

जणणी जायइ जाया । जाया माया पिया य पुत्तो य ॥

४ १ २ ३

अणवत्था संसारे । कम्मवसा सव्वजीवाणं ॥ २२ ॥

अर्थ–(संसारे के०) संसारने विषे (कम्मवसा के०) कर्मना वश थकी (सव्वजीवाणं के०) सर्व जीवोनी (अणवत्था के०) अनवस्था. एटले एक जातनी स्थिति नथी रहेती. कारण के, (जणणी के०) माता जे ते, भवांतरे (जाया के०) स्त्रीरूपे. अने (य के०) वली

(जाया के०) स्त्री जे ते, भवांतरे (माया के०) मातारूपे. अने (य के०) वली (पिया के०) पिता जे ते, भवांतरे (पुत्तो के०) पुत्ररूपे पण (जायइ के०) थाय छे. अर्थात् आ जीवनी एक सरखी स्थिति नथी रहेती. इत्यादि अनवस्था जाणवी. ॥२१॥

भावार्थ—हे जीव ! संसारमां सर्वे जीव कर्मने वश छे. माटे तेमनुं स्वरूप सदाकाल एकरूपे रहेतु नथी. एज संसारनो विषम स्वभाव छे. कारण के, जे माता छे, ते भवांतरे मातारूपेज नथी थती, परंतु तेज माता स्त्रीरूपे थायछे. अने जे स्त्री एटले पोतानी भार्या छे ते भवांतरे मातारूपे थायछे. पण भार्यारूपे उत्पन्न नथी थती. अने जे पिता छे, ते भवांतरे पितारूपेज उत्पन्न नथी थतो, परंतु पुत्ररूपे पण उत्पन्न थायछे. माटे जेना उपर तुं आज प्रीति राखीने तहारो बधो जन्मारो तेनुंज भरण पोषण करवामां, पशुनी पेठे आ मनुष्यभवने एले गमावे छे. पण एम विचार नथी करतो के, एज महारां केटलीएक वखत शत्रु थइने तेणए मने छेदन, भेदन, ताडनतर्जन, घातपातादिक अत्यंत वेदना उपजावी हशे. तोपण हुं तेना उपर सरागभावे करीने उलटो रात्रि दिवस तेनीज चिंतामां रहीने महारुं धर्मध्यान मूकीने शुं करवा खराब थउं छुं ? एवो विचार तुं लेशमात्र पण करतो नथी. कारण के, तुं आखो

जन्मारो तेमने माटे कूटी कूटीने मरी जईश, तोयपण जो तेमना कर्ममां सुख नथी, तो तुं केम करीने सुखी करीश? तथा तेमना कर्ममां जो द्रव्यादिकनो लाभ नथी, तो तुं तेमने क्यांथी लावीने आपीश? तेम छतां कदापि तुं कूड, कपट, छलभेद, प्रपंच, विश्वासघात अने अन्यायप्रमुखादिक अनेक प्रकारनां कुकर्म करीने, महोटा मेरुपर्वत जेवडो मांथे पापरूप भार भरीने, तुं द्रव्य मेलवीने तेमने आपीश, तोयपण तेमनी पासे ते रहेवानुं नथी. अने जो तेमना भाग्यमां द्रव्यादिक पदार्थ छे, तो तुं कांइ पण नही आपे, तोयपण ते महोटा कोटिध्वज थशे. माटे केवल तेमनेज माटे पोतानुं धर्मध्यान चूकवुं, ते ठीक नही. ॥२२॥

आ बावीशमी गाथामां आ जीवने भवांतर आश्रीने अनेक प्रकारना संबंध थाय छे. एम कह्युं. परंतु आने आभवमांज अनेक प्रकारना संबंध थयाछे, तेनी कथा निचे प्रमाणे जाणवी.

कथा ९.

मथुरा नगरीने विषे कुबेरसेना एवे नामे एक गणिका (वेश्या) रहेती हती. ते एक दहाडो पोताने गर्भ उत्पन्न थवा थकी अतिशे खेद पामी. त्यारे तेनी माता कुट्टिनी तेणीए, तेने खेदवाली जोइने, तेनी पीडा दूर करवाने अर्थे वैद्यने बोलाव्यो. ते वैद्य नाडी जोइने

तेने रोग रहित जाणीने ए प्रकारे कह्युं. के, आना शरीरमां कोइ पण रोग नथी. फक्त पेटने विषे, पुत्र पुत्रीरूप जोडलुं उत्पन्न थयुं छे. ए कारण माटे एने खेद वर्ते छे. त्यार पछी वैद्यने विदाय करीने ते कुट्टिनी, पुत्री प्रत्ये कहेती हवी. आ गर्भ तहारा प्राणनो नाश करनारो छे. ते कारण माटे राखवा जोग्य नथी. एतो पाडवा जोग्यज छे. ते अवसरे वेश्या कहेती हवी. क्लेश(दुःख)पण सहन करीश,परंतु महारा गर्भने कुशल रहो.एम कहीने पछी ते वेश्याए गर्भनी वेदना सहन करीने अवसरे पुत्र पुत्रीरूप जोडलुं प्रसव्युं. त्यारे वली कुट्टिनी कहेतां तेनी मा, कहेती हवी. हे पुत्री! आ छोकरांनुं जोडलुं तहारा जवानीपणाने नाश करनारुं थशे. ए कारण माटे आ जोडलुं विष्टानी पेठे त्याग करीने,आजीविकानुं कारण एवुं पोतानु जवानीपणु राख्य. त्यारे वेश्या कहेती हवी. हे माता! जो एम छे तो दश दिवस सूधी विलंब करो. पछी तमारुं कहेलुं करीश. त्यार पछी तेनी माताये आज्ञा आपी. त्यार पछी ते वेश्या दश दिवस सूधी धवरावीने ते बालकोनुं सम्यक् प्रकारे प्रतिपालन करीने अगीयारमे दिवसे, एक जणानुं कुबरदत्त, अने एक जणीनुं कुबेरदत्ता ए प्रकारे बे जणानां नांम पाडीने पछी तेमना नाम सहित एवी बे वींटीयो करावीने ते बे ज़णानी आंगलीयोमां घालीने पछी एक

लाकडानी पेटीमां ते बे जणने मांही मूकीने संध्या समये यमुना नदीना प्रवाहने विषे ते पेटीने वहेती मूकी दीधी. त्यार पछी ते पेटी जलमां वहेती थकी अनुक्रमे करीने दिवसनो उदय थए सते, शौर्यपुर नगरे आवी. त्यां स्नान करवाने अर्थे आवेला एवा बे शेठना पुत्रो ते पेटीने आवती देखीने, तत्काल लेइने एकजणे तेनी मध्ये एक बालक अने बालिकाने जोइने, तेमनी मध्ये जे पुत्रनो अर्थि हतो, तेणे पुत्र लीधो. अने बीजो पुत्रीनो अर्थि हतो, तेणे बालिका लीधी. ए प्रकारे ते एक एक बालक लेइने पोत पोतानी स्त्रीने आप्युं. पछी मुद्रिकामां लखेला अक्षरने अनुसारे तेमनुं नाम पाड्युं. त्यार पछी ते कुबेरदत्त अने कुबेरदत्ता एवे नामे बे बालक, ते शाहुकारोने घेर अतिशे उद्यमे करीने महोटां थयां. पछी अनुक्रमे करीने जोवन अवस्था पाम्यां. त्यारे ते बे बालकोनुं सरखुं रूप जाणीने, ए बे शाहुकारो ते बे जणनो मांहो मांहे पाणीग्रहणनो उत्सव करता हवा. एटले लग्ननो उत्सव कर्यो. त्यार पछी ते स्त्री भरत्तार, एक दहाडो सोगटां बाजी रमवा बेठां. ते अवसरे कुबेरदत्तना हाथथकी ते नामांकित मुद्रिका कोइक प्रकारे निकलीने, कुबेरदत्तानी आगल पडी. त्यार पछी तेणीए ते मुद्रिका पोतानी मुद्रिकानी साथे सरखी आकृतिवाली, अने एक दे-

शमां घडेली, अने सरखा नामवाली एवी देखीने मनने विषे कुबेरदत्तने पोतानो जाई छे, एम निश्चे करीने ते बे वींटीयो कुबेरदत्तना हाथमां घाली. ते अवसरे कुबेरदत्त पण ते वींटी जोवा थकी तेमज तेने पोतानी बहेन छे, एम निश्चे करीने अतिशे खेद पाम्यो. त्यार पछी ते बे जण पण पोताना विवाहना कार्यने अकार्य मानतां एटले आ खोटुं थयुं! एम जाणतां एवां पोतानो संदेह निवारवाने माटे पोतपोतानी माताने सम खवरावीने अतिशे आग्रहे करीने पोतपोतानुं स्वरूप पूछयुं. ते अवसरे तेमनी माताउए ते बे जणनी आगल मंजूषामांथी (पेटीमांथी) कहाड्यां त्यांथी मांडीने सर्व पण वृत्तांत कह्युं. त्यार पछी कुबेरदत्त माता पिताने कहेवा लाग्यो के, तमे अमने जोडले जन्मेलां जाणीने पण आवुं अकार्य केम कर्युं? त्यारे ते कहेवा लाग्यां के, तहारा सरखी कन्या अने तेना सरखो वर क्यांहि अमने मल्यो नही. तेथी सरखां शोजादि गुणवालां तमने जाणीने तमारा बेनोज मांहोमांहे विवाह कर्यो. परंतु हजु सूधी कांइ पण बगडयुं नथी. जे कारण माटे तमारा बेनुं एक करपीडनज थयुं छे. एटले फक्त एक हाथनोज मिलाप थयो छे. पण मैथुन कर्म थयुं नथी. ते माटे तुं खेद न करीश. तने बीजी कन्या परणावीशुं. त्यार पछी कुबेरदत्ते कह्युं.

तमारुं वचन महारे प्रमाण छे. परंतु हमणां तो हुं व्यापार करवाने माटे परदेश जवानी इच्छा राखुं छुं. ए कारण माटे मने आज्ञा आपो. त्यार पछी ते शेठ शेठाणीए आज्ञा आपी. पछी कुबेरदत्त, ते वृत्तांत पोतानी बहेनने कहीने, घणांक क्रियाणां लेइने, दैवयोग थकी पोताने उत्पत्तिनुं स्थानक एवी मथुरा नगरीये गयो. त्यां ते निरंतर पोताने उचित व्यापार करतो सतो, एक दहाडो कोइक माठा कर्मना जोगथकी अद्भूतरूपे करीने शोजायमान एवी, पोतानी माता कुबेरसेना वेश्याने देखीने, कामे पीडित थयो सतो, ते वेश्याने बहु द्रव्य आपीने, पोतानी स्त्री करीने निरंतर तेनी संगाथे विषय संबंधी सुख जोगवतो हवो. त्यां अनुक्रमे करीने तेने एक पुत्र थयो. हवे शौर्यपुरने विषे ते कुबेरदत्ता, माताना मुखथकी मूलथकी पोतानी ते प्रवृत्ति सांजलीने, तत्काल वैराग्य प्रत्ये पामी सती आर्या (साध्वी) नो संजोग थए सते दीक्षा ग्रहण करीने, घणां महोटां तप करीने विशुद्ध अध्यवसायना योग थकी थोडा कालमांज, तेणीए अवधि ज्ञान उत्पन्न करयुं. त्यार पछी ते साध्वी, अवधिज्ञानना बले करीने पोताना जाईनुं स्वरूप जोती सती मथुरा नगरीने विषे पोतानी माता संगाथे लागेलो एवो, अने पुत्र सहित एवो, तेने देखीने कर्मनी गतिने धिक्कार करती ए-

टले धिक्कार पडो कर्मने!!! एम कहेती, सती पोताना भाईने अकारजरूप महोटा पापरूप कादव थकी उद्धरवाने एटले काढवाने, पोते मथुरा प्रत्ये आवीने, कुबेरसेना वेश्यानेज घेर जइने, धर्मलाभरूप आशिष् देइने तेनी पासे पोताने उतरवानुं स्थानक माग्युं. ते अवसरे कुबेरसेना पण ते आर्याने नमस्कार करीने एम कहेती हवी. हे महासती! हुं वेश्या बुं. पण हमणां एक भरतारना संजोगथकी निश्चे कुल स्त्री थइ बुं. ते कारण माटे तमे सुखे करीने महारा घरनी समीपे पाप रहित एवा आश्रयने ग्रहण करीने, अमने रूडा आचारमां प्रवर्त्तावो. त्यार पछी कुबेरदत्ता साध्वी पण, पोताना परिवार सहित तेणीए आपेला उपाश्रयमां रही. हवे ते वेश्या निरंतर त्यां आवीने, ते बालकने साध्वीनी आगल भूंइ उपर लोटतो मूकती हवी. ते अवसरे अवसरनी जाण एवी जे साध्वी, ते आगामी कालमां लाभ जाणीने ते बालकने आ प्रकारे बोलावती हवी. हे बालक! तुं महारो भाई बुं. ॥१॥ तुं महारो पुत्र बुं. ॥२॥ तुं महारो दीयर बुं. ॥३॥ तुं महारा भाईनो पुत्र बुं, एटले भत्रिजो बुं. ॥४॥ तुं महारो काको बुं. ॥५॥ तुं महारा पुत्रनो पण पुत्र बुं. ॥६॥—तथा जे तहारो पिता बे, ते महारो भाई बे. ॥१॥ अने महारो पिता बे. ॥२॥ अने महारा पितानो पिता, एटले महारो

वडाजन्न छे. ॥३॥ महारो जरतार छे. ॥४॥ महारो पुत्र छे. ॥५॥ अने महारो ससरो पण छे. ॥६॥—तथा जे तहारी माता छे, ते महारी माता छे.॥१॥अने महारा पितानी माता छे.॥२॥ अने महारा जाईनी स्त्री छे. ॥३॥ अने महारी वहु छे. ॥४॥ अने महारी सासु छे. ॥ ५ ॥ अने महारी शोक्य पण छे. ॥६॥—ए रीते कहीने साध्वी ते बालकने वारंवार बोलावे छे. त्यार पछी एक दहाडो कुबेरदत्त तेनुं वचन सांजलीने, आश्चर्य पाम्यो सतो, ते साध्वीने कहेतो हवो. हे आर्ये! वारंवार आवुं अजुक्तुं शुं बोलो छो? त्यारे साध्वी कहेती हवी. हुं अजुक्तुं नथी बोलती. जे कारण माटे आ बालक एक मातापणा थकी जाई छे, एटले तेनी अने महारी एक माता छे. तेथी महारो जाई थाय छे. ॥१॥ अने महारा जरतारनो पुत्र छे, माटे महारो पुत्र थाय छे. ॥२॥ अने महारा जरतारनो नहानो जाई छे, माटे महारो दीयर छे. ॥३॥ अने महारा जाईनो पुत्र छे, माटे महारो जत्रीजो छे. ॥४॥ अने महारी माताना पतिनो जाई छे, माटे महारो काको लागे छे. ॥५॥ अने महारी शोक्यना पुत्रनो पुत्र छे, माटे महारो पोत्रो लागे छे. ॥६॥—ए प्रकारे बालकनी संघाथे पोताना छ संबंध देखाडीने, वली कहेती हवी. जे आ बालकनो पिता छे, ते महारे एक मातापणा थकी जाई छे. एटले तेनी

अने महारी एक माता छे. माटे ज्ञाइ थायछे ॥१॥ अने महारा मातानो ज्ञरतार थयो, तेथी महारो पिता थाय छे ॥ २ ॥ अने महारा काकानो पिता थयो, तेथी महारो वडाज्ञाइ थयो ॥ ३ ॥ अने प्रथम मने परण्यो छे, माटे महारो ज्ञरतार थाय छे ॥ ४ ॥ अने महारी शोक्यनो पुत्र थायछे, माटे महारो पुत्र पण थाय छे ॥ ५ ॥ अने महारा दीयरनो पिता थाय, माटे महारो ससरो छे ॥६॥—ए प्रकारे बालकना पिता कुबेरदत्तनी साथे पोताना छ संबंध कहीने, वली कहेती हवी. जे आ बालकनी माता छे, ते मने पण जणनारी छे, माटे महारी पण माता छे ॥१॥ अने महारा काकानी माता छे, तेथी महारी दादी लागे छे ॥२॥ अने महारा ज्ञाईनी स्त्री थइ, तेथी महारी ज्ञोजाइ थाय छे ॥३॥ अने महारी शोक्यना पुत्रनी स्त्री थइ, माटे महारी वहु थइ ॥४॥ अने महारा ज्ञरतारनी माता थइ, तेथी महारी सासु थइ ॥५॥ अने महारा ज्ञाईनी बीजी स्त्री थइ, माटे महारी शोक्य थइ ॥६॥ ए रीते आ बालकनी माता कुबेरसेना वेश्यानी साथे पोताना छ संबंध देखाड्या. ए प्रकारे आ अढार संबंध कहीने ते साध्वी, ते संबंधोनी खातरी करवाने अर्थे, पोते व्रत ग्रहण करयुं ते अवसरे राखेली पोतानी वींटी कुबेरदत्तने आपती हवी. त्यार पछी कुबेरदत्त पण ते वींटी देखीने

सर्व संबंधनुं विरुद्धपणु जाणीने, तत्काल वैराग्य पामीने, पोतानी निंदा करतो सतो पोतानी शुद्धिने अर्थे, चारित्र ग्रहण करतो हवो. अने वली महा तप करतो हवो. तथा कुबेरसेना वेश्या पण ते प्रवृत्ति सांजलवा थकी प्रतिबोध पामी सती श्रावकनो धर्म अंगीकार करती हवी. त्यार पछी कुबेरदत्ता साध्वी, ए प्रकारे तेमनो उद्धार करीने पोतानी प्रवर्त्तिनी पासे गइ. एटले पोतानी गुरुणी पासे गइ. अनुक्रमे करीने ए सर्व जीवो पोतानो धर्म सम्यक् प्रकारे आराधन करीने सद्गतिनां जजनार थयां. अर्थात् रूडी गतिमां गयां. ए प्रकारे अढार संबंध उपर कुबेरदत्तनुं दृष्टांत कह्युं. आ एक जवने आश्रीने संबंध देखाड्या. अनेक जवनी अपेक्षामां तो प्राये करीने सांव्यवहारीक जीवोने एकएक संबंध पण अनंतीवार थया छे. ते प्रकारे श्री जगवती सूत्रना बारमा शतकना सातमा उद्देशामां कह्युं छे, तेनो अर्थ इहां लखीए छीए.

हे जगवंत! आ जीव सर्व जीवोना मातापणे करीने, पितापणे करीने, जाईपणे करीने, बहेनपणे करीने, स्त्रीपणे करीने, पुत्रपणे करीने, पुत्रीपणे करीने, पुत्रनी स्त्रीपणे करीने, सामान्यथकी शत्रुपणे करीने, वैरिपणे करीने एटले शत्रुजावना अनुबंध सहितपणे

करीने, घातकपणे करीने एटले मारनारपणे करीने, अने ताडन करनारपणे करीने, प्रत्यनीकपणे करीने एटले प्रतिकूलपणे करीने, अने कार्यना उपघातपणे करीने, एटले अमित्रसहायीपणे करीने राजापणे करीने, जुवराजपणे करीने, यावत् सार्थवाहपणे करीने, दासपणे करीने, एटले घरनी दासीना पुत्रपणे करीने, प्रेष्यपणे करीने एटले चाकरपणे करीने, नृतकपणे करीने एटले डुकालादिकने विषे अन्नसाटे लीधेलो तेपणे करीने, कर्षणादि लाजना जाग ग्राहकपणे करीने, अन्य पुरुषोए उपार्जन करेला अर्थना जोगकारी नरपणे करीने, वली कला शीखववा जोग्यपणे करीने, अने वली द्वेष करवा जोग्यपणे करीने पूर्वे उत्पन्न थयो छे ? ए रीते गौतमस्वामीए जगवंतने पूछ्युं. त्यारे जगवंत कहेता हवा. हे गौतम ! हा ! अनेकवार अथवा अनंतीवार आ जीव सर्व जीवोनी माता थई, पिता थयो, जाई थयो, ए रीते उपर कह्या प्रमाणे पूर्वे सर्व संबंध करी चूक्यो छे. एज प्रकारे सर्व जीवो पण आ जीवना मातादिकपणे करीने, अनेकवार, तथा अनंतीवार पूर्वे उत्पन्न थया छे. ए रीते सर्व जीवोने मांहोमांहि सर्व संबंध थइ चूक्या छे. इति संसारनी अनवस्था उपर कुबेरसेना गणिकानुं दृष्टांत तथा श्री जगवती सूत्रना पाठनो अर्थ जाणवो.

॥ अनुष्टुप्वृत्तम्. ॥

११ ए १० १४ १२ १३ १७ १५ १६ २० १८ १ए

न सा जाई न सा जोणी । न तं ठाणं न तं कुलं ॥

५. ६ ७ ८ १ २ ३ ४

न जाया न मुआ जह ॥ सवे जीवा अणंतसो ॥२३॥

अर्थः—(जह के०) ज्यां (सव्वे के०) सर्व (जीवा के०) जीव जे ते (अणंतसो के०)अनंतीवार (न जाया के०) नथी उत्पन्न थया. तथा (न मुआ के०) नथी मरण पांम्या, एवी (सा के०) ते. अर्थात् तेवी कोइ (जाई के०) जाति जे ते (न के०) नथी. अने (सा के०) ते अर्थात् तेवी कोइ (जोणी के०) योनि जे ते (न के०) नथी. अने (तं के०) ते अर्थात् तेवुं कोई (ठाणं के०) स्थान जे ते (न के०) नथी. अने (तं के०) ते. अर्थात् तेवुं कोइ (कुलं के०) कुल जे ते(न के०)नथी. एटले सर्वे जीवोने पूर्वे कहेलां सर्वे स्थानको अनंतीवार थयां छे॥२३॥

वली आ अधिकारने विशेषे जाणवानी मरजी होय तो, श्री नगवती सूत्रना बारमा शतकना सातमा उद्देशामांथी बोकडानुं दृष्टांत जोइ लेज्यो.

॥ आर्यावृत्तम्. ॥

७ ८ १२ ११ ९ १०
तं किंपि नत्थि ठाणं । लोए वालग्गकोडिमित्तंपि ॥
१ ५ २ ४ ३ ६
जत्थ न जीवा बहुसो । सुहदुक्खपरंपरं पत्ता ॥२४॥

अर्थ—(जत्थ के०) जे स्थानने विषे (जीवा के०) जीव जे ते (सुह दुक्ख परंपरं के०) सुख दुःखनी परंपराने (बहुसो के०) घणीवार (न पत्ता के०) नथी पाम्या. (तं के०) ते. अर्थात् तेवुं (किंपि के०) कोइ पण (लोए के०) लोकने विषे (वालग्ग के०) वालनो अग्र तेनो (कोडिमित्तंपि के०) प्रांतभाग मात्र पण, अर्थात् किंचित् मात्र पण (ठाणं के०)स्थान जे ते (नत्थि के०) नथी. अर्थात् आ जीव, सर्व स्थानकमां जइ आव्यो छे. ॥२४॥

भावार्थ—व्यवहार राशीने पामेला जीवोने अनंतो काल थइ गयो छे. माटे ते जीवोने सर्व जाति आदिकने विषे अनंतीवार उत्पत्ति थइज हशे? एम संभावना करीए छीए. केम के,ए अभिप्रायतो बहुश्रुतनेज गम्य छे· अर्थात् ते अभिप्राय तो बहुश्रुत जाणे· हे जीव! तुं अनंतीवार

सारी सारी जातिमां तथा सारी सारी योनिमां उत्पन्न थयो छुं. अने सारा सारा स्थानमां तथा सारा सारा कुळमां उत्पन्न थयो छुं. अने तुं त्यां अनेक प्रकारे जन्म मरण पाम्यो छुं. परंतु विचारी जोतांतो तुं जेवो छुं,तेवोने तेवोज छुं एटले तहारुं स्वरूपतो निश्चेनयमते करीने अछेद्य, अभेद्य, अजर, अमर, ज्ञानरूप, सुखरूप अने सत्तारूप एवुं छे. तेने तुं विसरी जइने, देहादि परभावमां आसक्त थइने पंच प्रकारना विषय सुख भोगववानी तृष्णा, हजु सूधी तने जती नथी. परंतु तुं एम वांछा राखेछे के, हुं सारी सारी जाति आदिकमां जइने सारा सारा विषय भोगवुं. पण ते विषयनां सुख तें अनंतीवार भोगवीने वमन कर्यां छे, तोयपण तेने तेज भोगनी इच्छा राखीने वांताशी(वमन करेलाने खानारो)केम थाय छे? वळी ए विषय सुखने भोगवीने कांइ तृप्त थवातुं नथी पण, उलटी तेनी तृष्णा जेम बळता अग्निमां घी होमे, ने तेनी ज्वाळा वृद्धि पामे, तेम विषय तृष्णा वृद्धि पामशे; माटे हे जीव! तुं एम विचार के, हुं सर्व ठेकाणे जइने सर्व जातिनां सुख दुःख अनंतीवार भोगवी आव्यो छुं. पण कोइ ठेकाणे नथी जइ आव्यो एम नथी. एवुं विचारीने विषय सुखथी विराम पामीने तुं तहारा आत्मस्वरूपना अविनाशी सुखमां मग्न था. आ बे गाथानो भेगो भावार्थ छे. ॥२३॥२४॥

॥ आर्यावृत्तम्. ॥

२ ३ ६ ४ ५

सव्वाउ रिद्धीउ । पत्ता सव्वेवि सयणसंबंधा ॥

१ ७ १२ ११ ८ १० ९

संसारे तो विरमसु । तत्तो जइ मुणसि अप्पाणं ॥२५॥

अर्थ-(संसारे के०) संसारने विषे (सव्वाउ के०) सर्व एवी (रिद्धीउ के०) ऋद्धियो जे ते. तथा (सव्वेवि के०) सर्व एवा पण (सयणसंबंधा के०) स्वजन संबंध जे ते (पत्ता के०) पाम्यो छु (तो के०) ते कारण माटे (जइ के०) जो (अप्पाणं के०) आत्माने (मुणसि के०) जाणे छे, तो (तत्तो के०) ते ऋद्धिआदिक थकी (विरमसु के०) विराम पाम्य. अर्थात् निवृत्ति पाम्य. ॥ २५ ॥

भावार्थ-हे आत्मन्! संसारने विषे अनादि काळथी भ्रमण करतां आ जीवे देव मनुष्यादिकनी सर्वे समृद्धियो पामी छे. तथा सर्वेनी साथे, पोताना माता पिता भाई भार्यादिक संबंध, जोडायो छे. माटे तेमां तहारे मोह राखवो घटतो नथी. केम के, जे स्त्री छे, ते पराभवनुं स्थानक छे. तथा जे बंधुजन छे, तेज बंधन छे. तथा जे विषयसुख छे, तेज विषछे. (फेर छे.)

ए प्रकारे जे तहारा शत्रु छे,तेनेज तुं मित्र जाणीने तेने विषे मोह राखीने बेठो छुं. ते कारण माटे एक पोताना आत्म स्वरूपनुंज साचुं सुख मानीने, ते ऋद्धि, स्वजन, इत्यादिकनुं कल्पित सुख मानीने अर्थात् तेने दुःखरूप जाणीने ते सर्व थकी निवृत्ति पांम्य. ॥२५॥

१ ३ २ ४ ५

एगो बंधइ कम्मं । एगो वहबंधमरणवसणाइं ॥

६ ९ १० ७ ८

विसहइ नवंमि नमडइ । एगुच्चिअ कम्मवेलविउ ॥२६॥

अर्थ—(एगो के०) एकलो. अर्थात् सहाय्य रहित एवो जीव जे ते (कम्मं के०) ज्ञानावरणीआदि कर्मने (बंधइ के०) आत्मानी संगाथे बांधे छे. तथा (एगो के०) एकलोज नवांतरने विषे (वह के०) ताडन. अने (बंध के०) बंधन. अने (मरण के०) प्राणनो वियोग. अने (वसणाइं के०) आपत्ति तेमने (विसहइ के०) सहन करे छे. वली (एगुच्चिय के०) एकलोज आ जीव (कम्मवेलविउ के०) कर्मवडे ठगायो सतो (नवंमि के०) संसारने विषे (नमडइ के०) नमे छे. ॥२६॥

भावार्थ—हे जीव! जे वखत तहारो जन्म थयो, ते वखत तें एकलेज घणुज कष्ट सहन करयुं, पण ते वखत तहारु दुःख मटाडवाने माटे, तने कोइए सहाय्य करी नही. अने जे वखते तुं मरण पामीश, ते वखते ते मरणनी वेदना पण, तहारे एकलानेज सहन करवी पडशे. अने पछी ज्यारे नरकादिक भवांतरने विषे जईश, त्यारे त्यांनी वेदना पण, तहारे एकलानेज सहन करवी पडशे; पण जेने अर्थे एटले देहने अर्थे, स्त्रीने अर्थे, पुत्रने अर्थे, तथा संबंधीने अर्थे तें अनेक प्रकारनां पाप करयां छे, परंतु तेमांनुं कोइ पण तहारी वेदनानो भाग लेवाने आवशे नही. एवीज रीते बीजा भवोमां पण कर्मवडे ठगायेलो तुं, एकलोज कष्ट भोगवीश. अर्थात् तहारां करेलां कृत्यने तुंज भोगवीश, पण ते कष्ट भोगववाने बीजो कोइ पण आवशे नही ॥२६॥

१ ३ ४ २ ५ ६ ७ ९ ८

अन्नो न कुणइ अहियं । हियंपि अप्पा करेइ नहु अन्नो ॥

११ १२ १३ १० १५ १४

अप्पकयं सुहदुक्खं । भुंजसि ता कीस दीणमुहो ॥२७॥

अर्थ—हे प्राणिन्! (अन्नो के०) अन्य जे ते (अहियं के०)अहित(अनिष्ट)ने (न कुणइ के०) नथी करतो. परंतु आत्माज करे छे, अने (हियंपि के०) हितने पण, ते (अप्पा के०) आत्माज (करेइ के०) करे छे. पण (अन्नो के०) अन्य कोइ (नहु के०) नथीज करतो. (ता के०) ते कारंणा माटे (अप्पकयं के०) आत्मानुं करेलुं जे (सुहडुक्खं के०) सुख दुःख, तेने (नुंजसि के०) पोते आत्माज नोगवे छे. माटे तुं (दीणमुहो के०) दीनमुख वालो (कीस के०) केम थाय छे? अर्थात् तुं बीजानो दोष शुं करवा देखे छे? ॥२७॥

नावार्थ—हे जीव! तुं एम विचारे छे के, फलाणाये महारु बगाड्युं, एम धारीने तेना उपर द्वेष करे छे, अने फलाणाये महारुं सुधार्युं, एम धारीने तेना उपर राग करे छे, पण तेमांनुं कोइ तहारुं बगाडतुं पण नथी, ने सुधारतुं पण नथी. परंतु ते बगाडनारो, अने सुधारनारो, ते तहारो आत्माज छे. अर्थात् सुख पण तहारो आत्मा करे छे, अने दुःख पण तहारो आत्माज करे छे. माटे दुःख आव्ये सते दीनमुख वालो थइने, बीजानो दोष शुं करवा देखे छे? वली श्री उत्तराध्ययन सूत्रना वीशमा अध्ययनमां कह्युं छे के, वैतरणी नदीनो पमाडनार पण आ आत्मा छे.. अने कूटशाल्मलि वृक्षनी वेदनाने पमाडनारो पण आ

आत्मा छे. अने कामधेनुं गायने पमाडनारो पण आ आत्मा छे. अने नंदनवन तथा देवलोक अने मोक्ष तेने पमाडनारो पण आ आत्माज छे. वली आ आत्मा कोइ अपेक्षाये कर्त्ता छे, अने कोइ अपेक्षाये अकर्त्ता छे. एज रीते सुख दुःखनो कर्त्ता पण आत्माज छे. वली मित्र तथा अमित्र पण आत्माज छे. अने सदाचार अने दुराचारने करनारो पण, आ आत्माज छे. एम जाणीने कोइना उपर राग द्वेष करवो नहीं. ॥२७॥

३ ४ ५ १ २
बहुआरंभविढत्तं । वित्तं विलसंति जीव सयणगणा ॥
७ १० ६ ८ ९
तज्जणियपावकम्मं । अणुहवसि पुणो तुमं चेव ॥२८॥

अर्थः-(जीव के०) हे प्राणिन्! (सयणगणा के०) माता, पिता, भाइ, स्त्री, पुत्रादिक स्वजननो समूह जे ते, (बहुआरंभ के०) तें, खेतीआदिक घणा आरंभे करीने (विढत्तं के०) उपार्जन कर्युं एवुं, जे (वित्तं के०) धन, ते प्रत्ये अर्थात् ते धने करीने, तेउ (विलसंति के०) विलास करे छे. अर्थात् ते धननुं फल ते स्वजनादिक भोगवे छे. (पुणो के०) वली (तज्जणिय

के०) ते आरंभे करीने उत्पन्न थयुं एवुं, जे (पावकम्मं के०) पाप कर्म, तेने (तुमं चेव के०) तुं एकलोज (अणुहवसि के०) अनुभव करीश. अर्थात् नरकादिकने विषे ते पापनुं फल तुं एकलोज भोगवीश. ॥२७॥

भावार्थ—हे जीव! तें अनेक प्रकारे जीव हिंसा तथा कूडकपट छलभेद प्रपंचादिक केटलाक अनर्थ करी, तथा नीच सेवादिक घणां अकर्त्तव्य करी, तथा अनेक प्रकारे परदेशमां भमीने, तथा लडाइ प्रमुखमां मरणांत कष्ट मांथे लेइने, तथा पोताना स्वधर्मनो पण त्याग करीने, तथा रात्रि दिवस शरीरनुं सुख पण न गणीने, धन उपार्जन कर्युं; परंतु ते धनने स्वजन तथा ज्ञाति आदिक लोक, तहारो उपकार न गणतां, उलटा तने दबावीने, तथा तने तिरस्कार करीने, तथा मेहेणां मारीने, अने अनेक प्रकारनी युक्तिवडे करीने, एटले उंदरनी पेठे फूंकी फूंकीने तेउ खाइ जाय छे. अर्थात् धोले दहाडे भर्या शेहेरमां ते स्वजनादिक चोर, तने लूटी ले छे. अने ते धन उपार्जन करतां जे पाप थयुं, तेना फलने तो नरकादिकने विषे, तुं एकलोज भोगवीश. पण बीजुं कोइ भोगववा आवशे नही. माटे हे भव्य प्राणिन्! कांइक विचार करीने न्यायथी धन उपार्जन करीने तेने कांइक तो सारा मार्गमां वापरय!॥२७॥

४ ५ ६ ७ २ ८ ३

अह इखिआइ तह नु।खियाइ जह चिंतिआइ डिंनाइ॥

९ ११ १२ १० १३ १ १४ १५

तह थोवंपि न अप्पा। विचिंतिउ जीव किं नणिमो ॥२९॥

अर्थ–(जीव के०) हे जीव! तुं मोहने वश थइने (जह के०) जेम (डिंनाइ के०) आ महारां बालक जे ते. एटले महारां छोकरां जे ते (अह के०) हवे (इखिआइ के०) इःखीयां छे. एटले टाहाज्यमां उढवा पाथरवादिक वस्त्र नथी, तेथी पीडा पामे छे. (तह के०) तेमज (नुखियाइ के०) महारां बालक नूख्यां छे. एम (चिंतिआइ के०) ते बालकोनुं तुं रात्रि दिवस चिंतवन करे छे, परंतु (तह के०) तेवी रीते, तें (अप्पा के०) आत्मा जे ते (थोवंपि के०) थोडो पण (न विचिंतिउ के०) नथी चिंतवन कर्यो. माटे तने (किं नणिमो के०) शुं कहीए? अर्थात् हे मूर्ख! तने केटलो उपको देइए? एटले तें थोडो पण आत्मानो विचार नथी कर्यो. के, महारा आत्मानी शी गति थशे? एवो विचार लगार मात्र पण तुं करतो नथी.॥२९॥

नावार्थ–हे जीव! तुं मोहने वश थइने रात्रि दिवस पारकी चिंता कर्या करे छे. के,

आ महारां बालक, तथा आ महारी स्त्री इत्यादिक स्वजन भूख्यां छे, तृषां छे, तथा तेमने अन्न वस्त्रादिकनुं दुःख छे. इत्यादिक अनेक प्रकारनी चिंताने रात्रि दिवस कर्या करे छे, परंतु तुं तहारा आत्मानी चिंता करतो नथी. के, मेंं महारा आत्मानुं साधन केटलुं कर्युं? एटले आत्मा परभवे सुखी थाय, एवुं काम में रात्रि दिवस मध्ये केटली घडि कर्युं? एवो थोडो पण तहारा स्वार्थनो विचार तुं करतो नथी. केवल रात्रि दिवस पारकुंज वैतरुं कूट्या करे छे. माटे तुं मूर्ख छुं. तेथी तने केटलो उपदेश दइए? केम के, उपदेश तो योग्यनेज थाय छे.॥२९॥

१ २ ६ ४ ३ ५

खणभंगुरं सरीरं । जीवो अन्नो अ सासयसरूवो ॥

७ ८ १२ ९ ११ १०

कम्मवसा संबंधो । निब्बंधो इछ को तुझ ॥३०॥

अर्थ—हे आत्मन्! (खणभंगुरं के०) क्षण भंगुर एटले क्षणामां नाश पामवाना स्वभाव वालु एवुं (सरीरं के०) आ शरीर छे. (अ के०) वली (अन्नो के०) शरीर थकी जूदो एवो, अने (सासयसरूवो के०) शाश्वतुं छे स्वरूप ते जेनुं, एवो (जीवो के०) जीव छे. तेने

(कम्मवसा के०) कर्मना आधिनपणाथी शरीरनी साथे (संबंधो के०) संयोग थयो छे. माटे (इह के०) ए शरीरने विषे (तुम्ह के०) तहारे (को के०) शयो (निब्बंधो के०)अनुबंध छे? एटले ए शरीरने विषे तहारे शी मूर्छा छे ? ॥३०॥

भावार्थ—हे जीव! तुं अछेद्य, अभेद्य, अजर, अमर, ध्रुव, अनंत ज्ञानमय, अनंत दर्शनमय, अनंत चारित्रमय, अनंत वीर्यमय; ज्योतिःस्वरूप, पवित्र, अलिंग, अव्यक्त, निर्लेप, निरंजन, अने आनंदमय एवो तुं निश्चे नय मते छु. परंतु अनादि कालथी कर्मना वशे करीने, अनित्य, अने अशाश्वत एवुं, अने त्वचा, मांस, हाडकां, रुधिर, नसो, मेद एटले हाडकां उपर रहेली चामडी, अने मज्जा एटले हाडकामां रहेलु मांस, अने मल मूत्र, ने दुर्गंध, ने बिभीत्स (बिहामणी) एवी वस्तुए भरेला चामडाना कोथला रूप आ शरीर छे. तेवा शरीरने विषे हे जीव! तुं कर्मना वशथकी बंधाएलो छु. तेने विषे महारापणु मानी लेइने, एटले आ शरीर ते हुं छुं. एम धारीने तेना उपर ममत्वभाव राखीने शुं करवा मिथ्या हेरान थाय छे? इहां प्रसंगानुसारे शरीर उपरथी मूर्छा उतरवाने माटे, विचारवा जेवुं एक दृष्टांत लखीए छीए.—जेम कोइ पुरुषे सरकारनो अपराध कर्यो होय, तेणे करीने तेने स-

कत मजूरी साथे, महा दुःखदाइ बंधीखानामां, अमुक वर्षनी टीप मारीने पूरयो होय, तेम तने पण, तहारा कर्मे, पूर्वे लखेली अशुचि वस्तुए करीने भरेलो, अने दुर्गंधमय शरीररूप पुरुषनी आकृतिवालो तथा स्त्रीनी आकृतिवालो चामडानो कोथलो, तेमां तने अमुक मुदत सुधी पूर्यो छे. तोपण तेवा शरीरने विषे तुं एवो ममत्व धारण करे छे के, हुं शेठ, हुं शेठाणी, हुं राजा, हुं राणी, हुं ब्राह्मण, हुं ब्राह्मणी इत्यादिक कल्पित नाम ठरावीने, तथा ते कोथलानो रंग, कालो धोलो देखीने तेमां रूपवान् कुरूपवाननी कल्पना करीने, तुं मोह पामेछे; परंतु एम नथी विचारतो के, आ महारा शरीरमां शेठ ते कियो ? हाथ शेठ ? पग शेठ ? के, मांथु शेठ ? एम खरी रीते विचारीश तो सर्व कल्पना मात्रज मालम पडशे. माटे एवी रीते वस्तुगते विचारीने, तुं शरीर उपरथी मूर्च्छा उतारय. किं बहुना ? आ अधिकारने विषे श्री आचारांगजी सूत्रमां विशेष प्रकारे कह्युं छे, त्यांथी जोइ लेवुं. ॥३०॥

३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११

कह आयं कह चलियं। तुमंपि कह आगठ कहं गमिही ॥

१२ १३ १४ १ २ १६ १५

अन्नुन्नंपि न याणहं। जीव कुडुंबं कठ तुम्ह ॥३१॥

अर्थ-(जीव के०) हे आत्मन् (कुडुंबं के०) आ माता पिता नाइ स्त्रीयादि कुटुंब (कह आयं के०) क्यांथी आव्युं ठे? अने (कह चलियं के०) क्यां गयुं? एटले अहिंथी मरीने क्यां गयुं? अने (तुमंपि के०) तुं पण (कह आगउ के०) क्यांथी आव्यो? अने (कहं गमिहि के०) क्यां जईश? एम (अन्नुन्नंपि के०) परस्पर एटले एक बीजाने पण (न याणह के०) नथी जाणतो. माटे (तुम्ह के०) तहारुं कुटुंब (कउ के०) क्यांथी? अर्थात् एक बीजाने जाण्या वगर आ कुटुंब महारुं ठे, एम मानी बेगे लुं, ते मिथ्या ठे. ॥३१॥

न्नावार्थ-हे जीव! जेना उपर तने घणो मोह ठे, ने महारां महारां करे ठे, ते तहारां माता पिता स्त्रीयादिक केइ गतिमांथी आव्यां ठे? ने केइ गतिमां जशे? अने तुं पण केइ गतिमांथी आव्यो लुं? ने केइ गतिमां जईश? ते संबंधी तने कांइ पण खबर नथी. एटले जेम परबने विषे कोइ क्यांथी आव्युं? ने कोइ क्यांथी आव्युं; ए रीते ते सर्वे आवीने एकगं मले ठे. पठी तेउ पाणी पीने सउ सउने मार्गे वेराइ जाय ठे. तेम आ नवरूप परबने विषे कुटुंबरूप सर्वे लोक पण, कोइ नारकीमांथी, कोइ तिर्यंचमांथी, कोइ मनुष्यमांथी अने कोइ देवलोकमांथी, एम सउ सउनी गतिमांथी आवीने न्नेगां थयां ठे. तेउ पोत पोताना

कर्मने अनुसारे सुख दुःख जोगवीने, पोत पोतानां करेलां कृत्यने अनुसारे, चाल्यां जाय छे. परंतु तेमने राखवाने माटे तुं अनेक प्रकारना उपाय करीश, तोयपण ते रही शकवानां नथी. ते कारण माटे तेमने तुं एम मानी बेठो छुं के, आ महारु कुटुंब छे, पण ते वस्तुगते तहारुं कुटुंब छेज नही. परंतु तहारुं साचुं कुटुंब तो ज्ञान, दर्शन, चारित्रादिक आत्मगुण छे.॥३१॥

आ अधिकारने विशेष जाणवानी मरजी होय तो, श्री आचारांगजी सूत्रना प्रथम श्रुतस्कंधना प्रथम अध्ययनना, प्रथम उद्देशामां जोई लेज्यो. ॥३१॥

१ २ ४ ३

खणजंगुरे सरीरे । मणुअजवे अप्नपमलसारिछे ॥

१० ए ५ ८ ६ ७

सारं इत्तियमेत्तं । जं कीरइ सोहणो धम्मो ॥३२॥

अर्थ—हे आत्मन्! (खणजंगुरे के०) क्षण क्षणमां नाश पामतुं एवुं (सरीरे के०) शरीर सते, तथा (अप्नपमल सारिछे के०) मेघना समूह जेवो, एटले जेम वायराथी मेघ शीघ्र नाश पामे छे, तेम थोडा कालमां नाश पामे एवो. (मणुअजवे के०) मनुष्य जवने विषे

(जं के०) जे (सोहणो के०) सारो. एटले पांच आश्रवथी विराम पामवा रूप(धम्मो के०) जिनप्रणीत धर्म जे ते (कीरइ के०) करीए. (इत्तियमित्तं के०) एटलु मात्रज (सारं के०) सारछे. अर्थात् आ संसारमां जेटलुं धर्म साधन थाय छे, एटलुंज सार छे. ॥३१॥

नावार्थ–हे नव्य जीव! देवादिक नवनी अपेक्षाए थोडा काल रहे एवो, आ मनुष्य नव छे. तेमां वली आ शरीर क्षणे क्षणे नाश पामे तेवुं छे. अर्थात् चारे तरफथी बलवा मांडेला घर जेवुं आ शरीर छे. तेवा क्षणिक शरीर वडे, जेटली घडि तुं धर्म साधन करीश, एटली वारनोज तहारो मनुष्य नव लेखानो छे. जेम कोइ घर बलतुं होय, ने तेमांथी जेटलो सामान काढी लीधो, तेटलोज आपणो छे. तेम नाश पामता शरीरथी जेटली घडि तुं तहारा आत्मानुं साधन करीश, एटलीज वार तहारो मनुष्यनव जाणवो. अने बाकीनो पशुना जेवो निरर्थक जाणवो. एटले जेम पशु छे, ते आहार, नंय अने मैथुन तेणे करीने पोतानो जन्मारो गमावे छे, तेम तहारो पण व्यर्थ जन्मारो गयो जाणवो. ॥३१॥

॥ अनुष्टुप्वृत्तम् ॥

२ ३ ५ ४ ७ ६

जम्मदुक्खं जरादुक्खं । रोगा य मरणाणि य ॥

१ १३ ८ १२ ९ ११ १०

अहो दुक्खो हु संसारो । जह्व कीसंति जंतुणो ॥३३॥

अर्थ—(अहो के०) अहो इति आश्चर्य! एटले आ वात आश्चर्यकारी छे. अथवा (अहो के०) हे जीव! ए प्रकारे जीवनुं संबोधन करवुं. आ संसारमां पर्यटण करता प्राणियोने कोइ एवो पदार्थ नथी के, जे दुःखदायक न होय. अर्थात् सर्वे पदार्थ दुःखदायक छे. शुं शुं दुःखदायक छे; ते देखाडे छे. (जम्म दुक्खं के०) जन्म संबंधी दुःख, एटले आ जीवने जन्मती वखते घणुंज दुःख थायछे. तथा (जरा दुक्खं के०) वृद्धावस्था संबंधी दुःख, एटले घईडपणमां अनेक प्रकारनां दुःख प्राप्त थाय छे. (य के०) वली (रोगा के०) अनेक प्रकारना व्याधि उत्पन्न थाय छे. (य के०) वली (मरणाणि के०) अनेक प्रकारे मरणनी वेदना थाय छे. माटे (हु के०) निश्चे (जह्व के०) जे संसारने विषे (जंतुणो के०) प्राणी जे ते (कीसंति

के०) क्लेश पामे छे, ते (संसारो के०) संसार जे ते (दुरको के०) केवल दुःख रूपज छे. अर्थात् आ संसारमां कांइ पण सुख नथी. ॥२३॥

भावार्थ—हे आत्मन्! तुं विचार करय के, आ जीव ज्यांथी जन्मे छे, त्यांथी ते मरण पर्यंत केवल दुःखमांज वर्त्ते छे. केम के, जन्मती वखते दुःख घणु पडे छे. ते विषे शास्त्रमां कह्युं छे के, अग्नि वडे तपावीने, लालचोल करेली साडात्रण क्रोड सोयो, शरीरमां रहेली एवी साडात्रण कोटि रोमराय, तेने विषे चांपतां जेटली वेदना थाय, तेथी आठगुणी वेदना गर्भने विषे थाय छे. तथा जन्मती वखतनी वेदना तो, कांइ कही शकाय तेवी नथी; जेम जतरडामां घालेला सोना रुपाना तारने, जेम बलात्कारे खेंची काढे छे, ए दृष्टांते मातानी योनी यंत्रमांथी निकलतां, माताने तथा पोताने, अतुल वेदना थाय छे. तेवी रीते मरणनुं दुःख पण जाणी लेवुं. हवे जन्म अने मरण ए बे दुःखोनी मध्ये, रहेला दुःखोनुं वर्णन करीए छीए. बाल्यावस्थाने विषे, ते बालकने बोलतां न आवडवाथी, तेने जे वेदना थइ होय, ते वेदना मटाडवाना उपचारने बदले, उलटी तेने वधारे वेदना थाय; तेवा उपचार करवामां आवे छे. जेम के, ते बालकने मांथु दुःखतुं होय, तेनो उपचार मूकीने पेट

दुखतु मटाडवानो उपचार करे छे. इत्यादि. वली जंवानीमां एटले मानी लीधेली सुखनी अवस्थामां पण, संसारना समस्त सुखनी प्राप्ति थती नथी.—कदापि पराणे एक सुखनी प्राप्ति थाय छे, तेवामां बीजां बे दुःख उनां थाय छे. जेम कोइ वस्तुनो धडो करवा माटे, कांइ पण चीज न जडवाथी, चोमासामां उत्पन्न थएलां आशरे दश पंदर देडकां लेइ, पांचशेरीनो धडो करे छे, तेवामां ते धडो, कांइक उंछो थवाथी जेवामां बीजुं एक देडकुं लेवा जाय छे, तेवामां बे देडकां कूदी जाय छे. वली बेने पकडवा जाय छे, तेवामां चार जतां रहे छे, तेम ए दृष्टांतनुं सिद्धांत ए छे के, स्त्री, धन, पुत्र, निरोगीपणुं जगत्मां मान्यपणुं, तथा महोटी हवेलीउ, अने स्वजनादिकनुं अनुकूलपणु इत्यादिक बधां सुख भोगववानी इच्छा करे छे, तेवामां तेमांथीज अणधार्युं. अणचिंतव्युं, उचिंतुं महाकष्ट आवी पडे छे. जेम के, पुत्रना सुखनी इच्छा करवा जाय छे, तेवामां स्त्री मरी जाय, वली स्त्रीना सुखनी इच्छा करवा जाथ छे, एटलामां द्रव्य नाश थइ जाय, वली पराणे कदापि द्रव्य मल्युं, तो शरीरे मांदो थाय, कदापि शरीरे साजो थयो, तो घर बली जाय, वली घर समु करावVा जाय, एटलामां चोरीनो, अथवा स्वजनादिकनो उपद्रव थाय, माटे जवानीमां पण, सर्व प्रकारनी बरोबर

व्यवस्था राखीने सुख जोगववा जाय, तोपण जोगवी शकातु नथी. तो वृद्धावस्थामां तो क्यांथीज जोगवाय? केम के, सर्व सुख जोगववानुं मुख्य साधन एवुं जे शरीर, ते निर्बल, रोगी, कद्रूपु थइ जाय छे. तेमज शास्त्रमां कह्युं छे के, हाथ पग विगेरे अंग थरथर ध्रूजे छे. तथा आंखे पूरुं देखातुं नथी. काने पूरुं संजलातुं नथी. नाकमांथी लींट नितरे छे. ने दांत पण हाली जे छे. तथा पडी पण जाय छे. तथा खांसी, श्वास अने शरीरनुं निर्बलपणु वधे छे. अंग जागे छे, तुटे छे अने फाटे छे. वली मुखेथी बराबर चोखुं बोली शकातुं नथी. अने लोकने पण अनादर करवा जोग्य, तथा हांसी करवा जोग्य थाय छे. तथा दिवसे दिवसे ज्ञान पण जुं थतुं जाय छे. तोयपण बधा काममां म्हापण मोहोलवा घणो जाय छे, त्यारे पोतानी स्त्री तथा वहालो पुत्र अने पुत्री विगेरे, ते मोसाने तिरस्कार करीने एम कहे छे के, तमे छानामाना खाटलामां पड्या रहोने! नकामो लवारो शुं करवा करो छो! तमारुं हैय्यु फूटी गयुं छे, पण कांइ अमारुं फुटी गयुं नथी के, तमारु कह्यु करीए!! वली घरना खूणाने विषे खांशी खातो खातो एक तूटमूट खाटलीमां पडयो रहे छे. वली जवानी अवस्थामां पुत्रादिकने पालन पोषण करेलां, ते एवी आशाए के, तेज वृद्धावस्थामां म्हारी चाकरी करशे, तोयपण ते स्त्री,

पुत्र, पुत्रनी स्त्रीयो, इत्यादि ते पण ते डोसाथी न सहन थाय तेवो, पराजव करे छे. अने वली मोढेथी बोले छे के, आ डोसो मरतोए नथी, ने मांचो मूकतो पण नथी. वली ते डोसाने घरमां रहेला माणसोज तेनी निंदा करे छे, एटलुंज नही, परंतु ते वृद्ध पोतेज, पोताना देहनी निंदा करे छे. ते उपर टीकामां लखेलुं काव्य तथा तेनो अर्थ लखीए छीए.

॥ वैतालीयवृत्तम् ॥

वलिसंततमस्थिशेषितं । शिथिलस्नायुधृतं कलेवरम् ॥
स्वयमेव पुमाञ्जुगुप्सते । किमु कान्ता कमनीयविग्रहा ॥१॥

अर्थ—वृद्धावस्थाथी जेना बधा शरीरनी त्वचा (चामडी) मां करचोलीयो वली गइ छे. तथा शरीरमां केवल हाडकांज देखाय छे. अने नाडियो पण, शिथिल थइ गइ छे. एवा बेढंगा कलेवरने जोइ, ए वृद्ध पोते पोतानी मेलेज, ते शरीरनी निंदा करे छे, तो जेनुं शरीर सुंदर छे, एवी स्त्रीयो निंदे; तेमां तो शुंज कहेवुं? ॥१॥

वली ते वृद्धावस्थाना दुःख उपर टीकामां कथा लखेली छे, तेनो अर्थ लखीए छीए.

कथा. ३

कौशांबी नगरीने विषे घणा धनवालो, अने घणा पुत्रवालो एवो, एक धनो नामे सार्थवाह हतो. तेणे

एकलेज नाना प्रकारना उपाये करीने, धन उपार्जन करयुं. ने ते सघलु धन, डुःखवालां बंधुजन, तथा स्वजन,
तथा मित्र, तथा स्त्री, अने ज्नाई आदिक सर्वे संबंधीउना ज्नोगने अर्थे वापरयुं. त्यार पछी ते धनो, कालना
परिपाकपणाथी वृध्ध अवस्थाने पाम्यो. ने तेना सघला पुत्रो, तेनुं सारी रीते पालन पोषण करवानी योग्य
कलामां कुशल हता. अने संसार संबंधि सघला कामनी चिंतानो ज्नार, तेणे ते पुत्रो उपरज नांख्यो हतो.
तोयपण ते पुत्रो एम बोले छे के, अमने आ पिताजीएज आवी सुंदर अवस्थाने पमाड्या छे. तथा सर्वे लोकना
अग्रेसर कर्या छे. तथा तेमणे अमारो वहु उपकार कर्यो छे. ए रीते पोतानुं सारु कुलीनपणुं, ते पुत्रो जणावता
हता. पछी कोई कार्य प्रसंगे, ते वृध्धनी स्त्रीयो पोताना स्वामीनी चाकरी करती हती. तेमां पण शरीर चोली-
ने स्नान करावनुं, तथा ज्नोजन कराववुं इत्यादिक जे काले जेम करवुं घटे, ते तेम निरंतर करती हती. तेम
करतां करतां केटलाएक दिवस गया, पछी वृध्धपणुं वृध्धि पाम्युं. एटले आखा शरीरनी इंद्रियो स्वाधीन न
रही. अने सर्व अंग कंपवा लाग्यां. अने नेत्रादिकमांथी पाणी गलवा मांड्युं. त्यारे हलवे हलवे ते स्त्रीयादि-
काए, ते वृध्धनी चाकरी घटाडवा मांडी. केमके, वृध्धपणुं तो वधवा लाग्युं माटे. वली ते वृध्ध, चित्तना अज्नि-
मान वडे करीने, वृध्धावस्थाना डुःखरूप समुद्रमां पड्यो. वली ते वृध्धना दीकरानी स्त्रीयो एम कहे छे के, आ
ज्नोसानुं वईतरु कूटवानुं ते अमारा कर्ममां क्यां सूधी घाली मूक्युं हशे? ते कांइ मालम पडतुं नथी. त्यारे तेमना
स्वामीउ एटले ते ज्नोसाना पुत्रो, वली ते स्त्रीयोने समजावीने ज्नोसानी चाकरीमां वलगाडे छे, त्यार पछी एक
दिवस ते सर्वे स्त्रीयो, संप करीने पोत पोताना ज्नरतारने एम कहे छे के, तमारा पितानी अमे घणी घणी चाकरी
करीए छीए, तोयपण ते वृध्धपणामां बुध्धिनी विकलताथी, अमारी करेली चाकरीना जसने बदले, उलटो अ-

पजस आपे छे. माटे तमने जो अमारुं कह्युं मानवामां न आवतुं होय, तो बीजा कोई माणस पासे ते डोसानी चाकरी करावो; एटले खबर पडशे. पछी ते पुत्रोए तेमज कर्युं. त्यार पछी केटलाएक दिवसे पुत्रे पूछ्युं के, हे पिताजी! केम हवे सारी रीते चाकरी थाय छे? त्यारे ते डोसो बोल्यो के, भाई! शुं कहुं!! म्हारुं मन जाणे छे, कांइ कहेवानी वात नथी. एवी रीते ते डोसानुं बोलवुं सांभळीने, ते सर्वे स्त्रीयो पोत पोताना पतिने कहेवा लागी के, तमे अमारुं कह्युं प्रथम नहोता मानता, पण हवे जखमारीने मान्युं!! इत्यादिक रीते बोलीने, ते डोसाना अवगुण पोताना पतिना हृदयमां सारी रीते ठसाव्या. ते पुत्रो पण ते स्त्रीयोनुं कहेवुं मान्य करीने, पोताना पिताने तिरस्कार करवा लाग्या. ए रीते च्यारे तरफनुं दुःख भेगुं थवाथी, ते डोसाए तो पोको मूकवा मांडी. ते सांभळीने ते स्त्रीयो बोली के, आपणा ससराने अन्न पचतु नथी, ने वगर विचार्युं खा खा करे छे, तेथी चूंक आवती हशे, माटे लावो! देवता वडे शेकीए. पछी ते स्त्रीउ पण लूगडाना कुचा सारी पेठे उना करीने जेम डाम दे, तेम डोसाने शेके छे. तेथी ते डोसाने घणी पीडा थवाथी डोसो ना ना कहेतो जाय छे, तो पण, पराणे पराणे शेके जाय छे. अने मनमां विचार छे के, आ डोसाए लोकमां अमारी बहु फजेती करी छे, माटे फरीने फरीने आवो लाग मळवानो नथी. एम विचारीने, ते डोसाने बहु पराभव करे छे. त्यार पछी ते डोसो पण, आर्त्तध्याने करीने थोडा दिवसमां मरण पाम्यो. ए रीते वृद्धावस्थानुं दुःख जाणवुं.

वळी ते वृद्धावस्थाना दुःखना वर्णननुं बीजुं काव्य, टीकामां लख्युं छे, ते लखीए छीए.

॥ शार्दूलविक्रीडितवृत्तम्.॥

गात्रं संकुचितं गतिर्विगलिता, दन्ताश्च नाशं गता ।
दृष्टिर्भ्रश्यति रूपमेव ह्रसते, वक्त्रं च लालायते ॥
वाक्यं नैव करोति बान्धवजनः पत्नी न शुश्रूषते ।
धिक्कष्टं जरयाभिभूतपुरुषं, पुत्रोप्यवज्ञायते ॥२॥

अर्थ–वृद्धावस्थामां शरीर संकोचाइ जाय छे. एटले शरीरे करचोलीउ वले छे. अने गति पण विकल थाय छे, एटले ज्यां पग मूकवो धार्यो होय, त्यां न मूकातां बीजे ठेकाणे मुकइ जाय छे. अने दांत पण पडी जाय छे. अने आंखे पण झांख आववाथी बराबर देखातुं नथी. अने रूप पण दिवसे दिवसे घटतुं जाय छे. अने मुखमांथी लाल चूए छे. वली बांधवजन पण, ते वृद्धनुं कह्युं करता नथी. अने परणेली स्त्री पण, सेवा करती नथी. माटे जराए (वृद्धवस्थाए) करीने पराभव पामेला पुरुषने धिक्कार थाउ !!! केम के, पुत्र पण ते वृद्धने तिरस्कार करे छे. माटे ए वृद्धपणानुं जीववुं, ते केवल कष्टरूप जाणवुं. ॥२॥

वली कह्युं छे के, जेम ते वृद्धनी पोतानां घरनां माणसो निंदा करे छे. तेम ते वृद्ध पण पोताना घरना माणसोना, अनेक दोष प्रकट करीने, तेउनी निंदा करे छे. वली ते वृद्धे

पूर्वे एटले जवानी अवस्थामां धर्म कर्यो हतो, तेथी केंटलाएक लोक ते वृद्धनो निर्वाह करता हता, ते पण आ वृद्धावस्थामां, तेनुं दुःख नाश करवाने समर्थ थता नथी. जेम कोइ माणस नौकामां (वहाणमां) बेठो होय, तेवामां ते नौका भर दरिया वच्चे भागी जाय, त्यारे तेमां बेठेला माणसोने, जेम दुःख थाय, तेम आ वृद्धने पण सहाय्यता न मलवाथी, तेवुं दुःख थाय छे. तथा वृद्धावस्थामां प्राये सोल रोग उत्पन्न थाय छे, तथा जे वृद्धने जोवाथी बीजाने पण करुणा उत्पन्न थाय, तेवो ते वृद्ध दुःखी थाय छे. इत्यादि विस्तार श्री आचारांगजी सूत्रथी जाणवो. वली शास्त्रमां कह्युं छे के,

॥ अनुष्टुप्वृत्तम्. ॥

सव्वे जीवावि इच्छंति । जीविउं न मरिज्जउं ॥
तम्हा पाणिवहं घोरं । निग्गंथा वज्जयंति णं ॥३॥

अर्थ—पूर्वे वृद्धावस्थानुं जे दुःख कह्युं, तेथी मरणनी वेदनानुं दुःख अत्यंत जाणवुं. माटेज शास्त्रमां कह्युं छे के, सर्वे जीवो जीववुं वांछे छे, पण कोइ जीवो मरवुं इच्छता नथी. एटलाज माटे निर्ग्रंथ महामुनियो घोर एवा प्राणिवधनो त्याग करे छे. ॥३॥

वळी एज अधिकारने विशेष जाणवाना अर्थि पुरुषोए, श्री आचारांगजी सूत्रमांथी जोइ लेवुं. वळी गाथामां च शब्दनुं ग्रहण कर्युं छे तेथी द्रव्य संबंधीनुं पण घणुंज दुःख छे; ते देखाडे छे.

अर्थानामर्जने दुःख । मर्जितानां च रक्षणे ॥
आये दुःखं व्यये दुःखं । धिगर्थं दुःखसाधनम् ॥४॥

अर्थ—आ संसारने विषे मनुष्योने बे प्रकारना प्राण छे. तेमां एक अंतःप्राण, ने बीजा बहिःप्राण, तेमां अंतःप्राणतो प्रसिद्ध छे. अने बहिःप्राण ते धन छे. केम के, प्राण जतां जेवुं दुःख थाय छे, तेवुंज दुःख धन जतां पण थाय छे. एटलाज माटे ज्ञानी पुरुषोए आ दुःखनी पंक्तिमां धनने पण गण्युं छे. केम के, (अर्थानां के०) धन मेळवतां पण दुःख छे, तेमज उपार्जन करेला धनने साचववामां पण दुःख छे. माटे धन आव्ये पण दुःख छे, अने धन गये पण दुःख छे. अर्थात् ते धनज दुःखदायक छे. माटे दुःखनुं साधन एवा धनने धिक्कार थाओ!! ॥४॥—ए रीते जन्म, जरा, रोग, मरण अने धन, ने संबंधी दुःखनो विचार करवो. पण अंध परंपराए न चालवुं. ए उपदेश. ॥२२॥

॥ आर्यावृत्तम्. ॥

१ ३ २ ४ ६ ५ ७

जाव न इंदियहाणी । जाव न जररक्खसी परिप्फुरई ॥

८ १० ९ ११ १३ १२ १४

जाव न रोगविआरा । जाव न मच्चू समुल्लिअई ॥३४॥

अर्थ—हे जीव! (जाव के०) ज्यां सूधी (इंदियहाणी के०) इंद्रियोनी हानी, एटले इंद्रियोनुं क्षीणपणुं (न के०) नथी थयुं तथा (जाव के०) ज्यां सूधी (जररक्खसी के०) जरारूप राक्षसी (न परिप्फुरई के०) नथी प्रकट थई, तथा (जाव के०) ज्यां सूधी (रोगविआरा के०) रोग विकार (न के०) नथी प्रकट थया, तथा (जाव के०) ज्यां सूधी (मच्चू के०) मृत्यु जे ते (न समुल्लिअई के०) नथी उदयमां आव्युं, त्यां सूधीमां शक्तिने न गोपवतां तहाराथी बने तेटलुं धर्मसाधन करी ले; नहिं तो पछीथी तने घणोज पश्चात्ताप थशे. ॥३४॥

भावार्थ—हे प्राणिन्! ज्यां सूधी तहारी इंद्रियोनी शक्ति भरपूर छे, अने ते शक्तिने जरारूप राक्षसीए भक्षण नथी करी, अने ज्यां सूधी रोग विकार रूप शत्रुए, कायारूप नगरमां

घेरो नथी घाल्यो, अने ज्यां सूधी कालना सपाटामां बरोबर नथी आव्यो; त्यां सूधीमां तुं जेटलुं आत्म साधन करवुं धारीश, तेटलुं बनी शकशे. माटे जेम बने तेम प्रमाद मूकीने जलदीथी धर्मसाधन करय. ॥३४॥—वली नर्तृहरिये पण कह्युं ले के,

॥ शार्दूलविक्रीडितवृत्तम्. ॥

यावतस्वस्थमिदंकलेवरगृहं, यावज्जरा दूरतो* ।
यावच्चेन्द्रियशक्तिरप्रतिहता, यावतक्षयो नायुषः ॥
आत्मश्रेयसि तावदेव विडुषा, कार्यः प्रयत्नो महान् ।
मोहीप्ते° जवने हि कूपखननं, प्रत्युद्यमः कीदृशः ॥१॥

अर्थ-(यावत् के०) ज्यां सूधी आ शरीररूप घर साजुं ले, तथा ज्यां सूधी जरा नथी आवी, तथा ज्यां सूधी इंद्रियोनी शक्ति नाश नथी पामी, तथा ज्यां सूधी आउखुं पूरुं नथी थयुं, त्यां सूधीमां पंमित पुरुषे, पोताना कल्याणने अर्थे महोटो प्रयत्न करवो. अर्थात् रात्रि दिवस परलोके सुख थाय; एवाज साधनमां प्रवर्त्तवुं. केम के, कोइ एवुं विचारे के, हालतो जवान अवस्था ले, माटे हालमां संसारनां सुख जोगवीने, पढी वृद्धावस्थामां धर्म साधन

*यावच्चदूर जरा. °संदीप्ते.

करीशुं, पण हे सज्जनो! जेम (प्रोद्दीते के०) घर अतिशे बलवा मांडयुं, त्यारे जे कूवो खोदवानो उद्यम करवो, ते केवो कहेवाय? एटले घर बलवा मांड्या पछी कूवो खोदी पाणि कढाडी घर होलवायज नही. तेम वृद्धावस्थामां बधुं धर्मसाधन करी शुं, एम धारवुं ते सिद्ध थायज नही. केम के, वृद्धावस्थाना स्वाभाविक दुःखथी, धर्म साधन बनी शकवुं घणुंज कठण छे. माटे धर्म साधन करवामां प्रमाद न करवो. ॥१॥

वली एज वातने मूल ग्रंथकार पण जणावे छे.

१ २ ३ ५ ६ ७ ८ ४

जह गेहंमि पलित्ते । कूवं खणिउं न सक्कए कोइ ॥

९ १२ ११ १३ १४ १५ १०

तह संपत्ते मरणे । धम्मो कह कीरए जीव ॥३५॥

अर्थ—हे जीव! (जह के०) जेम (गेहंमि के०) घर (पलित्ते के०) बलवा लाग्ये सते (कोइ के०) कोइ पण, एटले समर्थ होय ते पण (कूवं के०) कूवाने (खणिउं के०) खोदवाने. अर्थात् कूवो खोदी पाणी कांढीने, बलता घरने होलववाने (न सक्कए के०) न

समर्थ थाय. (तह के०) तेम (जीव के०) हे जीव! (मरणे के०) मरण (संपत्ते के०) प्राप्त थए सते. एटले मरण नजीक आव्ये सते (धम्मो के०) धर्म जे ते (कह के०) किये प्रकारे (कीरए के०) करी शकाय? ॥३५॥

नावार्थ—हे आत्मन्! ज्यारे (जवानी अवस्थामां) तहारे धर्म करवानो अवसर हतो, त्यारे तुं बीजे चाले चढी गयो, एटले विषयी जीवनी संगते पशुनी पेठे फोगट अवस्था गमावी. अने हवे ज्यारे शरीरनी शक्ति क्षीण थवाथी, नकामा जेवो थयो, अने वली ज्यारे तने कूतरानी पेठे, तहारां स्त्री पुत्रादिके तिरस्कार कर्यो, त्यारे तुं पराणे धर्म साधन करवाने तत्पर थयो, पण हे मूढ जीव! तुं एटलुं विचारतो नथी के, हवे महाराथी शुं बनवानुं छे? जेम ज्यारे तरफथी घर बलवा मांड्युं, ने तेने होलववाने माटे, जाणे कूवो खोदी पाणी काढीने, ते बलतुं घर होलववुं, इत्यादिक विचार जेम फोगट छे, तेम शरीरनुं सामर्थ्य गया पछी, धर्म साधन करवानो विचार, ते व्यर्थ छे. एम देखी, तुं विचारय के, धर्म साधन तो नानपणमांथीज, अभ्यास करतां करतां प्राये घणे कालेज सिद्ध थाय छे. जेम कूवाना कांठा उपर पाणी काढवानी जग्याए, पथरो अथवा लाकडुं पड्युं होय, तेमां पण कोमल एवा दोरडा

वडे, घणो काले करीने घसाराथी ऊंडा कापा पडे छे. पण तेवो कापो पाडवाने, कदापि लोढानी सांकलथी आखो दिवस घसे, तोयपण, तेवो कापो न पडे. तेम तुं बाल्यावस्थाथीज विषय कषाय ओछा करवाने माटे, धर्म साधनमां वर्त्तवानो अभ्यास करय. ॥३५॥

२ ३ १ ६ ४ ५
रूवम ऽसासयमे यं । विज्जुलयाचंचलं जए जीअं ॥
ए
७ १० ९ ८
संझाणुरागसरिसं । खणरमणीअं च तारुन्नं ॥३६॥

अर्थ—हे आत्मन्! (एयं के०) आ (रूवं के०) शरीरनुं सुंदरपणुं जे ते (असासयं के०) अशाश्वतुं छे. केम के, रोगादिके करीने सनत्कुमार चक्रवर्त्तिना शरीरनी पेठे नाश पामे तेवुं छे. वली (जए के०) जगत्ने विषे (जीअं के०) जीवित जे ते (विज्जुलया चंचलं के०) वीजली रूप लतानी पेठे चंचल छे. एटले जेम वीजली, क्षणमात्र देखाइने पछी नाश पामे छे, तेम जीवित पण थोडा कालमां नाश पामे छे. अने (च के०) वली (तारुन्नं के०) जवानीपणु जे ते (संझाणुराग सरिसं के०) संध्यांकालना नाना प्रकारना रंग सरखुं, एटले संध्याकाले

आकाशमां पंचवर्णा अभ्रपटलना रंग, उत्पन्न थाय छे. तेना जेवुं (खणारमणीअं के०) क्षणमात्र सुंदर देखाय तेवुं छे. ॥३६॥

भावार्थ—जेम संध्याकाळे अनेक प्रकारना वादळांना रंग थाय छे, ते क्षणमात्र देखाइने वायुना प्रयोगथी नाश पामे छे. वळी जेम जळकमळ (पुंडरीकादि कमळ) अने स्थळकमळ (गुलाबनां फूलादि) केवां सुंदर प्रफुल्लित देखाय छे? परंतु तेज फूल, बे त्रण दिवसमां एवां करमाइ जाय छे के, तेनी कांइ पण शोभा रहेती नथी; तेम जवानी अवस्थामां पण शरीर, पुष्पनी पेठे खीलेलुं देखाय छे, अर्थात् मोहनुं कारण थइ पडे छे. परंतु तेनु तेज शरीर, वृद्धावस्थामां एवुं नगारुं थइ जाय छे के, तेना सामुं जोवुं पण, बहुधा गमे नही! माटे एवा तरुणावस्थामां शरीरनो शो मद करवो? ॥३६॥

आ शरीरनी सुंदरतानो अहंकार न करवा आश्री सनत्कुमार चक्रवर्त्तिनी कथा टीकामां जणाव्याथी लखीए छीए.

कथा. ४

भरतचक्रवर्त्तिना जेवी ऋद्धिवाळो सनत्कुमारनामा चक्रवर्त्ती राजा हतो. सनत्कुमारनो वर्ण अने रूप अ-

नुपम हतां. एक वेळा सुधर्म सभामां ते रूपनी स्तुति थई, ते वात कोइ बे देवोने रुची नही; पछी तेओ ते शंका टाळवाने विप्ररूपे सनत्कुमारना अंतःपुरमां गया. सनत्कुमारनो देह ते वेळा खेळ भरयो हतो, तेने अंग मर्द-नादिक पदार्थोनुं मात्र विलेपन हतुं. एक नहानुं पंचियुं पहेरयुं हतुं, अने ते स्नानमंजन करवा माटे बेठो हतो. तेवामां विप्ररूपे आवेला देवता, तेनुं मनोहर मुख, कंचनवर्णी काया अने चंद्रना जेवी कांति, जोइने बहु आनंद पाम्या. जरा मांथु धुणाव्युं, एटले चक्रवर्त्तिए पूछयुं तमे मांथु केम धुणाव्युं ? देवोए कह्युं. अमे तमारुं रूप अने वर्ण निरीक्षण करवा माटे बहु अभिलाषी हता. स्थळे स्थळे तमारा वर्ण रूपनी स्तुति सांभळी हती. आज ते वात अमने प्रमाणभूत थइ, एथी अमे आनंद पाम्या. माटे मांथु धुणाव्युं के, जेवुं लोकोमां कहेवाय छे, तेवुंज रूप छे. एथी वळी विशेष छे पण ओछुं नथी. सनत्कुमार, स्वरूपना वर्णनी स्तुतिथी प्रभूत लावी बोल्यो, तमे आ वेळा महारुं रूप जोयुं तो भले. परंतु हुं ज्यारे राजसभामां वस्त्रालंकार धारण करी केवळ सज्ज थइने, ज्यारे सिंहासन उपर बेसुं छुं, त्यारे महारुं रूप अने महारो वर्ण जोवा योग्य छे; अत्यारे तो हुं खेळभरी कायाए बेठो छुं, जो ते वेळा तमे महारुं रूप वर्ण जुओ तो अद्भुत चमत्कारने पामो; अने चकित थइ जाओ. पछी देवोए कह्युं त्यारे अमे राजसभामां आवीशुं; एम कहीने त्यांथी चाल्या गया. त्यार पछी सनत्कुमारे उत्तम अने अमूल्य वस्त्रालंकारो धारण करयां. अनेक उपचारथी जेम पोतानी काया, विशेष आश्चर्यने उपजावे तेम करीने, ते राजसभामां आवी सिंहासन उपर बेठो. आजुबाजु समर्थ मंत्रियो, सुभटो, विद्वानो अने अन्य सभासदो योग्य आसने बेसी गया छे. राजेश्वर, चामरछत्रथी अने खमाखमाथी विशेष शोभी रह्यो छे (वधाइ रह्यो छे.) त्यां पेला देवताओ पाछा विप्र रूपे आव्या. अद्भुत रूप वर्णथी आनंद पामवाने बदले जाणे खेद पाम्या छे! एवा स्वरूपमां तेओए मांथु धुणाव्युं.

चक्रवर्त्तिए पूछ्युं अहो ब्राह्मणो! गइ वेला करतां आ वेला तमे जूदा रूपमां मांथु धुणाव्युं, एनुं शुं कारण छे? ते मने कहो. अवधिज्ञानानुसारे विप्रे कह्युं के, हे महाराज! ते रूपमां अने आ रूपमां भूमी अने आकाश जेटलो फेर पडी गयो छे. चक्रवर्त्तिए ते वात स्पष्ट समजवा पुछ्युं त्यारे ब्राह्मणे कह्युं. अधिराज! प्रथम तमारी कोमल काया अमृत तुल्य हती. पण आ वेलाए झेररूप छे. तेथी ज्यारे अमृत तुल्य अंग हतुं, त्यारे आनंद पाम्या हता. आ वेला झेर तुल्य छे, त्यारे खेद पाम्या. अमे कहीए छीए ते वातनी सिद्धता करवी होय तो, तमे हमणां तांबूल थुंको: तत्काल तेना उपर मक्षिका बेसशे अने ते परधाम प्राप्त थशे. सनत्कुमारे ए परीक्षा करी तो सत्य ठरी, पूर्व कर्मना पापनो जे भाग, तेमां आ कायाना मद संबंधनुं मेलवण थवाथी ए चक्रवर्त्तिनी काया झेरमय थइ गइ. विनाशी अने अशुचिमय कायानो आवो प्रपंच जोइने सनत्कुमारने अंतःकरणमां वैराग्य उत्पन्न थयो. के, केवल आ संसार तजवा योग्य छे. आवीने आवी अशुची स्त्री, पुत्र मित्रादिना शरीरमां रहेली छे. ए सघलुं मोहमान करवा योग्य नथी. एम बोलीने, ते छ खंडनी प्रभूतानो त्याग करीने चाली निकल्यो. एवुं जाणीने अह ममत्व न करवो.

३ २ ५

गयकन्नचंचलाउ । लच्छीउ तिअसचावसारिछं ॥

४ १ ७ ६ ८ ९

विसयसुहं जीवाणं । बुझसु रेजीव मा मुझ ॥३७॥

अर्थ–(जीवाणं के०) जीवोनी (लच्छीउ के०) लक्ष्मीयो जे ते (गयकन्न चंचलाउ के०)

हाथीना कान जेवी चंचल छे. अने (विसयसुहं के०) विषय सुख जे ते (तिअसचाव सारिछं के०) इंद्रना धनुष् (आकाशमां लीलां पीलां धनुषनी आकृतिवालां वादलां देखाय छे ते) सरखां चंचल छे. ए हेतु माटे (रे जीव के०) हे मूढ जीव! (बुझसु के०) बोध पाम्य. अने (मा मुझ के०) मोह न पाम्य. केम के, फरीथी आवी मनुष्य देहादिक सामग्री मलवी घणीज दुर्लन छे, माटे धर्मने विषे बोध पाम्य. ॥२७॥

नावार्थ–रे आत्मन्! जे लक्ष्मीयोने देखीने तुं अहंकार धारण करे छे, के, आ लक्ष्मी जीवतां सूधीमां महारी पासेथी जवानीज नथी. परंतु ए लक्ष्मीयो हाथीना काननी पेठे चंचल छे. केम के, थोडा काल उपर तें जेउने मोटा धनाढ्य दीठा हता, तेउज कर्मना वशथकी थोडा कालमां दरिद्र थएला, तहारा जोवामां आवे छे, माटे लक्ष्मीयोनुं स्थिरपणुं नथी. वली जीवोनां शब्दादिक विषय सुख पण, इंद्र धनुषनी पेठे एटले आकाशना लीला पीला रंगनी पेठे शीघ्र नाश पामे तेवां छे. एटले वस्तुगते विषयनां सुख झांझवानां पाणी जेवां, तथा धूमाडाना बाचका जेवां असत्य छे, माटे हे जीव! मनथी मानी लीधेला विषय सुखने तथा लक्ष्मीने असत्य जाणी, श्री जंबूकुमरनी पेठे धर्म साधन करवाने तत्पर था!! ॥२७॥

कथा. ५

राजगृही नगरीने विषे ऋषनदत्त नामा शेठ तेनी धारणी नामे नार्यानी कुखमां, जंबुस्वामीनो जीव, जे पूर्व नवे पांचमा ब्रह्मदेवलोकने विषे तिर्यक्‌जृंनक जातिमां महर्द्धिक देवता हतो, ते त्यांथी (देवलोकथी) चवीने, पुत्रपणे आवीने उपन्यो. त्यार पढी माताए स्वप्नमां जंबूवृक्ष दीठो, पढी ज्यारे ते कुमरनो जन्म थयो, त्यारे तेनो जन्म महोत्सव करीने जंबूकुमार एवुं नाम दीधुं. अनुक्रमे युवान अवस्था पाम्यो, त्यारे सुधर्म गणधरनी पासे धर्मदेशना सांनलीने वैराग्य पाम्यो. त्यारे श्री सुधर्म स्वामीने कह्युं के, हे नगवन्! हुं चारित्र लेइश, पण महारा माता पिताने पूढी आवुं. एम कहीने पाठो घर तरफ आवे ठे. एटलामां मार्गमां आवतां जंत्रथी उपडेलो पथ्थर, पोतानी पासेथी निकल्यो देखीने, विचारवा लाग्यो के, हमणां जो मने आ तोपनो गोलो लागी जात, तो हुं अव्रतिपणामां मरण पामत! एवुं जाणी श्री सुधर्मस्वामीनी पासे पाठो आवीने, ते कुमरे समकित मूल जे बार व्रत ठे, ते बारे व्रत लीधां. एटले अंगीकार कर्यां. तेमां चोथा व्रतमां एटली मर्यादा राखी के, कदापि माता पिताना कहेवाथी स्त्रीयो परणवी पडे तो, तेने परणुं; पण ते स्त्रीओनी साथे नोग नोगववुं नहीं. एवो त्याग करीने, फरी घेर आवी माता पिताने कह्युं के, हे माता! हे पिता!! मने आज्ञा आपो, हुं श्री सुधर्मस्वामी पासे दीक्षा लेउं. त्यारे माता पिताए कह्युं के, हे पुत्र! दीक्षा पालवी घणी उक्कर ठे. एवी रीते घणो घणो समजाव्यो, तोपण जंबूकुमारे मान्युं नही. त्यारे माता पिताए कह्युं के, हे पुत्र! आठ कन्याउ साथे तहारुं सगपण करेलुं ठे, माटे तेने परणीने पढी दीक्षा लेजे. ते सांनली जंबूकुमार मौनपणु धारण करी रह्या. त्यार पढी माता पिताए, आठ कन्याउना पिताउने कह्युं के, अमारो पुत्र वै-

राग्यवान् थयो छे. माटे तमारे दीकरियो परणाववानी मरजी होय तो भले परणावो, पण ते कन्याउनो त्याग करीने जो दीक्षा ले, तो अमारो दोष कहाडशो नही. ते सांभळी सर्व शेठिया कहेवा लाग्या के, अमे नही परणावीए. पण ते शेठियाउनी दीकरीयोए कह्युं के. अमे तो जंबूकुमरनेज परणीशुं. पण बीजाने परणवानो त्याग छे. त्यारे शेठियाउए पोतानी पुत्रीउने कह्युं के, एतो दीक्षा लेशे. तोपण दीकरीयोए कह्युं के, ए दीक्षा लेतो भले ल्यो, पण अमे तो एनेज परणीशुं. पछी ते एक रात्रीमां आठे कन्या परण्या. अने रात्रिये सय्या उपर बेसीने सर्व स्त्रीयोने कह्युं के, हुंतो प्रभाते दीक्षा लेइश. केम के, आ संसार सर्व अनित्य छे, कोइ कोइनी साथे आवनार नथी. त्यारे स्त्रीयोए कह्युं के, हे स्वामिन्! तमे हमणां दीक्षा लेशो नही. हमणां तो जे संसारनुं सुख मल्युं छे. ते सारी रीते भोगवीने, पछी दीक्षा लेज्यो. नहि तो कर्षणीना न्याये पश्चात्ताप करशो. जेम कोइ मारवाड देशनो कर्षणी, पोताने घेर घउं वावीने पछी मेवाडमां, पोताने सासरे गयो. त्यां तेनी सामुए सारा भोजन करीने, थालमां मूक्या. उपरथी शेलडी मूकी. ते शेलडी कर्षणीने, घणी सारी स्वादिष्ट लागी. पछी ज्यारे पोताना सालाने पूछ्युं के, आ शेलडी तमने क्यांथी मली? एटले तमारे घेर क्यांथी आवी? त्यारे सालाये कह्युं के. ए अमारा घरमां नीपजे छे. वलीवीये पूछ्युं, ते केवी रीते नीपजे छे? त्यारे सालाये शेलडी वाववानो विधि देखाड्यो. पछी कर्षणीए जाण्युं के. महारे घेर पण ए हुं वावीश. एम निर्धार करी घेर आवीने प्रथम जे घउंनुं खेत्र वाव्युं हतुं. तेने उखेडी नांखवा लाग्यो. त्यारे लोकोए कह्युं के, आ तुं शुं करे छे? तेणे कह्युं के, हुं एमां शेलडी वावीश. त्यारे लोको कहेवा लाग्या के, आ देशमां पाणी नथी, माटे शेलडी थशे नही, तेम छतां जो तने शेलडीज वाववानी इच्छा होय तो, एकवार जे आ घ-

जंनी खेती करेली छे ते कपावी ले, पछी शेलडी बनावजे. एनुं लोकोनुं कहेवुं तेणे मान्युं नही, अने शेलडी वावी. ते थोडी उगी, एटलामां कूवानुं पाणी खूटी पडयुं, तेथी जे उगेली शेलडी हती, ते पण सुकाइ गइ. त्यारे पश्चात्ताप करवा लाग्यो, तेम हे स्वामिन्! तमे पण छतुं सुख मूकीने बीजा नवा सुखनी चाहना करोछो तो पछी पस्ताशो!! एवी स्त्रीयोनी वाणी सांभली जंबूकुमरे कह्युं के, पूर्वोक्त दृष्टांते पश्चात्ताप नही करुं. परतु जो नही समजशो तो, तमेज पस्तावो करशो. हुंतो ललितांग कुमरनी पेठे तमारा फंदमां नही पडुं. तेनी कथा कहु छुं ते सांभलो. एक नगरमां एक शेठनो पुत्र ललितांग कुमर एवे नामे, महा रूपवंत हतो. तेने एक दिवसे ते नगरना राजानी रूपवती नामा राणी छे, तेणीये दीठो. त्यारे एकांते बोलावीने, तेनी साथे संसार संबंधी भोग विलास करवा लागी. एटलामां राजा पण त्यां आव्यो. त्यारे भयभ्रांत थइने, राणीए ते ललितांग कुमरने, खालमां उतार्यो. अने विचार्युं के, पछी कहाडीश. हवे राणीतो राजानी साथे रमवा लागी गइ. अने ललितांग खालमां भूखे मरतो, कोइ अन्य आवीने एठवाडो नांखे, ते खाय, अने एठनुं पाणी पडे ते पीयें, एवी रीते च्यार महिना पर्यंत ते खालमां पडी रह्यो. इहां कोइ छ महिना सूधी पडी रह्यो एम पण कहे छे. "तत्व केवली गम्य" त्यार पछी ललितांगना मा बापे घणोये जोयो, पण जड्यो नही. तेथी शोक करवा बेठां, एटलामां वर्सात आव्यो तेथी खालमां पाणी भराणुं, ते पाणी कहाडवा सारुं खाल उघाडी, ते खालना पाणीनी साथे ललितांग पण, तणातो तणातो नगरनी म्होटी खालमां जइ पड्यो. तेने लोकोये देखीने, तेना माता पिताने जइ कह्युं. माता पिता जइ खालमांथी कहाडी घेर लेइ गया. त्यां मूर्छा खाइने पडी रह्यो, शरीर पीलुं पडी गयुं, हाडकां नीकली आव्यां, माता पिताये घणा प्रकारना

तैळादिक मसळी जागतो कर्यो. त्यारे कांइक सावचेत थयो. पछी औषधोपचार करतां करतां घणा दिवसे तेनुं शरीर सारुं थयुं. त्यारे वळी कपडा प्रमुख पेहेरीने बजारमां फरवा निकल्यो, तेने राणीये देखीने बोलाव्यो. ते बोल्यो के, हवे हुं तमारा फंदमां पडुं नही. ॥इति ललितांग कथा.॥ एवी रीते आठे स्त्रीयोए, जुदी जुदी आठ कथाओ, संसारना सुखनो त्याग न करवो, ते आश्रयी जंबूकुमरने कही. अने जंबूकुमरे पण फरी संसारनी असारता बतावनारी जुदी जुदी आठ कथाओ आठे स्त्रीयोने कही. ते कथाओ इहां ग्रंथ वधवाना भयथी लखी नथी. जो जाणवानी मरजी होय तो श्री जंबूचरित्रमां जोइ लेज्यो. त्यारे स्त्रीयो प्रतिबोध पामी. एवामां एक प्रभवो चोर, पांचसे चोरने साथे लेइने, जंबूकुमरना घरमां आव्यो. तेणे सर्वने विद्याना बळथी अवस्वापिनी निद्रा मूकी. तेथी सर्वने निद्रा आवी गइ, परंतु जंबूकुमरने निद्रा न आवी. पछी तालां उघाडवानी विद्याथी भंमार उघाडीने, नवाणु क्रोड सोनामहोरोनी गांठडियो बांधी, तेने लेइने चालवा मांड्या, एटलामां जंबूकुमरने, यद्यपि द्रव्य उपर मूर्छा तो बिलकुल नथी, तोपण एवो विचार आव्यो के, म्हारे तो प्रभाते दीक्षा लेवी छे, अने आ चोर लोको जो द्रव्य लेइ जशे, तो लोक कहेशे के, जुओ भाइओ! एनुं धन सर्व चोर लोको लेइ गया, तेथी ए मांथु मुंडावे छे. एवी रीते धर्मनी निंदा थशे. ते वात सारी नही. एवुं चिंतवीने नवकार गुणवा लाग्या, तेथी पांचसे चोरोना पग स्थंभाइ गया. त्यारे प्रभवाने विचार थयो के, आते शुं थयुं! त्यारे जोवा लाग्यो तो, जंबूकुमरने जागता दीठा. त्यारे प्रभवे जाण्युं के, एनी पासे कोइ महा जोरावर विद्या छे. एवुं जाणीने जंबूकुमरने कह्युं के, महारी विद्या तमे ल्यो, अने तमारी विद्या मने आपो. त्यारे जंबूकुमरे कह्युं के, महारी पासे कोइ पण विद्या नथी. वळी बीजी विद्या महारे जोइती पण

नथी. महारे तो मात्र नवकार मंत्रनो आधार छे. एवो धर्मोपदेश दीधो, त्यारे प्रभवे कह्युं के, आ नवी परणेली स्त्रीयोनो त्याग करीने, तुं दीक्षा शा वास्ते ले छे? संसारनां सुख भोगवीने पछी दीक्षा लेजे. तेने जबूकुमरे कह्युं के, हे प्रभवा! संसारमां सुख छेज क्यां? के, जेने हुं भोगवु. संसारनुं सुखतो मधुबिंदुआ समान छे. तेनी लालचे जीव संसारमां रझले छे. जेम कोइ एक [1]पुरुष भूलथी उजड [2]अटवीमां जइ पड्यो तेनी पछवाडे एक [3]हाथी दोड्यो, त्यारे ते हाथीना भयथी नासतो भागतो, एक वडनी [4]शाखामां जइ लटकी रह्यो. हवे ते शाखानी नीचे, एक [5]कूवो छे. तेमां च्यार [6]सर्प पोतानुं मोढुं फाडीने बेठा छे, तथा एक [7]अजगर पण मोढुं फाडीने बेठो छे. तथा ते वडना थडने हाथी धूणावी रह्यो छे. तथा जे शाखामां ते पुरुष लटके छे, ते शाखाने एक [8]कालो अने बीजो [9]धोलो, एवा बे उंदरो कापी रह्या छे. वली तेनी उपर एक मधमाखीनो मधपुडो छे, तेनी [10]मक्षिकाउ उडी उडीने ते पुरुषना शरीरने, चटका मारी रहेली छे. एटलामां ते मधपुडामांथी एक मधनुं [11]टीपु टबक्युं, ते पेला पुरुषनी जीभने जइ लाग्युं, त्यारे ते पुरुषे उंचुं जोवा मांड्युं तो तेणे दीठु के, मधपुडामांथी ए मधुबिंदु पडेछे; एवुं जाणीने ते टीपानी नीचे महोडुं उघाडुं राखीने लटक्यो, अने टीपाना स्वादमां मग्न थयो थको, पोताना उपर पूर्वोक्त अनेक जातनां दुःख पड्यां छे, ते सर्वे भूली गयो. एटलामां एक [12]विद्याधर आवीने कहेवा लाग्यो के, हे पुरुष! तहारुं दुःख देखीने, मने दया आवे छे, माटे आव्य! महारा [13]विमानमां बेसी जा. हुं तने दुःखमांथी काढवा वांछु छुं. त्यारे ते पुरुष बोल्यो हे विद्याधर! आ एक टीपुं मधनुं महारा मुखमां आववा द्यो, पछी हुं आपनी साथे विमानमां बेसी चालुं. एम एक टीपुं आव्युं, वली पण कह्युं के, आ बीजुं टीपुं आवे तो चालुं, ए रीते एकेक टीपाना स्वादमां लो-

जाणो थको, ते विकट स्थानने छोडे नही, त्यारे विद्याधरे जाण्युं के एतो एवोज मूर्खछे, लोभीछे, ए कांइ दुःखमांथी निकळशे नही. एवुं जाणी तेने त्यांज मूकी विद्याधर चाल्यो गयो. तेम हे प्रभवा! आ अवसर चूक्या तो फरी संसारमां पड्या, ने मनुष्य अवतार मळवो महा दुर्लभ छे. एवां वचन सांभळीने प्रभवो चोरपण, प्रतिबोध पाम्यो. अने बोल्यो के, हे जंबु! हुं पण तहारी साथे दीक्षा लेइश. पछी जंबूकुमरे पोताना माता पिताने प्रतिबोध दीधो, तथा आठ कन्याउये वळी पोत पोताना माता पिताने प्रतिबोध दीधो, तथा प्रभवे पण, पांचसे चोरोने प्रतिबोध दीधो, एम सर्व मळी प्रभाते, नवाणुं क्रोड सोनैया धर्म क्षेत्रोमां खरची नांखीने, उत्तम उत्सव सहित पांचसने सत्तावीश जनोनी साथे, श्री जंबूकुमरे श्री सुधर्म-स्वामी पासे दीक्षा लीधी. ए रीते लक्ष्मी अने विषयनां सुख त्याग करवा आश्चर्यो, जंबूकुमरनुं दृष्टांत कह्युं.

आ मधुबिंदुआना दृष्टांतनो सिद्धांत एटले उपनय घणो प्रसिद्ध छे, तोपण किंचित टीका करीने देखाड्यो छे.

---

१ जीव. २ संसाररूप अटवी. ३ काळरूप हाथी. ४ आउखारूप शाखा. ५ भवरूप कूत. ६ च्यार कषायरूप सर्प. ७ नरकरूप अजगर. ८ रात्री. ९ दिवस एरूप बे उंदरो. १० सर्व कुटुंबरूप मक्षिकाउ. ११ विषय सुखरूप मधनुं टीपुं. १२ सुगुरूरूप विद्याधर. १३ जिनधर्मरूप वैमान.

१ २ ३ ४ ६ ७ ५ ८

जह संझाए सउणाण संगमो जह पहे अ पहिआणं ॥

११ १२ ९ १३ १०

सयणाणं संजोगो । तहेव खणभंगुरो जीव ॥३८॥

अर्थ–हे आत्मन्! (जह के०) जेम (संझाए के०) संध्याकाळने विषे (सउणाण के०) पक्षियोनो (संगमो के०) संगम थाय छे. (अ के०) वळी (जह के०) जेम (पहे के०) मार्गने विषे (पहिआणं के०) मार्गे जनार लोकोनो समागम थाय छे. एटले मार्गमां जनार लोकोनो समागम तथा पक्षियोनो समागम जेम थोडा काळनो छे, (तहेव के०) तेमज (जीव के०) हे जीव! (सयणाणं के०) स्वजननो (संजोगो के०) संयोग जे ते (खणभंगुरो के०) क्षणभंगुर छे. एटले क्षणमां नाश पामवाना स्वभाववाळो छे. ॥३८॥

भावार्थ–जेम संध्या समये अनेक प्रकारना पक्षियो, च्यारेदिशा तरफथी आवीने एकठा मळे छे. अने प्रातःकाळे, तेज पक्षियो पोत पोताना कर्मने अनुसरीने, चारेदिशा तरफ उडी जाय छे. तेम आ संसारने विषे अनेक प्रकारना जीवो चारे गतिमांथी आवीने, आ मनुष्य

नवमां एकठा थया छे. अने तेज जीवो, पोतानुं आयुष्य पूर्ण करीने, पाछा कर्मानुसारे चारे गतिमां जता रहे छे. तथा जेम मार्गने विषे, कोइ किये गामथी कोइ किये गामथी आवीने नेगा थाय छे, पछी त्यां थोडीवार विश्राम करीने, एटले नातुं खाइने पाछा सर्वे पोत पोताना योग्य स्थानक प्रत्ये जता रहे छे, पण तेउ एक ठेकाणे बेसी रहेता नथी, तेम आ संसारी जीव पण, कोइ कयि गतिमांथी, कोइ कयि गतिमांथी आवीने, एकठा थाय छे, त्यां पोत पोताना कर्मानुसारे सुख दुःख नोगवीने, पछी पाछा पोत पोताने योग्य गतिमां जता रहे छे. पण कोइ कोइना झाल्या रहेता नथी. वली जेम चारे दिशाएथी आवेला मनुष्योनां नाम, जूदां जूदां छे, तेम चारे गतिमांथी आवेला, अने एक घरमां रहेला एवा जीवोनां नाम पण, जूदां जूदां कल्प्यां छे. तेमां कोइ माता कहेवाय छे, कोइ पिता, कोइ नार्या, कोइ नाई, कोइ पुत्र, कोइ पुत्री इत्यादि कल्पनाए करीने नाम ठराव्यां छे. तेमां तुं महोटो मोह धारण करे छे, अने तेने सुखे सुखी, अने तेने दुःखे दुःखी थाय छे, परंतु हे मूढ जीव! तुं एटलुं विचारतो नथी के, आ जूठा संबंधने साचो संबंध मानीने शुं करवा हेरान थइ छुं? माटे हे जीव! एवा जूठा संबंधने जूठो मानीने, तेना उपरथी मोह उतारीने, आत्म साधन करवा-

ने विषे उद्यमवंत था ! ॥३७॥

॥ उपजातिवृत्तम्. ॥

१ २ ७ ८ १० ए ११

निसाविरामे परिन्नावयामि । गेहे पलित्ते किम ऽहं सुयामी ॥

१२ १३ १४ ३ ४ ५ ६

म्झंतम ऽप्पाणमु उवरकयामि । जं धम्मरहिउ दिअहा गमामि ॥३ए॥

अर्थ–हे जीव ! तने एवो विचार केम नथी आवतो के, हुं (निसाविरामे के०) रात्रि विराम पामे सते. एटले पाछली च्यारघडि रात्री रहे सते जागीने (परिन्नावयामि के०) आवो विचार करुं के, (जं के०) जे हुं (धम्मरहिउ के०) धर्म रहित थयो सतो (दिअहा के०) दिव-वसोने (गमामि के०) फोकट केम गमावुं बुं. !!! अने वली (गेहे के०) शरीररूपी घर (पलित्ते के०) बलवा मांडे सते (अहं के०) हुं (किं के०) श्या माटे (सुयामी के०) सूइ रहुं बुं ! अने (म्झंतं के०) दाऊता. एटले शरीररूपी घरनी साथे बली मरता एवा (अप्पाणं के०) आत्मानी (उवरकयामि के०) उपेक्षा केम करु बुं !!! अर्थात् देहनी साथे रहेला बलता आ-

त्मानी हुं रक्षा केम नथी करतो !! इत्यादि आत्मभावना तुं केम भावतो नथी! ॥३९॥

भावार्थ—शास्त्रने विषे सर्व हत्याउ करतां आत्म हत्या महोटी गणी छे. एटले जाणी जोइने आत्मानुं बगाडवुं, अर्थात् छती सामग्रीए पण आत्मसाधन न करवुं. अने रात्रि दिवस देहादिक परभावमांज रच्युं पच्युं रहेवुं; ते शुं आत्मानी घात करी न कहेवाय? अर्थात् आत्म हत्याज कहेवाय!! माटे बधो रात्रि दिवसतो संसारना वेगमां चढीजतां कांइ पण विचार न आव्यो, पण पाछली च्यार घडी रात्रे उठीने, जरा निर्मल चित्तवालो थइने, बीजा बधा विचार रहेवा देइने, हे आत्मन्! तुं तहारा आत्मानो विचार कर्य. इहां पाछली च्यार घडि रात्रे उठीने विचार करवानुं ग्रंथकार लखे छे, तेनो अभिप्राय ए छे के, जेम स्त्रीयो घंटीये दलवा मांडे छे, पछी दलतां दलतां एटले फेरवतां फेरवतां ते घंटीने एवा वेगमां लावे छे के, ते वखते जो घंटी फेरववी मूकी दे, तोपण वेगना जोरथी ते फेरव्याविना पांच सात आंटा फरी जाय छे, तेम आ जीव पण बधो दिवस संसारना कामनो एवो वेग लगाडे छे के, ते रात्रे लांबो थइने सूए छे, तो पण ते कामनां स्वप्न आवे जाय छे. ते स्वप्न, दिवसे करेला कामना हचरका छे. ते हचरका घणुं करीने पाछली रात्रे शांत पडे छे. माटे ते अव-

सर शुभ ध्यान करवानो शास्त्रकारे जणाव्यो छे. माटे तुं एवो विचार करय के, आ बधा मनुष्यभवना अमूल्य दिवसो धर्म विना फोकट केम गमावुं छुं? अने आ महारुं शरीर पण जरारूपी अग्निनी झालवडे बळवा मांड्युं छे, अने तेनी साथे रहेलो जे आत्मा, ते पण बळवा मांड्यो छे. तो ते आत्माने तुं केम बळवा दे छे? परंतु आत्मज्ञानवडे देहथकी आत्माने जूदो समजीने तुं देहना भाव जे जड, दुःख, अने मिथ्याभाव तेने देहने विषेज समज. अने आत्माना भाव जे सत्, चित् अने आनंदरूप एटले सच्चिदानंदरूप तेने तुं आत्मभावे समज. एटले जे देह छे ते सडी जाय, पडी जाय, यावत् विध्वंस थइ जाय; तेवो छे. अने जे आत्मा छे ते तेथी उलटो छे. एटले सडी जाय तेवो, पडी जाय तेवो, यावत् विध्वंस थइ जाय; तेवो नथी. एवी रीते आत्मानुं अने देहनुं स्वरूप जूदुं समजीने, तें जे देहने विषे मिथ्या अहंपणु मान्युं छे, ते तथा देह संबंधी पदार्थोने विषे मिथ्या ममत्व मानेलो छे, तेने खोटो जाणीने ते बेनो त्याग करवाने विषे प्रयत्नवंत था. ए उपदेश. ॥२ए॥

॥ अनुष्टुप् वृत्तम् ॥

१ ३ २ ६ ४ ५
जाजा वच्चइ रयणी । न सा पडिनियत्तइ ॥
७ ८ १० ११ ९
अहम्मं कुणमाणस्स । अहला जंति राइन ॥४०॥

अर्थ—हे आत्मन् ! (जाजा के०) जे जे (रयणी के०) रात्री (वच्चइ के०) जाय छे, (सा के०) ते ते (पडिनियत्तइ के०) पाछी आवती (न के०) नथी. आ जग्याए दिवस ग्रहण नथी कर्यो, तोपण उपलक्षणथी ग्रहण करवो. एटले गया दिवस पण पाछा आवता नथी. केम के, (अहम्मं के०) अधर्मने (कुणमाणस्स के०) करतो एवो जे तुं, ते तहारी (राइन के०) रात्रीयो जेते (अहला के०) अफल, एटले निष्फल (जंति के०) जाय छे. अर्थात् अधर्मे करीने तहारा मनुष्य नवना रात्री दिवस व्यर्थ जाय छे. ॥४०॥

भावार्थ—आ जीवनो जेटलो वखत धर्म साधन करवामां जाय छे, तेटलोज वखत ज्ञानी पुरुषोए सफल गण्यो छे. अने बाकीनो रात्री दिवसनो जे काल, एटले धर्म साध-

न विनानो जे काळ, ते पशुनी पेठे निष्फळ जाय छे. केम के, पशुने विषे आहार, निद्रा, भय अने मैथुन विगेरे जेवी रीते छे, तेवीज रीते तहारे विषे पण छे. माटे तहारो जन्मारो पण धर्मसाधन विनानो पशु जेवो समजवो. ॥४०॥

जस्स ऽत्थि मच्चुणा सक्खं। जस्स व ऽत्थि पलायणं ॥
जो जाणे न मरिस्सामि। सो हु कंखे सुए सिया ॥४१॥

अर्थ—हे जीव! (जस्स के०) जे पुरुषने (मच्चुणा के०) मृत्यु संगाथे (सक्खं के०) मित्रता (अत्थि के०) छे. (व के०)वळी (जस्स के०) जे पुरुषने (पलायणं के०) मृत्युथी नासी जवुं (अत्थि के०) छे. वळी (जो के०) जे पुरुष (जाणे के०) एम जाणे छे के, (मरिस्सामि के०) हुं मरीश (न के०) नही. (सो के०) ते पुरुष (हु के०) निश्चे (सुए के०) श्वः एटले आवती काले धर्मसाधन करीश, ए प्रकारे (सिया के०) स्यात्. एटले कदाचित् (कंखे के०) आकांक्षा करे. एटले इच्छा करे, अर्थात् ते एवी इच्छा करे, ते प्रमाण छे. परंतु एवी रीते कोई

पुरुषने कोई दिवस पण थयुं नथी के, महारे मृत्युनी साथे मित्रता छे; माटे महारे तो कदि पण मरवुं नही पडे! तथा कोई पुरुषने एम थतुं नथी के, हुं बलवान् छुं माटे, मृत्युथी नाशीने, बचीश. तथा कोइना मनमां एम नथी थतुं के, हुं क्यारे पण नही मरुं, तो पण ते प्राणी धर्म संबंधी कार्यमां शीघ्रता करवाने ठेकाणे आवती काल्ये थशेज तो! एवी रीते प्रमाद, केम करतो हशे.!!! ॥ ४१ ॥

नावार्थ—इहां अनूत उपमा अलंकार वडे करीने उपदेश करे छे. एटले आवी वस्तु कोइ दिवस निपजी नथी, ते कदाचित् जो निपजे, तो ते आश्चर्यकारक कहेवाय. आ जीवना मनमां एम थाय छे के, आजतो धर्मसाधन नही करीए, पण आवती काले करीशुं. पण केम जाएयुं के, तुं आवती काल्य सूधी जीवीश? माटे आवती काले जीववानुं तो कोण मनमां जाणे के, जेने मृत्युनी साथे खरी नाईबंधी होय, एटले ते मृत्युने पोतानी आज्ञामां राखी शकतो होय, तो ते पुरुष कदापि एम धारे के, आजनुं काल्य करीशुं. तो ते युक्त छे. तथा कोई बलवान् पुरुष, मृत्युना ऊपाटामां न आवतां, एवी कोई पर्वतनी गुफामां पेशी जाय के, ते मृत्युना हाथमांज न आवे! जो एवी शक्तिवान् होय, तो ते पुरुष कदापि आज करवानुं काल्य

करीशुं, एम विचारे तो ते युक्त छे. तथा कोइ पुरुषे कोइ केवलज्ञानी महाराजनी पासेथी जाएयुं होय के, हुं तो कोइ काले मरवानोज नथी, तो ते पुरुष कदाचित् एम धारे के, हुं आज करवानुं काल्य करीश, तो ते पण युक्त छे. परंतु उपर लखेली सर्व वातो कोइ काले थई नथी, वर्त्तमान कालमां थती नथी, अने आगामी कालमां थशे पण नही. तोयपण एवी मिथ्या कल्पना मनमां करीने, हे जडबुद्धि जीव! तुं बीजा संसारना कामनो प्रमाद करवो छोडी देइने, फक्त धर्मसाधन करवामां केम प्रमाद करे छे? ॥४१॥

॥ आर्यावृत्तम्.॥

१ २ ८ ११ ५ ६ ७ ९
दंडकलिअं करित्ता । वच्चंति हु राइउ य दिवसा य ॥
३ ४ १० १४ १२ १३
आउस्सं विल्लंता । गयावि न पुणो नियत्तंति ॥४२॥

अर्थ–हे आत्मन्! (दंडकलिअं के०) दंड जेम सूत्रनी कलना (करित्ता के०) करे छे. एटले कोलिआदिक नीच लोको फालका उपर चढेला सूत्रने जेम लांबा दंड वडे

करीने उकेले छे, अर्थात् लूगडु वणावाने माटे लांबो ताणो करवाने अंत्यज लोको फालका उपर चढेला सूत्रने लांबा दंमना लसरका वडे करीने झपाटाबंध उकेले छे, तेम(आउस्सं के०) आउखाने (विल्लंता के०) उकेलता एवा (राइयो के०) रात्रीयो (य के०)अने (दिवसा के०) दिवसो जे ते (वच्चंति के०) जाय छे. (य के०) अने वली (गयावि के०) गया एवा जे दिवसो तथा रात्रीउ, ते (हु के०) निश्चे (पुणो के०) फरीथी (नियत्तंति के०) पाछां आवतां (न के०) नथी. ॥४२॥

भावार्थ—एक काळरूपी चंमाल छे, ते दिवस रात्रीनुं जवं आववुं तेरूप, दंमना लसरकावडे करीने मनुष्यना आउखा रूप सूत्रना पिंमने शीघ्रपणे उकेले छे. एटले आउखाने जलदी घटाडे छे. माटे हे आत्मन्! ते आउखामांथी गयेला रात्री दिवस कदिपण,पाछा आवता नथी. जेम आ ग्रंथ छपावीने प्रसिद्ध थयानी तिथि विक्रम संवत् १९४७ ना कार्त्तिक शुदि ५ (ज्ञान पांचम) ने सोमवार हतो. हवे ते वर्षनी तेज तिथि वार, आखा जन्मारामां फरीथी आववानो नथी, तेम हे भव्य जीवो! आ गएला दिवस रात्रीपण, तेनी पेठे पाछा आववाना नथी. एटले गया ते तो गयाज!! एवुं जाणीने आ धर्मकार्य तो काले करीशुं,

एम नही करतां, ते धर्मध्यान प्रमाद रहितपणे आजज करवुं. ए उपदेश. ॥४२॥

॥ उपजातिवृत्तम्. ॥

२ १ ३ ६ ४ ५ ८ ९ ११ ७ १०

जहे इह सीहो व मियं गहाय। मच्चू नरं णेइ हु अंतकाले ॥

२१ १२ १५ १६ १७ १८ १९ १४ १३ २० २२

न तस्स माया व पिया व भाया। कालंमि तंमि ऽसहरा भवंति ॥४३॥

अर्थ-(इह के०) आ लोकने विषे (जह के०) जेम (सीहो के०) सिंह जे ते (मियं के०) मृग जे तेने (गहाय के०) ग्रहण करीने. एटले पकडीने नाश करे छे. (व के०) व शब्द पादपूर्णार्थे जाणवो. तेम (हु के०) निश्चे (मच्चू के०) मृत्यु जे ते (नरं के०) मनुष्यने (अंतकाले के०)आयुष्य पूरु थये(णेइ के०)लेइ जाय छे.(तस्स के०)ते माणसने (तंमि के०) ते (कालंमि के०) समयने विषे. एटले मरणनी वखतें (माया के०) माता जे ते (व के०)वली (पिया के०) पिता जे ते (व के०)वली(भाया के०)भाई जे ते(अंसहरा के०)अंशमात्र पण धारण करवाने.एटले लगार मात्र पण रक्षण करवाने(न भवंति के०)समर्थ नथी थतां.॥४३॥

भावार्थ—हे जीव! गमे तेवो धीरजवालो मनुष्य होय, तोपण, अंतकाले मरणनी घणी वेदनाथी ते माणस मृग जेवो निर्बल थइ जायछे. त्यारे तेने सिंहरूप काल पकडीने लेइ जाय छे. ते वखते ते मनुष्यनां माता, पिता, भार्या, भाई, इत्यादि कोइपण लगार मात्र राखवा समर्थ थतां नथी! एटले ते गमे तेवो स्नेही होय, अने ते स्नेहवडे करीने तेने राखवाना गमे तेटला उपाय करे, तोपण तेने क्षणमात्र राखी शकतां नथी. ॥४३॥

॥ आर्यावृत्तम्. ॥

१ २ ३ ४
जीअं जलबिंडसमं । संपत्तीउ तरंगलोलाउ ॥
७ ५ ६ ८ ९ १० ११
सुमिणयसमं च पिम्मं । जं जाणसु तं करिज्जासु ॥४४॥

अर्थ—हे आत्मन्! (जीअं के०) जीववुं (जलबिंडसमं के०) जलबिंड जेवुं छे. एटले डाभना अग्रभाग उपर रहेला, जलना बिंड समान चंचल छे. तथा (संपत्तीउ के०) संपत्तियो जे ते (तरंगलोलाउ के०) समुद्रना तरंग जेवी चंचल छे. एटले एक ठेकाणेथी बीजे ठेकाणे शीघ्र जती रहे तेवी छे. (च के०) वली (पिम्मं के०) स्त्रीयादिकनो प्रेम जे ते (सुमि-

णयसमं के०) स्वप्न समान छे. एटले क्षणमां नाश पामे तेवो छे. ते कारण माटे (जं के०) जो (जाणसु के०) ए प्रकारे खरी रीते, जो अंतःकरणथी अस्थिरपणु जाणतो होय, तो (करिज्जासु के०) जाणया प्रमाणे करय. एटले अप्रमादपणे धर्म साधन करय. ॥४४॥

भावार्थ—लोकमां चालतुं घणुं पोपटियु ज्ञान देखीने ग्रंथकार उपदेश करे छे. हवे पोपटियु ज्ञान एटले शुं? जेम कोइ माणसे एक पोपटने भणाव्युं के, बिल्लि (बिलाडी) आवे तो तरत उडी जवुं. एवी रीते शिखव्युं, त्यारपछी ते पोपट पण ते वाक्यनो वारंवार अभ्यास करीने, ते रीते बोलवा लाग्यो. परंतु ते बिचाराने एम खबर नथी के, बिल्लि ते शुं? अने उडी जवुं ते शुं? पछी एक दिवस ते पोपट जेवो पांजरामांथी निकल्यो, तेवोज बिलाडीए झाल्यो. तोयपण ते पोपट पूर्वे शिखवेला वाक्यने बोले जतो हतो, ते वखतेज ते पोपटनी डोकी मरडी नांखी. माटे हे भव्य जीवो! कहो! ते पोपटनुं ज्ञान केवुं कहेवाय? तेम आ सर्वे लोको पण एम बोलेछे के, जीववुं जलना बिंदु जेवुं चंचल छे. एवुं बोले छे तोयपण, जीववाने माटे अनेक प्रकारना न करवा योग्य एवा घणा उपाय करे छे. अने वली एम बोले छे के, आ संपत्तियो पण पाणीना तरंगनी पेठे अस्थिर छे, परंतु तेज संपत्तियोने

राखवाने माटे, सन्मार्गने विषे वापरवामां घणुंज कृपणपणु करे छे, अने वली एम बोले छे के, स्त्रीयादिकनो जे प्रेम छे, ते स्वप्न समान छे, एवी रीते बोले छे, परंतु ते स्त्रीयादिक पदार्थोनो ज्यारे नाश थाय छे, त्यारे खरा अंतःकरणथी लांबे रागे पोको मूकीने रुदन करे छे. माटे हे भव्यप्राणियो! तमे विचारो के, आ ज्ञान केवुं कहीए ? माटे ग्रंथकार एम कहे छे के, जो एम तमे जाणो छो, एटले पूर्वे कहेली त्रण वस्तुने अतिशे जो चंचल जाणो छो, तो पूर्वे कहेला पोपटिया ज्ञानने मूकीने, तमे खरा अंतःकरणथी अनुभव ज्ञान करो. एटले तमारा कह्या प्रमाणे तमे वर्त्तो. अर्थात् ते खोटाने खोटुं जाणीने, अने एक जिनराजना धर्मने साचो जाणीने, तेने विषे उद्यम करो. ॥४४॥

॥ रथोद्धतावृत्तम्. ॥

संझरागजलबुब्बुलवमे । जीविए य जलबिंदुचंचले ॥
जुव्वणे य नइवेगसंनिभे । पावजीव किमि इयं न बुज्झसे ॥४५॥

अर्थ—(संझराग के०) संध्या समयनो रंग, तथा (जलबुब्बु के०) पाणीनो परपोटो

(नुवमे के०)ए बेनी ढे उपमा ते जेने एवुं,(य के०)अने(जलबिंड चंचले के०)डाजना अग्रनाग उपर रहेला पाणीना बिंड जेवुं चंचल एवुं, (जीविए के०) जीवित सते (य के०) वली (नइवेगसंनिन्ने के०) नदीना वेगने तुल्य एवुं, (जुव्वणे के०) यौवन सते (पावजीव के०) हे पाप जीव! (न बुझ्नसे के०) तुं नथी बोध पामतो (इयं के०) ए ते (किं के०) श्युं!! एटले ए ते केटलुं बधुं आश्चर्य ढे !!! ॥४५॥

नावार्थ–आ संसारमां बधी आशान करतां जीववानी आशा घणी महोटी ढे. केम के, आ जीवने ज्यारे ढेल्लीवारे श्वास उपडे ढे, अने डचकां आवे ढे, तोपण हजु हुं जीवीश, हजु हुं जीवीश, एवी आशा रह्या करे ढे. माटे कोइ विद्वान पुरुषनुं आवुं वचन ढे के,

जीर्यंते जीर्णवयसः । पुंसः केशदंतावपि ॥
जीविताशा धनाशा च । कुमारीव विवर्द्धते ॥१॥

अर्थ–जीरण थइ ढे अवस्था ते जेनी, एवा पुरुषना केश तथा दांत जीर्ण थाय ढे. एटले वृद्धावस्थामां मांथाना केश धोला थाय ढे. एटलुंज नहि पण केटलाक नाश पण पामे ढे. अने दांत पण शिथिल थाय ढे. एटलुंज नहि पण पडी जाय ढे. त्यारे पोतानुं ज-

वानीपणु देखाडवाने माटे, मूछोमां ज्यारे पळियां आवे छे, त्यारे तेने खुंटावी नांखे छे. एम करतां ज्यारे वधारे धोळां आवे छे, त्यारे तेने गळेफ चढावे छे. एटले काळारंग वडे रंगे छे. तथा दांत पडी जाय छे, त्यारे जवानीपणु देखाडवाने माटे जनावरना हाडकाना बनावेला दांतनी बत्रीशी मुखमां घलावे छे. एम करीने पराणे पराणे जवानीपणु लाववा जाय छे. तो पण जवानी पाछी आवती नथी. अने न गमतुं एवुं वृद्धपणु प्राप्त थाय छे, त्यारे पण जीववानी आशा तथा धननी आशा, कुमारी कन्यानी पेठे दिन दिन प्रत्ये वृद्धि पामे छे. एटले तेने कोइ डोसो कहीने बोलावे, तो ते वचन मांथु काप्या जेवुं लागे छे. शाथी के, एने जीववानी आशा घणी छे माटे. एटलाज माटे मूल ग्रंथकार घणां दृष्टांत आपी जीवितनुं तथा जवानीपणानुं अतिशे अस्थिरपणु देखाडे छे. के, संध्याकालना लाल, लीला, पीला, चळकादार रंगना जेवुं जीवित जणाय छे. पण ते रंग घडि बे घडिमां नाश पामे छे. एवुं जीवित अस्थिर छे. वळी तेथी वधारे अस्थिरपणु देखाडवाने माटे बीजुं दृष्टांत कहुं छे.के, पाणीना परपोटा जेवुं जीवित अस्थिर छे. एटले ते थोडीवारमां नाश पामे तेवुं छे. तथा तेथी पण डाभना अग्रभाग उपर रहेलुं जल, तेथी पण थोडी वारमां नाश पामे छे, माटे तेना

जेवुं जीवित कह्युं छे. तेमज जवानीपणु नदीना वेग जेवुं चंचल कह्युं. एटले नदीनुं पाणी जे आपणे नजरे जोयुं, तेज पाणी विचारीने जोइए तो, केटले छेटे जतु रह्युं अने आपणे तो जाणीए छीए के, तेनुं तेज आ पाणी छे. तेम क्षणे क्षणे पलटातु जवानीपणु, तेने आपणे जाणीए के, तेनुं तेज छे, परंतु जे गइकाले हतुं, ते जवानीपणु आज नथी. वली जवानी आवतां पहेलां माबाप विगेरे एम जाणे छे के, महारो दीकरो जवान थशे एटले महोटो थशे. एम समजे छे. परंतु वास्तविक रीते विचारीए तो, ते दिवसे दिवसे नहानो थाय छे. केम के, तेणे जेटलुं आयुष्य बांध्युं छे, तेमांथी तेटलो काल उंगे थयो. एज रीतना विपरीत ज्ञानना वेगे चढी जवाथी आ जीव समजतो नथी; माटे ग्रंथकार कहे छे के, हे पापजीव! एटले हे पापरूप थइ गयेला प्राणिन्! आ कह्युं तेवुं अस्थिरपणु देखीने पण तुं हजु केम बूझतो नथी! ॥४५॥

॥ आर्यावृत्तम्. ॥

५ ४ ७ ६ ८ ९

अन्नछ सुआ अन्नछ। गेहिणी परिअणोऽवि अन्नछ॥

३ २ १० १

भूअबलिव कुडुंबं। पक्खित्तं हयकयंतेण ॥४६॥

अर्थ–(हयकयंतेण के०) निंदा करवा जोग्य एवा जे यमराज (मातुं कर्म) तेणे (कुडुंबं के०) आगल कहेशे एवा, सर्व कुटुंबने (नूअबलिव्व के०) नूतने जेम बलिदान आपे. एटले जेम बाकला बुटा बुटा फेंके, तेम (सुआ.के०) पुत्र पुत्रीयोने (अन्नह के०) अन्य गतिने विषे. तेमज (गेहिणी के०) वल्लन्न स्त्रीने पण (अन्नह के०) अन्यगतिने विषे. तेमज (परिअणोऽवि के०) परिजनने. एटले परिवारने पण (अन्नह के०) अन्यगतिने विषे (पक्खित्तं के०) पहोचाड्यां बे. अर्थात् पुत्र, पुत्री, स्त्री, अने परिजनादिक सर्वने जूदी जूदी गतिमां फेंकी दीधां बे. ॥४६॥

नावार्थ–हे आत्मन्! आ संसाररूपी चकडोल उपर चढीने, तुं एम विचार करे बे के, सघलुं कुटुंब महारा नेगु सदायकाल एक स्थितिमां रहे. पण आ सर्व कुटुंबनो महारे कोइ दिवस वियोग पडे नहीं. एवा उपायमां तुं रात्री दिवस मंमेलो बुं. परंतु तुं एम विचार नथी करतो के, जे स्वनावेज अस्थिर वस्तु बे, ते शेंकडो उपाये पण स्थिर थवानी नथी. केम के, जे सर्वे कुटुंबी माणसो बे, ते सर्वेनां कर्म जूदां जूदां बे. परंतु एक रूपे नथी. तेथी करीने पुत्र, पुत्रीयो, स्त्री अने परिवार इत्यादिक पोत पोतानां कर्मानुसारे नाना प्रकारनी गतियो-

मांथी जे रीते आव्यां हतां, तेवी रीते पाछां नाना प्रकारनी गतियोमां चाल्यां जाय छे. ते केवी रीते चाल्यां जायछे? तो के, जेम कोइ भूत देवताने बलिबाकला फेंके छे, ते बलिबाकला पराधीनपणे जूदी जूदी जग्याए जइ पडे छे, तेम आ बिचारा पुत्रादिक कर्माधीनपणाथी अनेक प्रकारनी गतियोमां जइ पडे छे. त्यां, तथा आ भवनां सुख दुःखादिकमां पण, तहारो कोइ उपाय चाली शकवानो नथी. तोपण मिथ्या ममत्व बांधीने, जेम चालता गाडा तले कूतरु चालतुं होय, ते कूतरु एम विचारे के, आ सघलो गाडानो भार हुं खेंचु छुं. तेम तुं पण एम समजे छे के, आ सर्व कुटुंबनुं भरण पोषण पण हुंज करुं छुं. एवो तुं मिथ्या ममत्व करे छे. परंतु एम नथी जाणतो के, सर्वे कर्माधीन छे, तेमां हुं शुं करी शकवानो छुं!! एम विचारीने तेवा खोटा ममत्वने छोडी देइने, कांइकतो आत्मसाधन करवानो अवकाश लाव्य!!॥४६॥

२ ३ ६ ५ ४ १
जीवेण भवेभवे । मिलियाइ देहाइ जाइ संसारे ॥
७ ११ ९ १२ १० ८
ताणं न सागरेहिं । कीरइ संखा अणंतेहिं ॥४७॥

अर्थ—हे आत्मन्! (संसारे के०) संसारने विषे (जीवेण के०) जीव जे तेणे (नवेन्नवे के०) नव नवने विषे (जाइ के०) जे (देहाइ के०) देह (मिल्लियाइ के०) मेलव्यां छे. एटले कर्यां छे (ताणं के०) ते देहनी (अणंतेहिं के०) अनंत एवा (सागरेहिं के०) सागरे करीने. एटले अनंता सागरना पाणीना बिंदुए करीने, अथवा अनंता सागरोपम* काले करीने पण (संखा के०) संख्या जे ते (न के०) नथी (कीरइ के०) करी शकाती. ॥४७॥

नावार्थ—हे प्राणिन्! जे शरीरने अर्थे तुं अनेक प्रकारनां पाप करे छे, ते देहना स्वरूपनो विचार करय के, तें केटलां शरीर करी करीने मूकी दीधां छे? ते देहनी संख्या, अनंता सागरना बिंदुवडे पण थइ शकती नथी. अथवा अनंता सागरोपमना काले करीने पण थइ शकती नथी. केम के, शास्त्रमां कह्युं छे के, जीवे जेटलां शरीरनो त्याग कर्यो छे, तेटला शरीरनो जो ढगलो करीए तो त्रण जुवनमां पण माइ शके नही. केमके, ते शरीर अनंतां छे. ते कारण माटे हे नव्य जीव! तुं एम विचार कस्य के, जगत्मां देह समान कोइ बीजी अशुचि वस्तु प्राये छेज नही. कारण के, गमे तेवी सारी सारी वस्तु होय, ते पण देहना संबंधथी

* आ सागरोपमनुं प्रमाण ग्रंथने अंते जणाव्युं छे.

बगडी जाय छे. जेम सारामां सारां मेवा मिठाइ इत्यादि, देहमां नांखीने तत्काल पाछुं काढीने जोइए, तो तेना सामुं पण जोइ शकातुं नथी. एवुं नठारुं थइ जाय छे. वली गमे एवां अत्तर चंदनादि सुगंधीदार वस्तु,देहनो संबंध पामीने दुर्गंधमय थइ जाय छे. तेमज गमे तेवां सारामां सारां अने बहु मूल्यनां वस्त्र पण,देहना संबंधे करीने मलमलिन थइने गंधाइ उठे छे. एवी अशुचिनुं पात्र आ देह छे.तेवा देहनीज रात्री दिवस ठठवेठ(घणीज सेवा)करवामां काल गमावे छे. तथा ते देहने माटे अधर्म अन्यायादिक करतां पण डरतो नथी. पण तेवा देहतो तें अनंता धारण कर्या, ने मूकी दीधा, जेम शरीर उपर पहेरेलां वस्त्र जुनां थएथी काढी नांखीने नवां धारण करे छे, ए न्याये तें च्यारे गतिमां अनेक प्रकारनां शरीर धारण कर्यां छे.माटे ते शरीर उपरथी मूर्छा उतारीने,जेम अशरीरी थवाय;तेवो उद्यम करय.॥४७॥

६ १ ७. ८ ९

नयणोदयंपि तासिं । सागरसलिलाउ बहुयरं होइ ॥

५ २ ४ ३

गलियं रुअमाणीणं । माऊणं अन्नमन्नाणं ॥४८॥

अर्थ—हे आत्मन् ! (तासिं के०) ते (रुअमाणीणं के०) रडती एवियो ने (अन्नमन्नाणं के०) अपर अपर जन्मने विषे थएलीयो एवी (माऊणं·के०) माताउनुं (गलियं के०) शोकथी निकलतां एवां (नयणोदयंपि के०) नेत्रनां आंसु पण (सागरसलिलाउ के०) समुड्ना पाणी थकी (बहुयरं होइ के०) अतिशे अधिक होय छे. अर्थात् समुड्ना पाणी वडे पण आंसुना जलनुं परिमाण थइ शकतुं नथी. ॥४७॥

जावार्थ—केटलाएक पुरुषो स्त्रीयादिक पदार्थथी वैराग्य पामीने दीक्षा लेवाने तैयार थया होय, परंतु तेउ फक्त माता पितानो घणो स्नेह देखीने अने तेमने रोतां कलकलतां देखीने, तेना प्रणाम पाछा हठी जता जोइने ज्ञानी महाराज तेने उपदेश देवाने अर्थे कहे छे. के, हे जव्य जीव! तुं एक जवना माता पिताने रोतां कलकलतां जोइने दिलगीर केम थाय छे? परंतु विचार करय के, तें कर्मना वशे करीने अनंना जवमां अनंतां माता पिताने, रोतां कलकलतां मूकीने तुं आ जवमां आव्यो छुं. ते माता पिताउनी आंखमांथी निकलतां आंसुनी संख्या करवा बेसीएतो, समुड्ना पाणीथकी पण अतिशे अधिक थाय छे. त्यारे हवे तुं कियां माता पिताने संतोष पमाडीश? माटे वस्तुताये विचार करय के, आत्मानी माता

कोण छे? पिता कोण छे? अर्थात् आत्मानां माता पिता छेज नही. एवुं विचारीने साहसिकपणे धर्म साधन करवु. ॥ ४८ ॥

३ १ २ ५ ६ ४
जं नरए नेरइया । डुहाइ पावंति घोरणंताइ ॥
७ ९ ८ १० ११
तत्तो अणंतगुणियं । निगोअमझे डुहं होइ ॥४९॥

अर्थ—(नरए के०) नरकने विषे (नेरइया के०) नारकी जे ते (जं के०) जे (घोरणंताइ के०) महा घोर, ने अनंतां एवां (डुहाइ के०) डुःखने (पावंति के०) पामे छे. (तत्तो के०) ते थकी (निगोअमझे के०) निगोद मध्यने विषे (अणंतगुणियं के०) अनंत गुणु (डुहं के०) डुःख जे ते (होइ के०) होय छे. अर्थात् नरकना डुःखथी पण निगोदने विषे अनंतगुणु डुःख होय छे ॥ ४९ ॥

३ ५ ४ ८ १ २

तंमि वि निगोअमझ्मे । वसिउ रेजीव.विविहकम्मवसा ॥

८ ७ ६

विसहंतो तिख्खडुहं । *अणंतपुग्गलपरावत्ते ॥५०॥

अर्थ—(रे जीव के०) हे जीव! (विविहकम्मवसा के०) नाना प्रकारना कर्मनेवशे करीने (तंमि के०) ते (निगोअमझ्मे के०) निगोदनी मध्ये (वि के०) पण (अणंतपुग्गल-परावत्ते के०) अनंत पुद्गल परावर्त्त काल सूधी एटले अनंता सूक्ष्म क्षेत्र पुद्गल परावर्त्त काल पर्यंत, तुं (तिख्खडुहं के०) तीक्ष्ण दुःखने (विसहंतो के०) सहन करतो सतो (वसिउ के०) रह्यो छुं. ॥ ५० ॥

भावार्थ—नारकीना दुःखनुं वर्णन घणा सिद्धांतोमां प्रसिद्ध छे. तथा निगोदनुं स्वरूप निगोद छत्रीशी विगेरे प्रकरणथी जाणवुं. परंतु ते दुःखना वर्णनने इहां दिश मात्र देखाडीए छीए. इहां नारकीना दुःखथी निगोदनुं दुःख अनंतगुण शयाथी कह्युं? ते कहीए छीए.

* पुद्गलपरावर्त्तनुं स्वरूप आगल कहीशुं.

वै० दृष्टांत–सातमी नरकमां उत्कृष्टायु तेत्रीश सागरोपमनुं छे, ते तेत्रीश सागरोपमना जेटला श०
६० समय थाय, तेटलीवार, कोइ जीव सातमी नरकमां पूर्ण तेत्रीश तेत्रीश सागरोपमने आ-
उखे उपजे, त्यारे तेने असंख्याता भव नरकना थाय, ते असंख्याता भवमां सातमी नरक-
ने विषे, ते जीवने जेटलुं छेदन भेदननुं दुःख थाय, ते सर्वे दुःख एकतुं करीए, तेथी पण
अनंतगुण दुःख निगोदीया जीव एक समयमां भोगवे छे. वळी एक औदारिक शरीरमां
अनंता जीव भेगा रहे छे. ते भेगा शी रीते रहे छे? ते जणावीए छीए. एक सूइना अग्र-
भाग उपर रहे तेटली कंदमूळनी कळी होय, तेमां असंख्याती श्रेणी रहे छे. ते एकेकी
श्रेणीमां असंख्याता प्रतर छे. ते एकेका प्रतरमां असंख्याता गोळा छे. ते एकेका गो-
ळामां असंख्यातां शरीर छे. ते एकेका शरीरमां अनंता जीव छे. एवी रीते निगोदना जी-
वने रहेवानुं स्थान घणुं सांकडुं छे. ते उपर एक स्थूल दृष्टांत कहीए छीए. जेम कोइ लाख
औषधियोने भेगी करीने तेने घणा दिवस सूधी खलमां घुंटावीने, पछी तेनी राइना दाणा
जेवडी गोळीयो वाळी, तेमां जे रीते लाख औषधियोनो समावेश थयो, ते रीते एक शरी-
रमां अनंता जीव रहेला छे. ते निगोदना जीव, एक मुहूर्त्तमां पांसठहजार पांचशेंने छत्रीश ६०

नव करे, अने एक श्वासोच्छ्वासमां सत्तरथी कांइक अधिक नव करे छे. एवी रीते निगोदमां जन्म मरणनां दुःख छे. के, ते दुःखनी उपमाज नथी! ते आश्चर्यीने निगोदने विषे नरकनां दुःखथी अनंतगुणु दुःख श्री वीतरागे कह्युं छे. ॥४९॥–तेवा दुःखने आ जीवे ज्ञानावरणादिक कर्मना वश थकी अनंतीवार नोगव्यां छे. माटे हवेथी तेवां दुःखो न नोगववां पडे, तेवा उद्यममां तत्पर थवुं. ॥५०॥

४ २ ३ ६ ५ १

निहरीअ कहवि तत्तो । पत्तो मणुअत्तणंपि रेजीव ॥

७ ९ १० ८

तहवि जिणवरधम्मो । पत्तो चिंतामणिसरिछो ॥५१॥

अर्थ–(रे जीव के०) हे जीव! तुं (कहवि के०) कोइ महा कष्टे करीने पण (तत्तो के०) ते निगोदथकी (निहरीअ के०) निकलीने (मणुअत्तणंपि के०) मनुष्यपणाने (पत्तो के०) पाम्यो छुं. (तहवि के०) तेमां पण (चिंतामणिसरिछो के०) चिंतामणि रत्न सरखो (जिणवरधम्मो के०) जिनवरनो धर्म जे ते (पत्तो के०) प्राप्त थयो छे. ॥५१॥

भावार्थ–हे आत्मन्! तुं अनेक प्रकारनी अकाम निर्ज्जराए करीने तथा निगोदनी भवस्थिति पुरी करीने अने महाकष्टे करीने, महादुर्लभ एवा मनुष्य भवने पाम्यो. तेमां पण सकल वांछाने पूरण करनार माटे चिंतामणी रत्नसमान श्री जिनधर्म, तेने तुं पाम्यो छुं. एटले तुं जे जे सुखनी इच्छा करीश, ते ते सुखनी प्राप्ति आ धर्म वडेज मळशे. एवा धर्मने पामीने विषय कषायने घटाडवानो दिन दिन प्रत्ये उद्यम करज. के, जेथी मनुष्य भव अने जिनधर्म ए बे पामवानुं सफलपणुं थाय. ॥५१॥

३ २ १ १४ १२ ४ ११ १३
पत्तेवि तंमि रेजीव । कुणसि पमायं तुमं तयं चेव ॥
५ ७ ६ ८ ९ १०
जेणं भवंधकूवे । पुणोवि पडिओ दुहं लहसि ॥५२॥

अर्थ–(रे जीव के०) हे जीव! (तंमि के०) ते जिनराजनो धर्म (पत्तेवि के०) पामे सते पण (तुमं के०) तुं (जेणं के०) जेणे करीने (पुणोवि के०) फरीथी पण (भवंधकूवे के०) संसाररूप कूवाने विषे (पडिओ के०) पड्यो सतो (दुहं के०) दुःखने (लहसि के०) पामे

(तयं के०) ते प्रकारना एटले संसाररूप अंध कूवामां फरीथी नांखे एवा (पमायं के०) प्रमादने एटले निद्रा विकथादिकने (चेव के०) निश्चे (कुणसि के०) केम करे छे ? ॥५२॥

भावार्थ–हे आत्मन् ! तुं जिनराजनो धर्म पाम्या पछी निश्चे अने व्यवहार ए बे प्रकारे ते धर्मनुं करवुं, ते मूकी दइने. उलटो तेने बदले जेथी फरीथी पण संसाररूप आंधला कूवामां पडाय, एवा निद्रा विकथादिक प्रमादने केम सेवे छे ? केम के, मनुष्यनो भव, अने श्रीजिनधर्मनी प्राप्ति,ए बेनो योग मळवो तो चिंतामणी रत्ननी पेठे महा दुर्लभ छे.॥५२॥

३ २ ६ ५ ४

लद्धो जिणधम्मो । नय अणुचिन्नो पमायदोसेणं ॥

७ १ ९ ८ ११ १० १२

हा जीव अप्पवेरि अ । सुबहुं परउ विसूरिहिसि ॥५३॥

अर्थ–(जीव के०) हे जीव ! तें दैवयोगथी (जिणधम्मो के०) जिनधर्म जे ते (लद्धो के०) पाम्यो. परंतु (पमायदोसेणं के०) आलस्यादिक दोषे करीने (अणुचिन्नो के०) सेव्यो (नय के०) नथी. (हा के०) आ घणी खेदकारक वार्त्ता छे. (अ के०) वळी (अप्प-

'वेरि के०) हे आत्मांना वैरिन्! (परत्त के०) परलोकने विषे तुं (सुबहुं के०) अतिशे घणो (विसूरिहिसि के०) खेद पामीश. अर्थात् घणोज पश्चात्ताप करीश. ॥५३॥

भावार्थ—हे आत्मन्! सर्व सुखनी प्राप्तिनुं कारण एवा जैनधर्मने पामीने, केवल प्रमाद दोषथीज, ते धर्मनुं सेवन; तें कर्युं नही. माटे तुं तहारी मेलेज तहारा आत्मानो महोटो शत्रु थयो. एटले आत्मानी हत्या करनारो थयो· माटे तुं मरण पामीने परलोकमां शशिप्रभराजानीपेठे घणोज शोक करीश.॥५३॥ते शशिप्रभराजानी कथा नीचे प्रमाणे जाणवी.

कथा. ६

सावत्थी नगरीने विषे शूरप्रभ, अने शशिप्रभ एवे नामे बे भाई राज्य भोगवता हता. तेवामां एकदा समयने विषे, ज्ञानी गुरु श्री धर्मघोषसूरि नगरीनी बहार उद्यानने विषे पधारया. वनपालके जइ राजाने वधामणी दीधी. राजाये वनपालकने घणुं द्रव्य आप्युं. पछी बे बांधव, श्री गुरु पासे गया. त्यां विधि पूर्वक वंदन करी उचित स्थानके बेठा. गुरुए पण अवसर जाणी धर्मदेशना दीधी जेम के,

॥ शिखरिणीवृत्तम् ॥

सदापायः कायः, प्रणयिषु सुखं स्थैर्यविमुखं ।
महारोगा भोगाः, कुवलयदृशः सर्पसदृशः ॥

गृहावेशः क्लेशः, प्रकृतिचपला श्रीरपि खला ।
यमः स्वैरी वैरी, परमिह हितं कर्त्तुमुचितम् ॥१॥

अर्थ--आ शरीर निरंतर अपायरूप छे. एटले कष्टरूप, दोषरूप, अने पापरूप एवुं महामलिन आ शरीर छे. तथा स्नेहिनुं सुख पण अस्थिर छे. एटले स्थिरताये करीने रहित छे. अर्थात् ते क्षण मात्रमां स्नेही पण थाय छे, अने तेज स्नेही क्षणमात्रमां वैरी पण थाय छे, अने विषय भोग जे ते, महा रोगरूप छे. एटले विषय भोगथी अनेक प्रकारना, रोग उत्पन्न थाय छे. अने स्त्रीयो जे ते, सर्प समान छे. एटले जेम सर्प करडे, ने झेर चढे, ने प्राणनो नाश थाय, तेम स्त्रीना संसर्गथी विकार उत्पन्न थाय छे. अने तेथी अनेकवार जन्म मरण थाय छे. माटे जे गृहस्थाश्रममां रहेवुं, ते केवल क्लेशरूप छे. अर्थात् उंटना उपर बेसवा जेवो गृहस्थाश्रम छे. एटले जेम उंटनां अढारे वांकां होय छे, तेम गृहस्थाश्रम वालाने अनेक प्रकारनां वांकां आवी पडे छे. पण कोइ वातनुं पांशरुं पडतुं नथी. एटले गमे तेवी कठण कम्मर बांधीने दृढपणे, उंट उपर बेठो होय, तोपण ते पुरुष हाल्या विना रहे नही. तेम सुझे तेवो खबरदार, संसारमां कहेवातो होय तोपण तेने कोइ प्रकारनुं लांछन (पाप) लाग्या विना रहे नही. अने लक्ष्मी पण स्वभावे चंचल छे. अने खल छे. एटले छेतरनारी छे. अने वैरी एवो काल जे ते, स्वेच्छाचारी छे. एटले पोतानी मरजीमां आवे ते वखते जीवने पकडीने लेइ जाय छे. माटे आ भवमां उत्कृष्ट आत्मानुं हित करवुं घटे छे. एटले परलोकमां हितकारी एवुं धर्मसाधन करवुंज योग्य छे ॥१॥

इत्यादि धर्मदेशना सांभली बन्ने भाइ घेर आव्या. घेर आवीने शूरभद्र, पोताना भाइ शशिभद्र प्रत्ये कहेतो हवो. हे भाइ! म्हारे राज्यनो खप नथी. त्यारे शशिभद्रे कह्युं के, श्यामाटे तहारे राज्यनो खप नथी? त्यारे

शूरप्रभे कह्युं. भाई! राज्यने छेडे नरक पामीए. माटे महारे राज्यनो सर्वथा प्रकारे खप नथी. त्यारे शशिप्रभे कह्युं. हे भाई! मनुष्य भव पामीने एटले शुं करवा गमावे छे? ए सर्वे बालकने बिहामणरूप करी मूक्युं छे. माटे खाउ, पीउ, वावरो, काया बालवाथी हाथमां शुं आवशे? कोण जाणे परलोक छे के, नथी! अने प्रत्यक्ष सुख मूकीने परोक्ष सुखने शुं करवा वांछे छे. माटे हे भाई! महारुं कहेण मानीने आ राज्य भोगवो, परंतु उतावला थइने जो संसार मूकशो, तो पछीथी घणोज पश्चात्ताप करशो! अने वली पछी तमे कहेशो के, भाईए कह्युं नहोतुं. माटे हालमां संसारिक सुख भोगवीने पछी वृद्धावस्थामां संयम लेज्यो. एवी रीते शशिप्रभे कह्युं. त्यारे शूरप्रभ कहेतो हवो. अरे भाई! ए तमे शुं कह्युं! ॥ धर्मस्य त्वरिता गतिः ॥ एटले धर्मनो प्रमाद मूकीने जलदीथीज करवो. माटे आ राज्य ल्यो. एवी रीते कहीने बलात्कारे पोताना भाईने राज्य आपी शूरप्रभ राजाये श्रीगुरु पासे जइ दीक्षा लीधी. पछी घणां तप जप करी अंते अनशन करी, समाधि सहित काल करीने पांचमा ब्रह्मदेवलोकने विषे देवतापणे उपन्यो. हवे शशिप्रभ राजा राज्य भोगवी, सात व्यसन* सेवी मरीने त्रिजी नरकने विषे नारकीपणे उपन्यो. हवे शूरप्रभ देवताये अवधिज्ञानना बले करी जोयुं, त्यारे पोताना भाई शशिप्रभने त्रिजी नरकने विषे दीठो. देखीने विचार्युं के, एणे महारुं कहेण न मान्युं, माटे नारकी थयो, ने घणुं दुःख भोगवे छे. तोपण हुं तेनु दुःख टालुं. एम धारी ते देवता मोहनो लीधो नरकावासामां आव्यो. आवीने पोताना भाईने घणो घणो ताणवा मांड्यो, तेम तेम ते घणीज वेदना पामवा ला-

*१ जुगटुं. २ मांसभक्षण. ३ सुरापान. ४ वेश्यागमन. ५ आहेडिकर्म. (मृगयाकरवी) ६ चोरीकरवी. ७ परस्त्रीसेववी.

ग्यो. पछी देवता कहे के, ज्ञाइ! तें महारुं कहेण न मान्युं, भूंडा में तने घणुंए कह्युं हतुं. तोपण तुं समज्यो नही. माटे हवे शुं करीश! त्यारे ते नारकी कहे, हे ज्ञाई! हवे शुं करुं? पछी शूरप्रज्ञ देव, परमाधर्मिने ज्ञलामण देइ पाछो देवलोके गयो. शशिप्रज्ञ घणोज पश्चात्ताप पाम्यो. पण ते पश्चात्ताप कांइ काम आव्यो नही. तेम जे प्राणी चिंतामणी रत्न समान मनुष्य ज्ञव पामीने जिन धर्म नही करे, ते प्राणी शशिप्रज्ञ राजानी पेठे महा शोचनाने पामशे!! अने जे प्राणी शूरप्रज्ञ राजानी पेठे प्रमाद मूकीने, जल्दीथी धर्म साधन करशे, ते प्राणी मोक्ष देवलोकनां सुख पांमशे. एवुं जाणी, प्रमाद मूकीने धर्म साधन करवो. ए उपदेश.

११ ६ ७ १० ए ७

सोअंति ते वराया। पछा समुवछियंमि मरणंमि ॥

२ ४ ५ १ ३

पावपमायवसेणं। न संचियो जेहिं जिणधम्मो ॥७४॥

अर्थ–(जेहिं के०) जेमणे (पावपमायवसेणं के०) पापरूप प्रमादना वश करीने (जिणधम्मो के०) जिनधर्म जे ते (न संचियो के०) पोताना आत्माने विषे नथी संचय कर्यो. अर्थात् पोताना आत्मामां जिनधर्म बरोबर उसाव्यो नथी. (ते के०) तेवा (वराया के०) रांक पुरुषो जे ते. एटले अज्ञान कष्टने करनारा पुरुषो जे ते (मरणंमि के०) मरण (समुवछि-

यंमि के०) प्राप्त थए संते (पच्छा के०) पछी (सोअंति के०) शोक करे छे. के, अरेरे! आपणे कांइ पण धर्म साधन कर्या विना परलोकने विषे क्यांथी सुखी थइशुं!! इत्यादिक घणो-ज पश्चात्ताप करे छे. ॥५४॥

भावार्थ–हे जीव ! जेवी जोइए तेवी तने धर्मसाधन करवानी सामग्री मली, तोपण कुगुरुना उपदेशथी जिनआज्ञा रहित अनेक प्रकारनां अज्ञान कष्ट करी, आ लोक तथा परलोक ए प्रकारे बे लोकनुं सुख हारी गयो. केम के, लोकमां मनावा पूजावाना अहंकारथी, समज्या विना अज्ञान कष्ट कर्यां, तेथी परलोकमां तने घणोज पश्चात्ताप थशे. माटे थोडुं पण जिनआणा सहित धर्मसाधन करवामां प्रमाद रहित था. अर्थात् * पांच प्रकारना प्रमादना वशथी विराम पामीने जलदीथी धर्मसाधन कर्य. ॥५४॥

११ १० २ ३ १ ४ ५
धीधीधी संसारं । देवो मरिऊण जं तिरी होई ॥
७ ६ ९ ८
मरिऊण रायराया । परिपच्चइ निरयजालाए ॥५५॥

* १ मद. २ विषय. ३ कषाय. ४ निद्रा. अने ५ विकथा.

अर्थ-(जं के०) जे कारण माटे (देवो के०) देव जे ते (मरिऊण के०) मरण पामीने तिरी के०) तिर्यंच (होई के०) थाय छे. अर्थात् देवता मरीने तिर्यंचमां तथा पृथ्वीआदिकमां उत्पन्न थाय छे! अने (रायराया के०) राजाना पण राजा जे चक्रवर्त्ती, ते (मरिऊण के०) मरण पामीने (निरय जालाए के०) नरकनी जालावडे करीने (परिपच्चइ के०) अतिशे पचाय छे! माटे (संसारं के०) ते संसारने (धी धी धी के०) धिक्कार थाउ! धिक्कार थाउ!! धिधिक्कार थाउ!!! इहां अतिशे धिक्कार जणाववाने माटे त्रण वखत धिक्कार कह्यो छे. ॥५५॥

भावार्थ-कोइने एकवार धिक्कार! कोइने बे वार धिक्कार!! पण आ संसारने तो त्रण वार धिक्कार कह्यो. तेनुं कारण ए छे के, देवता सरखा महा ऋध्धिवंत पण, मरीने तिर्यंच गतिने विषे अथवा पृथ्वीआदिकमां जड पाषाणपणे उत्पन्न थाय छे! आ शुं थोडुं आश्चर्य छे!! तथा छ खंमना भोक्ता, तथा चोसठ हजार स्त्रीयोना पति, तथा चोराशी लाख हाथी, चोराशी लाख घोडा, चोराशी लाख रथ, अने छन्नुक्रोड पायदल, वली नव निधान, अने चौदरत्न तथा सोल हजार जक्ष तथा बत्रीस हजार मुकुटबंध राजा इत्यादिक, रात्री दिवस जेनी सेवामां रह्या छे. एवा चक्रवर्त्ती राजा पण मरीने नरकनी ज्वालामां उत्पन्न थाय छे!!

त्यां ते चक्रवर्त्तिने परमाधर्मी, महा वेदना उपजावे छे. अहो! हो!! आ ते शुं थोडी आ-
श्चर्यकारक वार्त्ता छे!!! ॥५५॥

१० १ २ ७ ८ ९ ६
जाइ अणाहो जीवो । दुम्मस पुप्फं व कम्मवायहउ ॥
३ ४ ५
धणधन्नाहरणाइं । घरसयणकुडुंब मिल्लेवि ॥५६॥

अर्थ-(अणाहो के०) अनाथ एवो, (जीवो के०) जीव जे ते (धणधन्नाहरणाइं के०) धन, धान्य, अने आभरणोने तथा (घरसयण कुडुंब के०) घर, स्वजन, अने कुटुंब जे तेमने (मिल्लेवि के०) मूकीने पण (कम्म वाय हउ के०) कर्मरूप वायुए करीने हणायो सतो (दु-म्मस के०) वृक्षना (पुप्फं व के०) पुष्पनी पेठे (जाइ के०) जाय छे. अर्थात् हेठे पडे छे. ॥५६॥

भावार्थ-जेम वायुथी पराधीन थएलुं पुष्प, थोडी वारमां नीचे पडी जाय छे, तेम आ जीव पण कर्मे प्रेर्यो सतो धन, धान्य, कुटुंब परिवार, घर हाट, हवेली अने महोटी म-होटी ईमारतो, तथा सारां सारां घरेणां इत्यादिक साह्यबी मूकीने, अनाथ एटले रांक

जेवो थइने, नरकादिक डुर्गतिने विषे जाय ढे. त्यां गया पढी पूर्वे कहेली कोइ पण वस्तु ते जीवने खप लागती नथी. माटे हे जीव! परिणामे जे वस्तु तहारी साथे नथी आवती, तेवी वस्तु उपरथी मोह ममत्वनो त्याग करीने, जे परजवने विषे साथें आवीने सुख करे ढे, तेवा ज्ञान दर्शन चारित्रादिक धर्मनुं आराधन करय. ॥५६॥

४ ३ ६ ५ ८ ७

वसियं गिरीसु वसियं । दरीसु वसियं समुद्दमप्रंमि ॥

१० ९ ११ १ २

रुक्खग्गेसु य वसियं । संसारे संसरंतेणं ॥५७॥

अर्थ–हे आत्मन्! (संसारे के०)संसारने विषे(संसरंतेणं के०)पर्यटन करतो एवो जे तुं, तेणे (गिरीसु के०) पर्वतोने विषे(वसियं के०)निवास कर्यो ढे. तथा (दरीसु के०) पर्वतोनी गुफाने विषे पण (वसियं के०) निवास कर्यो ढे. तथा (समुद्दमप्रंमि के०) समुद्रनी मध्ये (वसियं के०) निवास कर्यो ढे. (य के०) वली क्यारेक (रुक्खग्गेसु के०) वृक्षना अग्रने विषे (वसियं के०) निवास कर्यो ढे. अर्थात् पूर्वे कहेला सर्व स्थानकोमां तुं अनंतीवार निवा-

स करा आव्यो छुं. माटे तहारुं निवास स्थान एक ठेकाणे नथी. ॥५७॥

भावार्थ—कोइ शिष्यने पोताना देशनुं, तथा पोताना गामनुं, तथा पोताने रहेवानी ईमारतनुं; तथा पोतानी उत्तम जातिनुं, तथा पोताना प्रसिद्ध कुलनुं, तथा पोताना उत्तम वर्णनुं इत्यादिक अभिमानने धारण करतो जोइने, गुरु उपदेश करे छे. के, हे शिष्य ! तुं मिथ्या अभिमान शुं करवा करे छे ? परंतु तुं विचार करय के, आ संसारमां भ्रमण करतां केटलीएक वखत तुं पर्वतने विषे पत्थररूपे थइ आव्यो छुं. तथा केटलीएक वखत पर्वतनी गुफामां पण सिंहादिक पशुरूपे थइ आव्यो छुं. तथा केटलीएक वखत समुद्रने विषे जलजंतु रूपे थइ आव्यो छुं. तथा केटलीएक वखते वृक्षोना अग्रभागमां कागडा प्रमुख पक्षिरूपे निवास करी आव्यो छुं. इत्यादिक घणीक जग्याए निवास करी आव्यो छुं. माटे तहारुं कीयुं एक निवास स्थल छे? अर्थात् एक पण ठेकाणे निवास करवाना स्थाननो तहारो निश्चय नथी. तोपण महारुं महारुं करीने मिथ्या अभिमान शुं करवा करे छे? ॥५७॥

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९
देवो नेरइउ त्ति य । कीड पयंगु त्ति माणुसो एसो ॥
१० ११ १२ १४ १५ १३
रूवस्सी य विरूवो । सुहन्नागी डुक्खन्नागी य ॥५८॥

अर्थ—हे जीव! तुं केटलीएक वखत (देवो के०) देव थयो बुं. तथा (नेरइउ त्ति के०) केटलीएक वखत नारकी ए प्रकारे थयो बुं. (य के०) वली (कीड के०) केटलीएक व-खत क्रमियादिक कीडो थयो बुं. तथा (पयंगु त्ति के०) केटलीएक वखत पतंगियो ए प्रकारे थयो बुं. वली (माणुसो के०) केटलीएक वखत मनुष्य थयो बुं. वली (एसो के०) एज तुं (रूवस्सी के०) केटलीएक वखत रूपवंत थयो बुं. (य के०) वली एज तुं (विरूवो के०) केटलीएक वखत कुरूपवंत थयो बुं. (य के०) वली (सुहन्नागी के०) केटलीएक वखत सु-खनो न्नोगवनारो थयो बुं. अने वली (डुक्खन्नागी के०) केटलीएक वखत डुःखनो न्नोगव-नारो पण थयो बुं ॥५८॥

न्नावार्थ—आ जीवे नटवानी पेठे जूदा जूदा रूपे करीने आ संसाररूपी रंगन्नूमिमां

अनेक प्रकारनां नाटक कर्यां छे. जेम के, कोइक वखत देवतानो वेश नजव्यो, त्यारे एवुं विचार्युं के, जगत्मां म्हारा जेंवो कोइ सुखीयो नथी. तथा कोइक वखत नारकीनो वेश नजव्यो, त्यारे एवुं विचार्युं के, जगत्मां महारा जेवो कोइ दुःखीयो नथी. तथा कोइक वखत तिर्यंचनो वेश नजव्यो, त्यारे एवुं विचार्युं के, जगत्मां महारा जेवुं कोइने पराधीनपणानुं दुःख नथी. वळी कोइक वखत मनुष्यनो वेश नजव्यो, त्यारे एवुं विचार्युं के, जगत्मां कोइ महारा जेवो श्रेष्ठ बुद्धिवाळो नथी. एमज कोइक वखत पोताना पुद्गलना रूपनो अहंकार कर्यो, के, महारा जेवो जगत्मां कोइ रूपाळो नथी. तथा ज्यारे कुरूपवान थयो, त्यारे एवुं विचार्युं के, महारा जेवो जगत्मां कोइ कुरूपवान नथी. एम मांकडानी पेठे कोइ वखत सुखी थइने नाच्यो, अने कोइ वखत दुःखी थइने नाच्यो. माटे हे आत्मन्! ए सर्वे वेशने असत्य जाणीने, फरीथी तेवा वेश धारण करवा पडे नहीं. तेवो उद्यम करय.॥५७॥

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८

राउत्ति य दमगुत्ति य। एस सवागुत्ति एस वेयवित्ति ॥

९ १० ११ १२ १३ १४

सामी दासो पुज्जो। खलोत्ति अधणो धणवइत्ति ॥५८॥

४ १ २ ३ ५

नवि इह कोइ निअमो । सकम्मविणिविठसरिसकयचिठो ॥

७ ६ ए ८

अन्नुन्नरूववेसो । नडुव्व परिअत्तए जीवो ॥६०॥ युग्मम् ॥

अर्थ—हे जीव ! तुं केटलीएक वखत (राउ त्ति के०) राजा ए प्रकारे थयो. (य के०) वली (दमगु त्ति के०) नीखारी ए प्रकारे थयो. (य के०) वली (एस के०) एज तुं (सवागु त्ति के०) चंमाल ए प्रकारे थयो. वली (एस के०) एज तुं (वेयविऊ के०) वेदनो जाण थयो. वली (सामी के०) स्वामी थयो. अने (दासो के०) दास थयो. (पुज्जो के०) पूज्य थयो. अने (खलो त्ति के०) खल ए प्रकारे थयो. वली (अधणो के०) निर्धन थयो. अने (धणवइ त्ति के०) धनपति ए प्रकारे थयो. ॥५ए॥—(इह के०) एमां. एटले पूर्वे कह्युं तेमां (कोइ के०) कोइ प्रकारनो (निअमो के०) नियम जे ते (नवि के०) नथीज. केम के, (सकम्म के०) पोताना ज्ञानावरणीआदिक जे कर्म, तेनी (विणिविठ के०) विनिवेश एटले प्रकृति, स्थिति, अनुनाग, अने प्रदेश ते रूप जे रचना, तेना (सरिस के०) सरखी (कयचिठो के०)

करी बे चेष्टा ते जेणे. एटले देवादिक पर्याय रूपनो अध्यास (आश्रय)रूप व्यापार ते जेणे एवो सतो (नडुव के०) नटनी पेठे (अन्नुन्न के०) अन्य अन्य बे (रूववेसो के०) रूप अने वेश ते जेनो एवो (जीवो के०) जीव जे ते (परिब्भमए के०) पर्यटन करे बे. ॥६०॥

नावार्थ—हे आत्मन्! तुं चौदराज लोकरूप चौटामां, राजा प्रजादिकरूपे स्त्री पुरुषोना वेश लेइने, नटुआनी पेठे अनेक प्रकारे निष्फल नाच्यो. पण तेमांथी तने कोइ प्रकारनो अविनाशी सरपाव मल्यो नही. उलटो च्यार गतिमां भ्रमण करवा रूप सरपाव मल्यो. तोपण ते भ्रमण करवाना अभ्यास थकी, निवृत्ति पामतो नथी. जेम कोइ अफिण प्रमुखनो व्यसनी होय, ते व्यसनी ते अफिणने एम जाणे बे के, आ अफिण खावाथी घणा माणसोनां जीवनां जोखम थाय बे, तथा ते खातां पण कडवुं झेर जेवुं लागे बे. तथा देखातुं पण काला ठीकरा जेवुं खराब देखाय बे. अने तेनी सुगंध पण अत्तर चंदन जेवी उत्तम नथी. तथा तेना (अफिणना) खावाथी लोकमां पण आबरु इजतनो घटाडो देखाय बे. तथा ते खावाथी कांइ उत्तम रसायण जेवो गुण नथी थतो, एटलुंज नही, परंतु शरीर पण खराब थतुं देखाय बे. वली ते अफिण न मलवाथी कांइ वखत टांटिया घशीने मरवा

वखत पण आवे छे. इत्यादिक अफिणना अनेक प्रकारना अवगुण जाणे छे, देखे छे, अने अनुभवे छे; तो पण तेने मूकी शकतो नथी. तेनु कारण कांइ अभ्यास अने कुसंगविना बीजुं जणातुं नथी. तेम आ जीवने पण अनादिकाळना अभ्यासथी तथा विषयी जीवोनी सोबतथी, आ पंच प्रकारनां विषय सुखमां दुःख छे. एम जाणे छे, देखे छे, तथा अनुभवे छे, तोपण अफिणना व्यसननी पेठे सारुं मानी बेठो छे. तेथी एने अनेक प्रकारनां नीचां ऊंचां रूप करी आ संसारने विषे नाटक करवुं पडे छे. वळी शास्त्रमां कह्युं छे के,—

॥ अनुष्टुप वृत्तम्. ॥

अवमानात्परिभ्रंशाद्वधबन्धधनक्षयात् ॥
प्राप्ता रोगाश्च शोकाश्च जात्यन्तरशतेष्वपि ॥१॥

अर्थ—अपमानथी, तथा ऊंची पदवीथी पडवाथी, तथा वध बंध अने धननो क्षय ते थकी शैकडो जातिमां रोग ने शोक, आ जीवे भोगव्या छे ॥ १ ॥ आ अधिकार संबंधी श्री आचारांगजी सूत्रमां विशेष प्रकारे कह्युं छे, त्यांथी जोइ लेवुं. ॥५९॥६०॥

३ ३ ४ ५

नरएसु वेअणाउ । अणोवमाउ असायबहुलाउ ॥

१ २ ए ७ ६

रेजीव तए पत्ता । अणंतखुत्तो बहुविहाउ ॥६१॥

अर्थ—(रे जीव के०) हे जीव ! (तए के०) तें (नरएसु के०) रत्नप्रभादिक सात नरकने विषे (अणोवमाउ के०) उपमा रहित एवीयो (असायबहुलाउ के०) डुःखे करीने भरेली एवीयो, एटले अशाता वेदनीय कर्मथी उत्पन्न थएली एवीयो, अने (बहुविहाउ के०) बहु प्रकारनी (वेअणाउ के०) वेदनाउ जे ते (अणंतखुत्तो के०) अनंतीवार (पत्ता के०) पामी छे. अर्थात् तु भोगवी चूक्यो हुं. ॥६१॥

भावार्थ—हे आत्मन् ! तें बीजी गतियोमां तो अनेक प्रकारनां डुःख भोगव्यां, परंतु रत्नप्रभादिक नरकोनां डुःखतो कही शकाय तेवां छेज नही ! केम के, तेने विषे अनंती शीत वेदना, ॥१॥ तेमज अनंती उष्ण वेदना. एटले आपणे अहिंना आकरा धखधखता खेरना अंगारा होय, तेना उपर ते उष्णवेदनीवाला नारकीना जीवने सुवाडे, तो तेने घणीज निद्रा

आवी जाय. ॥२॥ तथा एवीज रीतनी अनंती क्षुधा वेदना, एटले जगत्मां रहेला सर्व घृतादिक पुज्जलो ते नारकीना जीवने खवरावीए, तोपण तेनी क्षुधा पूरी न थाय. ॥३॥ तेमज अनंती तृषा वेदना. एटले जगत्मां रहेला सर्व समुद्रोनां पाणी ते नारकीना जीवने पाइए, तो पण ते नारकीना जीवनी तृषा बीपे नही. ॥४॥ तेमज अनंती खरज वेदना, एटले अनेक प्रकारनां तरवार प्रमुख शस्त्रवडे करीने, ते नारकीना जीवने घर्षण करे, तोपण ते नारकीना जीवनी खरज मटे नही. ॥५॥ तेवी रीते अनंती परवशपणानी वेदना, एटली बधी बे के, आखा जगत्ना परवशपणानी वेदना एकठी करीए, तोपण तेना बरोबर न थाय. ॥६॥ तेवी रीते, ज्वर ॥७॥ दाह ॥८॥ नय ॥९॥ अने शोक ॥१०॥ ए चारनी वेदना आखा जगत्नी एकठी करीए, ते थकी पण एकेक वेदना अनंतगुणी जाणवी. आवी अनंतगुणी वेदनाउ, सात व्यसनना सेवनार प्रमुखने नोगववी पडे बे. जेम के, कोइए परस्त्री संग कर्यो होय, तेने त्यां (नरकमां) तेज स्त्रीनां आकार जेवी लोढानी पुतली बनावीने, अने तेने अग्निवडे सारी पेठे लालचोल धखधखती करीने, ते स्त्रीनी साथे ते परमाधर्मियो अनेकवार ते पुरुषने बलात्कारे आलिंगन करावे बे. इत्यादिक नरकने विषे अनंतगुणी वेदना शास्त्र-

वै० मां कही छे. तेने विचारीने हे मंदमते! काइक तो पाप करतां पाछो नसरच! ॥६१॥ शा०

७० आ नरकनां दुःखना अधिकारने विशेषे जाणवानी मरजी होय तो, श्री सूयगडांग सूत्रना प्रथम श्रुतस्कंधना पांचमा नरक विनक्ति अध्ययनने विषे जोइ लेज्यो.

१ २ ३ ४

देवत्ते मणुअत्ते । पराजिनगत्तणं नवगएणं ॥

६ ५ ७ ८

नीसणदुहं बहुविहं । अणंतखुत्तो समणुनूअं ॥६२॥

अर्थ—हे जीव! (देवत्ते के०) देव नवने विषे, तथा (मणुअत्ते के०) मनुष्य नवने विषे (पराजिनगत्तणं के०) परतंत्रपणाने (नवगएणं के०) पाम्यो एवो तुं जे तेणे (बहुविहं के०) बहु प्रकारनुं (नीसणदुहं के०) नयानक दुःख जे ते (अणंतखुत्तो के०) अनंतीवार (समणुनूअं के०) अनुनव कर्युं छे. ॥६२॥

नावार्थ—हे आत्मन्! विशेष ज्ञानवंत एवा देव नवने विषे, तथा मनुष्य नवने विषे पण, स्वतंत्रपणु मूकीने परतंत्रपणा वडे, एटले परवशपणे रहीने, अर्थात् इंडियोने वश ७०

थइने, महामहा कष्ट अनंतीवार भोगव्यां छे. एटले इंद्रियोए जेम जेम तने नचाव्यो, तेम तेम तुं नाच्यो. में तेथी महा भयानक दुःखने पाम्यो; परंतु ते इंद्रियोने तें वश न करी. माटे ज्यारे त्यारे पण, ते इंद्रियोने वश करीने आत्मसाधनमां वर्त्तिश, त्यारेंज तह्मारुं कल्याण थशे. ॥६२॥

तिरियगइं[१] अणुपत्तो[२]। भीममहावेअणा[४] अणेगविहा[३] ॥

जम्मणमरणरहट्टे[५]। अणंतखुत्तो[६] परिब्भमिउ[७] ॥६३॥

अर्थ—हे आत्मन्! तुं (तिरियगइं के०) तिर्यंच गतिने (अणुपत्तो के०) पाम्यो छुं. त्यां (अणेगविहा के०) अनेक प्रकारनी (भीममहावेअणा के०) भयंकर एवी महोटी वेदनाउने सहन करतो सतो (जम्मण मरण रहट्टे के०) जन्म मरणरूप रहेंटने विषे (अणंतखुत्तो के०) अनंतीवार (परिब्भमिउ के०) परिभ्रमण करी आव्यो छुं. ॥६३॥

भावार्थ—हे जीव! तुं तिर्यंच गतिने विषे गयो, त्यां आगल गधेडादिपणे अवतरीने कुं-

नारादिकना हाथनां घणां मफणां खाइ आव्यो बुं. वळी घोडा प्रमुखना अवतार धारण करीने घणा कोरडादिकना प्रहार सहन करी आव्यो बुं. अने हाथी प्रमुख थइने अंकुशना प्रहार सहन करी आव्यो बुं. वळी बळद प्रमुखना नवमां घणी परुणीनी आरोना प्रहार खाइ आव्यो बुं. वळी मांकडां प्रमुखना नवमां घेरघेर शळामो करी नाचीने रोटलाना टुकडा पराणे पामवानुं कष्ट सहन करी आव्यो बुं. वळी बोकडा प्रमुखना नवमां मरणांतकष्ट सहन करी आव्यो बुं. वळी पोपट प्रमुखना नवमां पांजरादिकने विषे बंधनकष्टने सहन करी आव्यो बुं. अर्थात् एवुं कोइ दुःख नथी के, जे दुःखने तें सहन नथी कर्युं!! ए प्रकारे अनंतीवार घोर महा नयानक दुःख तें सहन कर्यां छे. माटे हवे एवुं धर्मसाधन करय के, जेथी तेवां दुःख नोगववां पडे नहीं. ॥६३॥

६ ७ ८ ३ ५ ४ २

जावंति केवि दुरका। सारीरा माणसा व संसारे॥

११ १० १ ९

पत्तो अणंतखुत्तो। जीवो संसारकंतारे ॥६४॥

अर्थ–(जीवो के०) जीव जे ते (संसारे के०) संसारने विषे (सारीरा के०) शरीर संबंधी (व के०) वळी (माणसा के०) मन संबंधी (जावंति के०) जेटलां (केवि के०) कोइ पण (डुक्का के०) दुःख छे, तेने (संसारकंतारे के०) संसाररूपी अटवीने विषे (अणंतखुत्तो के०) अनंतीवार (पत्तो के०) पाम्यो छे. एटले संसाररूप अटवीमां परिभ्रमण करतां आ जीव सर्वे दुःख सहन करी आव्यो छे. ॥६४॥

भावार्थ–आ संसारने विषे दुःख बे प्रकारनां छे. एक शरीर संबंधी रोगादिके करीने दुःख छे. अने बीजुं मन संबंधी इष्ट वस्तुना वियोगादिक थकी दुःख छे. ते सर्वे दुःख आ संसाररूप अटवीने विषे भ्रमण करतां, आ जीवे अनंतीवार भोगव्यां छे. ॥६४॥

२ ४ ५ ३ १ ६
तण्हा अणंतखुत्तो । संसारे तारिसी तुमं आसी ॥
७ ८ ९ १० ११ १२
जं पसमेउं सव्वो । दहीणमुदयं न तीरिज्जा ॥६५॥

अर्थ–हे जीव ! (तुमं के०) तने (तण्हा के०) तृष्णा. अर्थात् तृषा (तारिसी के०) ते

प्रकारनी (अणंतखुत्तो के०) अनंतीवार (संसारे के०) नरकरूप संसारने विषे (आसी के०) उत्पन्न थइ हती. (जं के०) जे तृषाने (पसमेउं के०) शमाववाने अर्थे (सव्वोदहीणं के०) सर्व समुद्रोनुं पण (उदयं के०) जल जे ते (न तीरिज्जा के०) न समर्थ थाय !!! ॥६५॥

आ प्रकारनो अर्थ प्रथम नरकनी वेदनामां कही गया छीए. माटे पुनरुक्ति दोषनुं निवारण करवा माटे आ प्रकारनो भावार्थ जाणवो. के, हे जीव! तने अनंती तृष्णा उत्पन्न थइ छे, के, ते तृष्णा शमाववाने माटे, सर्व समुद्रोना पाणीना बिंदु जेटला धनादिक वडे पण तहारी तृष्णा पूरी थाय तेम नथी. ते कह्युं छे के,

यत्पृथिव्यां व्रीहियवं । हिरण्यं पशवः स्त्रियः ॥
नालमेकस्य तत्सर्व । मिति पश्यन्न मुह्यति ॥१॥

अर्थ—सघली पृथ्वीमां उत्पन्न थएली अनेक प्रकारनी डांगेर तथा अनेक प्रकारना घउं अने जव विगेरे सघलुं धान्य, जो एक जणने प्राप्त थाय, तोपण तेने धान्य संबंधिनी तृष्णा पूरी न थाय. तेमज सघला जगत्मां रहेलुं हीरा, माणेक, मोती, सोनुं रूपुं विगेरे धन, एक पुरुषने प्राप्त थाय, तोपण ते पुरुषनी धन संबंधिनी तृष्णा पूरी न थाय. तेमज जगत्-

ने विषे जेटला हाथी, घोडा, उंट, बळद, गायो, जेंशो विगेरे चतुष्पद जीवो छे, ते जो एक जणने प्राप्त थाय, तो पण ते पुरुषनी चतुष्पद संबंधिनी तृष्णा पूरी न थाय. तेमज जगत्ने विषे रूपाळामां रूपाळी देवांगनाउ तथा महोटा महोटा राजानी राणीयो तथा महोटा महोटा धनाढ्यनी स्त्रीयो जेवी के, अत्यंत लावण्यवाळी, अत्यंत रूपवाळी, अत्यंत गुणवाळी अने सुंदर सुगंधवाळी एवी जवान स्त्रीयो जो एक पुरुषने, प्राप्त थाय तोपण, ते पुरुषनी स्त्री संबंधी तृष्णा पूरी न थाय ए प्रकारनो विचार करीने जे डाह्यो पुरुष वैराग्यने पामे छे, तेज पुरुष संसारने विषे मोह पामतो नथी. ॥१॥

माटे हे आत्मन् ! उपर कह्या प्रमाणे तुं अनंतीवार विषयो जोगवी चूक्यो छुं. परंतु जे सुखनो तें एक वखत पण अनुजव नथी करयो, एवा आत्म सुखनी प्राप्तिने विषे उद्यम करय ! ॥६५॥

६ ५ १ २ ४ ३
आसी अणंतखुत्तो । संसारे ते छुहावि तारिसिया ॥
७ ८ ९ १० ११ १२
जं पसमेउं सव्वो । पुग्गलकाउवि न तरिज्जा ॥६६॥

अर्थ-रे जीव ! (संसारे के०) नरक नवरूप संसारने विषे (ते के०) तने (तारिसिया के०) तेवा प्रकारनी (बुहावि के०) क्षुधा पण (अणंतखुत्तो के०) अनंतीवार (आसी के०) उत्पन्न थइ हती के, (जं के०) जे क्षुधाने (पसमेउं के०) शमाववाने (सव्वो के०) सर्व एवा (पुग्गलकाउंवि के०) घृतादिरूप पुज्जलना समूह जे ते पण (न तरिज्जा के०) न समर्थ थाय ! ॥६६॥

नावार्थ-हे आत्मन् ! नरक नवने विषे तने एवी क्षुधा उत्पन्न थइ हती के, आ जगत्मां रहेला जे घृतादिक सघला सारा सारा पुज्जलोवडे पण, ते क्षुधानी शांति थाय तेम नहोतुं. एवी क्षुधावेदनी तें परवशपणामां अनंतीवार सहन करी छे. माटे तने उपदेश करवानो एटलोज छे के, आज स्वाधीनपणामां एकासणु करवुं, अथवा एक उपवास करवो, तेमां पण तने म्होटो विचार थइ पडे छे. अने वली तुं एवुं बोले छे के, महाराथी संवत्सरीनो उपवास पण बनी शकवो कठण छे. कारण के, महाराथी तो एक घडिवार पण नूख्युं रहेवातुं नथी. एम कहीने अनेक प्रकारनां सारां सारां नोजन करीने जमे छे, परंतु हे मूढ जीव ! आखो जन्मारो थइने तें केटला मण घृतादिक मिष्ट पदार्थो खाधा हशे ? तेनुं सुख लेश मात्र पण आज तने रह्युं नही. केम के, जो तुं तहारा हाथे तहारी जीन उपर हाथ

फेरवी जो के, ते घृतादिक पदार्थोनी कांइ पण चिकाश जणाय छे? अर्थात् नथी जणाती. तेमज हवेथी पण तुं अनेक प्रकारंना पाप प्रपंचादिकें करीने सारां सारां जोजन करीश, तोय पण पूर्वनी पेठे ते जिह्वा इंद्रि तृप्त थवानी नथी. अने जिह्वा इंद्रिनुं पोषण छे, तेज सर्वे इंद्रियोना पोषणनुं मूल छे. एटले जेम वृक्षना मूलमां पाणी नांखीए, तो बधा वृक्षमां ते पाणी प्रसरे. तेम एक जिह्वा इंद्रिने छूटी मूकवाथी बीजी इंद्रियो प्रयासे करीने जीती होय, ते पण कुमार्गे चाले छे. माटे नीतिशास्त्रमां कह्युं छे के, "जितं सर्वं जिते रसे" एटले जेणे रसना इंद्रि जीती, तेणे सघली इंद्रियो जीनी जाणवी. केम के, रसनेंद्रियने मोकली मूकवाथी मद्य मांसादिकने विषे पण प्रवृत्ति थाय छे. अने तेथी विषयनी वृद्धि थाय छे. तेणे करीने नरकादिकने विषे जवुं पडे छे. त्यां पूर्वे कहेली क्षुधा वेदना सहन करवी पडे छे. एटलाज माटे ग्रंथकारे क्षुधावेदनीना स्वरूपने विशेषे जणाववाने माटे फरीथी वर्णन कर्युं छे. माटे तेथी पुनरुक्ति दोष समजवो नही. ॥६६॥

५ ३ ४
काऊणम ऽणेगाइं । जम्मणमरणपरियट्टणसयाइं ॥

६ ७ १ ए ० २
दुक्खेण माणुसत्तं । जइ लहइ जहिच्छियं जीवो ॥६७॥

अर्थ–(जइ के०) ज्यारे (जीवो के०) जीव जे ते (अणेगाइं के०) अनेक एवां (जम्मण मरण के०) जन्म मरण तेनां (परियट्टण के०) परावर्त्तन तेनां (सयाइं के०) शेंकडो. एटले जन्म मरणनां शेंकडो परावर्त्तनने (काऊणं के०) करीने (दुक्खेण के०) दुःखे करीने (माणुसत्तं के०) मनुष्यपणाने पामे छे, त्यारे (जहिच्छियं के०) यथा इच्छा प्रमाणे. एटले पोतानी इच्छा प्रमाणे कुशलपणाने (लहइ के०) पामे छे. ॥६७॥

जावार्थ–रे आत्मन्! अनंत एवां जन्म मरणनां शेंकडो एटले क्यारेक जन्म, क्यारेक मरण, ए प्रकारनां दुःख सहन करीने, ज्यारे आ जीव मनुष्यपणाने पामे छे, एटले अकाम निर्जरा अने जवस्थितिनुं परिपक्कपणु इत्यादिक कारण वडे करीने मनुष्यपणाने पामे छे, त्यारे तेने जोइती चीज मली शके छे. एटले देवताना सुखने आपनारो, तथा मोक्षना सु-

खने आपनारो आ मनुष्य भव छे. परंतु मनुष्यभव विना कोइ भववडे सुखनी प्राप्ति थइ शकती नथी. एटलाज माटे ज्ञानी पुरुषोए सर्व भव करतां आ मनुष्यभवने उत्तममां उत्तम गण्यो छे. अने दश दृष्टांते करी दुर्लभ पण एटलाज.माटे कह्यो छे. आ दश दृष्टांतनुं स्वरूप प्रसिद्ध छे माटे. तथा ग्रंथ विस्तार थवाना भयथी लख्युं नथी. माटे आवा मोंघामां मोंघा मनुष्यभवने पामीने एळे गमावी अवसर चूकवो नही. ॥६७॥

५ २ ४ ३ ६

तं तहदुल्लहलंभं । विज्जुलयाचंचलं च मणुयत्तं ॥

७ १ ८ ९ १० १२ ११

धम्मंमि जो विसीयइ । सो काउरिसो न सप्पुरिसो ॥६८॥

अर्थ–(जो के०) जे पुरुष (तह दुल्लहलंभं के०) तथा प्रकारे एटले चुल्लकादि दश दृष्टांते करी दुःखे पामवा योग्य एवुं (च के०) वळी (विज्जुलया चंचलं के०) विजळीरूप लतानी पेठे चंचल एवुं (तं के०) ते, एटले ते योग्य एवुं (मणुयत्तं के०) मनुष्यपणुं, तेने पामीने (धम्मंमि के०) धर्मने विषे (विसीयइ के०) खेद पामे छे (सो के०) ते (काउरिसो के०)

कुत्सित (निंदित) पुरुष जाणवो. पण(सप्पुरिसो के०) सत्पुरुष (न के०) न जाणवो.॥६८॥

भावार्थ—जैनशासनमां प्रसिद्ध एवां दश दृष्टांते डुर्लन्न एवो, अने विजलीना ऊबकारानी पेठे क्षणन्नंगुर एवो, ने जेमां कोइ प्रकारनी पण खामी नथी एवो. एटले आ मनुष्यनो न्नव अढी द्वीपमां थयो, तेमां वली कर्म न्नूमिमां थयो, तेमां वली आर्य देशमां थयो, तेमां वली उत्तम कुलने विषे थयो, तेमां वली अविकल पंचेंद्रिये पूर्ण थयो, तेमां वली निरोगी काया पाम्यो, अने तेमां वली सद्गुरुनो अने सत् शास्त्र सांनलवानो जोग बन्यो; तेम ठतां पण, जे पुरुषो धर्मसाधन करवामां प्रमाद करे ठे, ते पुरुषो निंदा करवा योग्य थाय ठे, पण ते सत्पुरुषोनी पंक्तिमां गणवा लायक थता नथी. माटे हे जीव ! पूर्वे अनुन्नव करेला पशुपणाना स्वन्नावने मूकी दइने, मनुष्यन्नवने लेखे लगाडवामां उद्यम करच. ॥६८॥

॥ उपजातिवृत्तम्. ॥

३ २ ४ ५ ६ ७ ८ १
माणुस्सजम्मे तडि लद्धयंमि । जिणिंदधम्मो न कओ य जेणं ॥
१३ १२ १० ११ १५ १६ १७ १४ ८
तुट्टे गुणे जह धाणुक्कएणं । हत्था मलेवा य अवस्स तेणं ॥६९॥

अर्थ-(जेणं के०) जेणे (तडि के०) संसाररूप समुद्रना कांठारूप (माणुस्सजम्मे के०) मनुष्य जन्म (लध्धंमि के०) पामे सते (जिणिंदधम्मो के०) जिनेंद्रनो धर्म जे ते (न कओ के०) नथी कर्यो (तेणं के०) तेणे अर्थात् तेने (य के०) पण (जह के०) जेम (धाणुक्कएणं के०) धनुर्धारि पुरुष जे तेणे अर्थात् तेने (गुणे के०) पणछ (तुट्टे के०) तूटे सते (अवस्स के०) निश्चे (हत्था के०) हाथ (मलेवा य के०) घसवा पडेज छे. तेम आ जीवने पण हाथ घसवा पडे छे. एटले पछी घणो पश्चात्ताप करवो पडे छे. ॥६९॥

भावार्थ-अनंता भवरूप समुद्रमां भटकतां भटकतां मनुष्य जन्मरूप कांठो प्राप्त थए सते पण, जेणे अहिंसारूप जिनधर्म न आचरण कर्यो, तेने जेम रणसंग्राममां युद्ध करवा गएला एक धनुर्धारी पुरुषना धनुष्यनी पणछ तूटी गइ, तेथी तेने जेम हाथ घसवा पड्या, तेम तहारे पण हाथ घसवा पडशे. माटे, हे जीव! जो तुं पण छती सामग्री सते जिनधर्मरूप भातुं नहि ग्रहण करे, तो तहारे पण मरणावस्थाये पश्चात्ताप करवोज पडशे. ते आ प्रकारे के, अरेरे!! में छती सामग्री ए पण आ शुं कर्युं!!! के, परलोके जतां धर्मरूप भातुं कांइ पण लीधुं नही! माटे हवे हुं शुं करीश! एवी रीतें तहारे हाथ घसवा पडशे. वली जेम आ भवमां थोडो

काल रहेवा माटे कोइ पुरुष ज्यारे परदेश जवानो होय, त्यारे ते पुरुष प्रथमथी न्नाता विगेरेनो एटलो बधो बंदोबस्त करी राखे छे के, अमुक जग्याये उतरीशुं, ने त्यां अमुक न्नोजन करीशुं. एवी रीतनो ठराव करीने पछी पोतानी साथे न्नातादिक घणी सामग्री लेइने जाय छे. पण न्नातु लिधा शिवाय जतो नथी. तेम तहारे तो अहिंथी मरीने क्यां जवुं पडशे? ने त्यां केटला दिवस रेहेवुं पडशे? अने कोने त्यां जइने उतारो करवो पडशे? अने मार्गमां न्नातु लिधा विना शुं खाइशुं? इत्यादिक परलोक संबंधी तने कांइ पण विचार थतो नथी! माटे हे मूढ जीव! सर्व दुःख मात्रने निवारण करनार अने मनोवांछित सुखने आपनार एवुं धर्मरूप न्नातुं संगाथे राख्य. ॥६ए॥

॥ पद्धरीवृत्तम्. ॥

१ २ ३ ० ४ ५

रेजीव निसुणि चंचलसहाव । मिल्हेविणु सयलवि बप्नन्नाव ॥

६ ७ ए १० ११ १२

नवन्नेयपरिग्गह विविहजाल । संसारि अछि सहु इंदयाल ॥७०॥

अर्थ—(रे जीव के०) हे जीव! तुं (निसुणि के०) सांजल्य के, जे (चंचलसहाव के०)

चंचळ स्वभाववाळा (सयलवि के०) सर्व एवाय पण (बज्भाव के०) शरीरादिक बाह्यभावने तथा (नवभेयपरिग्गह के०) नव भेदवाळा परिग्रहनो (विविहजाल के०) अनेक प्रकारनो समूह, तेने (मिल्हेविणु के०) मूकीने परलोके जईश; ए हेतु माटे (संसारि के०) संसारने विषे (अछि के०) जे शरीरादिक देखाय छे, (सहु के०) ते सघळुं (इंदयाल के०) इंद्रजाल समान छे. ॥७०॥

भावार्थ–हे आत्मन्! तहारुं हितकारी एवुं आ एक वाक्य सांभळ्य. आ देखातो शरीरादिक सघळो बाह्यभाव छे, ते इंद्रजाल समान छे. एटले नव प्रकारनो परिग्रह* ते सघळो चंचळ स्वभाववाळो छे. एटले क्षणमां देखाय अने क्षणमां नाश पामी जाय एवो छे. एटलुंज नहि पण संसारमां जे जे वस्तु देखाय छे, ते सर्वेने तुं इंद्रजाल समान जाणीने तेने विषे मोह ममत्व न करय. कारण के, ते सघळा बाह्यभावने मूकीने तुं एकलोज परलोकमां जईश, पण पूर्वे कही तेमांनी कोइ वस्तु पण तहारी साथे आववानी नथी. केम के, ते सर्वे, वस्तुताए असत् छे. माटे तेने विषे तुं सत्यपणानी भ्रांति न करीश. ॥७०॥

* १ धन. २ धान्य. ३ क्षेत्र. ४ घर. ५ सुवर्ण. ६ रूपुं. ७ त्रांबुपितल. ८ द्वीपद. ९ चतुष्पद.

४ २ ३ ५

पियपुत्तमित्तघरघरणिजायं । इहलोइअ सव्व नियसुहसहाय ॥

१३ १२ १४ ११ ९ १० १ ७ ८ ६

न वि अत्थि कोइ तुह सरणि मुक्ख । इक्कल्लु सहसि तिरिनिरयदुक्ख ॥७१॥

अर्थ—(मुक्ख के०) हे मूर्ख ! (इहलोइअ के०) आ लोक संबंधी (सव्व के०) सर्व एवो (पिय के०) पिता (पुत्त के०) पुत्र (मित्त के०) मित्र (घर के०) गृह (घरणि के०) स्त्री, तेमनो (जाय के०) समूह जे ते (निय सुह सहाय के०) पोताने सुख करवानो छे स्वभाव ते जेमनो एवो छे. एटले सौ पोत पोताना सुखना अर्थी छे. पण (तिरि निरय दुक्ख के०) तिर्यंच तथा नरक ते संबंधी दुःख, तेने (इक्कल्लु के०) तुं एकलोज (सहसि के०) सहन करे छे. पण ते वखत तेमांनुं (तुह के०) तहारे (सरणि के०) शरण करवा योग्य (कोइ वि के०) कोइ पण (न अत्थि के०) थतुं नथी. ॥७१॥

भावार्थ—आ जगत्मां परलोकने विषे कांइ पण सहाय्यता करवाने न समर्थ एवां माता पिता स्त्री पुत्रादिक सौ पोत पोतानां स्वार्थी छे. पण कोई कोईनुं नथी. जेम के, उपर भ-

खेलां घरना माणसोने एवो निश्चय थाय छे के, हवे आ पथारीमां सूवारेलो माणस जीवशे नही. एवुं धारीने ते सूतेला माणसने महा भरपूर वेदनामां तरफडतो नजरे जोइने पण कहे छे के, तमे मने कांइ कहो छो? एटले तमे छानी रीते संचय करेलुं, आपेलुं, मूकेलुं, दाटेलुं कांइ देखाडो छो? एवी रीते पोतानो स्वार्थ साधवानी वातो करे छे. तथा तेना मरी गया पछी पण केवल पोतानो स्वार्थ संभारी संभारीने रुए छे, के, आटलुं काम अधुरुं मूकीने गया! पण तेओ एम नथी विचारतां के, ज्यांथी समजणो थयो त्यांथी मांडीने चोके सूतां सूधी पण एणे आपणुं, वैतरुं कूट्या कर्युं छे. परंतु ते बापडो नरकादिक गतिने विषे एकलो गयो छे, त्यां तेने केवां दुःख पडतां हशे? तथा ते बिचारो घणुं द्रव्य मूकीने गयो छे! पण तेना बीजा दुःखमां भाग न लेतां फक्त तेनुंज द्रव्य तेनी पछवाडे शुभ कृत्यमां वापरवुं; एवो विचार पण नथी थतो. अने वली आवो विचार पण तेमने नथी थतो के, अरेरे! रात्री दिवस पोताना शरीरनुं सुख पण न विचारतां कूड कपट छलभेद अन्यायादिक करीने एणे आपणुंज भरण पोषण कर्युं छे. पण पोताना परलोकनुं साधन करवानो अवकाश जरा पण एणे लीधो नथी. एवी रीते कोइ रुदन करतुं नथी. माटे

हे जीव! हे महा मूर्ख!! कांइकतो विचारय!! के, हुं आश्रवभावमांथी निवृत्ति पामीने कांइकतो संवर भावमां वर्त्तु ॥७१॥

॥ मागधिकावृत्तम् ॥

२ १ ३ ५ ६ ४

कुसग्गे जह उसबिंदुए । थोवं चिठ्ठइ लंबमाणए ॥

७ ८ ९ ११ १० १२ १३

एवं मणुआण जीवियं । समयं गोयम मा पमायए ॥७२॥

अर्थ–(जह के०) जेम (कुसग्गे के०) डाभना अग्रभागने विषे (उसबिंदुए के०) झाकलनो बिंदु जे ते (लंबमाणए के०) लांबो थतो सतो एटले वायुवडे पडवानी तैयारीमां आवेलो (थोवं के०) थोडो काल (चिठ्ठइ के०) रहे छे. (एवं के०) ए प्रकारे (मणुआण के०) मनुष्य जे तेमनुं (जीवियं के०) जीवित जे ते चंचल जाणवुं. माटे श्री महावीर स्वामी गौतम स्वामी प्रत्ये* कहे छे के, (गोयम के०) हे गौतम! (समयं के०) एक समय मात्र पण (मा पमायए के०) प्रमाद न करीश. ॥७२॥

* आ वार्त्ता श्री उत्तराध्ययन सूत्रना दशमा अध्ययनमां छे. त्यांथी विस्तारना अर्थि पुरुषोए जोइ लेवुं.

नावार्थ—श्री महावीर स्वामी गौतम प्रत्ये कहे ठे के, हे गौतम! एक समय मात्र पण प्रमाद न करीश. केम के, आ मनुष्यपणानुं जीववुं माननी अग्रनागमां रहेला जलबिंडुनी पेठे, थोडोज काल रहे तेवुं ठे. एटले जोतां जोतां अल्प वायु वडे पण शीघ्रपणे नाश पामे तेवुं ठे. अर्थात् माननी अग्रने विषे रहेला जलबिंड तो, फक्त वायुवडेज नाश पामे ठे. परंतु आ मनुष्य तो, अनेक प्रकारना कारणोथी मरे ठे. जेम के, ताव आववाथी, मूंझारो थवाथी, कोलेरा (कोगलियुं) आववाथी, घर पडवाथी, अग्निवडे बलवाथी, शस्त्र प्रमुख वागवाथी, सर्प करडवाथी इत्यादिक अनेक प्रकारनां कारणो मलवाथी अचिंतो नाश पामे ठे. एम जाणीने हे जीव! धर्मकृत्यने विषे समय मात्रनो प्रमाद न करच. ॥७२॥

आ ७३ तथा ७४ मी ए बे गाथाउ श्री सूयगडांग सूत्रना प्रथम श्रुतस्कंधना वैतालीय अध्ययननी ठे.

१ २ ३ ४ ६ ७ ५ ८

संबुज्झह किं न बुज्झह । संबोही खलु पिच्च डल्लहा ॥

१२ १० ११ ९ १६ १५ १४ १३

नो हू वणमंति राइउ । नो सुलहं पुणरवि जीवियं ॥७३॥

अर्थ—श्री रुषभदेव स्वामीना. पुत्र श्री भरतेश्वर, तेमणे तिरस्कार कर्या एवा, अने राज्यना अर्थि एवा, पोताना अठाणु पुत्रो प्रत्ये श्री आदीश्वर भगवान उपदेश करे छे, अथवा श्री महावीरस्वामी पर्षदा प्रत्ये कहे छे के, (संबुज्झह के०) अहो भव्यो! तमे बुझो. (बोध पामो.) (किं न बुज्झह के०) केम तमे बोध नथी पामता? जे हेतु माटे जेमणे धर्म नथी कर्यो ते पुरुषोने (पिच्च के०) मरण पाम्या पछी परभवने विषे (संबोही के०) बोधिबीज जे ते (खलु के०) निश्चे (दुल्लहा के०) दुर्लभ छे. शाथी के, (राइउ के०) रात्री दिवस जे ते (हु के०) निश्चे (भवणमंति नो के०) गयेलां पाछां आवतां नथी. तेम (जीवियं के०) जीवित जे ते (पुणरवि के०) फरीने पण एटले फरी फरी (सुलहं नो के०) सुलभ नथी. एटले संयमरूप जीवित घणुं दुर्लभ छे. अथवा (जीवियं के०) जीवित जे ते अर्थात् तूटेलुं आउखुं जे ते (पुणरवि के०) फरीने पण सांधवुं (सुलहं नो के०) सुलभ नथी. एटले तूटेलुं आउखुं सांधवाने कोइ पण समर्थ नथी. ॥१३॥

भावार्थ—हे भव्य जीवो! तमे ज्ञान दर्शन चारित्ररूप धर्मने जाणो. कारण के, आवो अवसर फरी फरीने मळवो दुर्लभ छे. माटे घणी सामग्रीसते पण, केम बोध पामता नथी?

अर्थात् जोगने तुछ जाणी, तेनो त्याग करीने सद्धर्मने विषे बोध पामो. ते कह्युं छे के,

॥ शार्दूलविक्रीडितवृत्तम् ॥

निर्वाणादिसुखप्रदे नरभवे जैनेन्द्रधर्मान्विते ।
लब्धे स्वल्पमचारु कामजसुखं नो सेवितुं युज्यते ॥
वैडूर्यादिमहोपलौघनिचिते प्राप्तेऽपि रत्नाकरे ।
लातुं स्वल्पमदीप्ति काचशकलं किं चोऽचितं सांप्रतम् ॥ १ ॥

अर्थ—मोक्षादिक सुखनो आपनार एवो, मनुष्यनो भव मळे सते, तेमां वळी जिनराजनो धर्म मळे सते, तहारे लगार मात्र पण काम सुख सेववुं घटतुं नथी. केम के, ते अल्प छे, अने ते सुखनो परिणाम सारो आवतो नथी. ते उपर दृष्टांत कहे छे. के, जेम वैडूर्यादि रत्नो समूह जेमां रह्यो छे, एवा रत्नाकरने पामीने एटले रत्ननी खाण पामीने कांतिरहित एवो, अने वळी अल्प मूल्यवाळो एवो काचनो ककडो लेवो शुं तहारे घटे छे? अर्थात् पूर्वे कह्यो एवा रत्नाकरनो त्याग करीने, तेने बदले काचनो ककडो लेवो; ते घटेज नही. तेम अतिशे अल्प अने तुछ एवा विषय सुखने अर्थे रत्नाकर समान जिनधर्मनो त्याग करवो, ते पंडित पुरुषने घटे नही. वळी जेणे धर्मकृत्य नथी कर्युं, तेने परभवमां संजमरूप जी-

वै० वित मळतुंज नथी. वळी गयेला एवा, ने धर्मसाधन करवाने योग्य एवा, रात्री दिवस जेते, श०
८० तथा यौवनादिक काळ इत्यादिक पाछां आवतां नथी. केम के, इंद्रादिकनुं पण त्रुटेलुं आ-
युष्य पाछुं संधातु नथी. माटे एवुं जाणीने रात्री दिवस धर्मनुं आराधन करवुं. ॥७३॥

हवे सर्व संसारी जीवने आयुष्यनुं अनित्यपणु देखाडे छे.

१ ३ २ ७ ४ ६ ५
डहरा बुढ्ढा य पासह । गब्भछावि चयंति माणवा ॥
८ ९ १० ११ १२ १३ १४
सेणे जह वट्टयं हरे । एवमा ऽऽउखयंमि तुट्टइ ॥७४॥

अर्थ–हे आत्मन्! (डहरा के०) बाळ एवा (य के०) वळी (बुढ्ढा के०) वृद्ध एवा, वळी (गब्भछावि के०) गर्भने विषे रहेला एवाय पण (माणवा के०) मनुष्य जे ते (चयंति के०) नाश पामे छे. (पासह के०) तेने तुं जो. वळी (जह के०) जेम (सेणे के०) शिंचाणो पक्षी जे ते (वट्टयं के०) तेतर पक्षीने (हरे के०) हरण करे छे. अर्थात् शीघ्रपणे मारे छे. (एवं के०) ८०
ए प्रकारे (आउखयंमि के०) आउखानो क्षय थये सते (तुट्टइ के०) त्रुटे छे. एटले क्षणे

क्षणे आयुष्य नाश पामे छे. अथवा मृत्यु जे ते जीवितने हरे छे. ॥७४॥

भावार्थ—हे जीव! तुं विचारीने जो के, केटलाएक मनुष्य गर्भमां रह्या थकाज मरण पामे छे. अने केटलाएक महाकष्टे करीने, जन्म थया पछी बाळपणामांज मरण पामे छे. अने केटलाएक जवान अवस्थामांज पोतानां स्त्रीआदिक वहालां पदार्थोने, अणइच्छाये मूकीने मरण पामे छे. अने केटलाएक तो वृद्धावस्थानां दुःख भोगवतां भोगवतां, पराणे पराणे पग घशीने मरण पामे छे. वळी आ जग्याए मानव शब्द ग्रहण कर्यो छे, तेनुं ए कारण छे के, उपदेश करवा योग्य होय, तेनेज मनुष्य कहीए. परंतु जे उपदेश देवा योग्य न होय, तेने तो मनुष्यनी पंक्तिमां न गणवा. एम ग्रंथकारनो अभिप्राय छे. वळी मनुष्यनुं आयुष्य अनेक प्रकारना कारणो मळवाथी घणुंज चंचळ छे. एम जणाववाने अर्थे सर्व अवस्थामां मरण देखाड्युं छे. वळी श्री सूयगडांग सूत्रना प्रथम श्रुतस्कंधना बीजा वैतालीय अध्ययनी बीजी गाथानी दीपिकामां तथा टीकामां कह्युं छे के,

त्रिपल्योपमायुष्कस्यापि पर्याप्त्यनन्तरमन्तर्मुहूर्त्तेनैव कस्यचिन्मृत्युरुपतिष्ठतीति.

अर्थ—त्रण पल्योपमना आयुष्यवाळाने पण, पर्याप्ति पाम्या पछी अंतर्मुहूर्त्त करीने

कोइक पुरुषने मृत्यु जे ते प्राप्त थाय छे.

वळी श्री ठाणांगजी सूत्रना सातमा ठाणामां कह्युं छे के.

सत्त विहे आउ नेदे. पन्नत्ते तंजहा.

॥ आर्यावृत्तम्. ॥

अज्झवसाण निमित्ते । आहारे वेयणा पराघाए ॥
फासे आणापाणू । सत्तविहं न्निज्झए आऊ ॥१॥

अर्थ—आयुष्यनो नेद एटले उपक्रम जे ते, सात प्रकारनो कह्यो छे. केम के, निमित्तनुं पामवापणुं छे ए हेतु माटे. हवे ते सात नेद देखाडे छे. सराग स्नेहना नयथकी एटले कोइना उपर अत्यंत स्नेह होय, तेवामां तेनो नाश सांनळवाथी उत्पन्न थयो जे नय, तेथी आउखु त्रुटे छे. एम आगळ पण संबंध जोडवो. ॥१॥ वळी दंम शस्त्रादिकना उचिंता घातथी. ॥२॥ तथा अत्यंत आहार करवाथी. ॥३॥ तथा नेत्र अने शूळादिकनी वेदनाथी. ॥४॥ तथा पराघातथी एटले गर्नपातादिकथी. ॥५॥ तथा तरेहवारना सर्पादिकना स्पर्शथी. ॥६॥ अने श्वासोछ्वासने रुंधवाथी. ॥७॥ एम सात प्रकारे आउखु नेदाय छे. अथवा उ-

पक्रम छे कारण ते जेनुं; एवुं आउखुं तेज पूर्वे कहेला निमित्तथी त्रुटे छे. आ पूर्वे जे कह्युं ते सोपक्रम आउखावाळानेज आश्रीने जाणवुं. पण निरुपक्रम आउखावाळाने आश्रीने न जाणवुं. केम के, आउखुं बे प्रकारे बंधाय छे. एक सोपक्रम कर्मथी अने बीजुं निरुपक्रम कर्मथी बंधाय छे. तेमां जे सोपक्रम (शिथिल) वाळुं आयुष्य छे, ते निमित्त पामवाथी त्रुटे छे. अने निरुपक्रम (निकाचित) वाळुं आयुष्य छे, ते कदिपण त्रुटतुं नथी.

वळी जेम शिंचाणो पक्षी तेतर पक्षिने अचिंतो झाली ले छे. अर्थात् नाश करे छे. तेम आउखुं क्षय थए सते जीवित पण नाश पामे छे. माटे एवुं जाणीने एटले क्षणमात्र जीववानो विश्वास न गणीने धर्मसाधन करवामां सावधान था. ॥७४॥

॥ आर्यावृत्तम् ॥

३ २ ४ ७ १ ६ ५
तिहुयणजणं मरंतं । दट्ठूण नयंति जे न अप्पाणं ॥
१० ९ ८ १३ १२ ११
विरमंति न पावाउ । धीधी धीठत्तणं ताणं ॥७५॥

वै० ७१ अर्थ–(जे के०) जे पुरुष (मरंत के०) मरतो एवो (तिहुयणजणं के०) त्रण जुवनना जनने (दठूण के०) देखीने (अप्पाणं के०) आत्माने (न नयंति के०) धर्मने विषे नथी जोडता, अने (पावाउ के०) पापथकी (न विरमंति के०) नथी विराम पामता (ताणं के०) तेमना (धीठत्तणं के०) धिठ्ठपणाने एटले निर्लज्जपणाने (धीधी के०) धिक्कार थाउ! २ ॥१५॥ शा०

जावार्थ–स्वर्ग मृत्यु ने पाताल ए प्रकारे त्रण लोकना रहेनारने, अर्थात् सर्व संसारी जीवने, मरता देखीने अने जाणीने पण पोताना आत्माने धर्मने विषे नथी जोडता, तथा हिंसादिक थकी निवृत्ति नथी पामता, अर्थात् जे कृत्यथी पाप बंधाय छे, तेवा कृत्यथी पाछा नथी हुसरता, तेवा निर्लज्ज जीवोना धिठ्ठपणाने धिक्कार थाउ! धिक्कार थाउ!! एम अतिशे धिक्कारपणु जणाववाने माटे बेवार धिक्कार शब्द कह्यो छे. ॥१५॥

६ ७ ५ १ ४ . २ ३

मामा जंपह बहुयं । जे बद्धा चिक्कणेहि कम्मेहिं ॥

९ ८ १२ १० ११

सव्वेसि तेसि जायइ । हियोवएसो महादोसो ॥१६॥ ७१

अर्थ—अयोग्य शिष्योने कृपाथी गुरुने उपदेश करता जोइ, योग्य शिष्यो गुरु प्रत्ये कहे छे के, हे गुरो ! (जे के०) जे पुरुषो (चिक्कणेहिं के०) चिकणां एवां (कम्मेहिं के०) कर्मे करीने (बद्धा के०) बंधाया छे, तेमने (बहुयं के०) घणो (मामा जंपह के०) उपदेश न करो, न करो ! केम के, (तेसिं के०) ते (सव्वेसिं के०) सर्वे अयोग्य शिष्योने (हियोवएसो के०) हितोपदेश जे ते (महादोसो के०) महादोष वालो, अथवा महा द्वेषवालो (जायइ के०) थाय छे.॥७६॥

भावार्थ—अयोग्य शिष्यने वारंवार बोध करता देखीने, आचार्य महाराज प्रत्ये मुनियो जे ते, विनंती करे छे के, हे भगवन! आपतो करुणासागर छो. परन्तु काला निविडपत्थर जेवा, आ खल शिष्योने आपगमे तेटलो प्रतिबोध करशो, तोयपण तेनु प्रतिबोध पामवा कठण जणाय छे. केमके, जे प्राणियो ज्ञानावरणीयादिक निविड कर्मे करीने बंधाणा छे, ते प्राणियो धर्मोपदेश देवाने योग्य नथी. जेम काचा घडामां नांखेलुं पाणी ते पोते नाश पामे छे, अने घडाने पण नाश पमाडे छे. तेम अयोग्य जीवोने बोध करेलुं सिद्धांत रहस्य जे ते, नाश पामे छे. अने ते अयोग्य शिष्यो पोताना आत्माने पण नाश करे छे. अथवा ते अयोग्य शिष्योने गुरु उपर द्वेष थाय छे. ते कह्युं छे के,

उपदेशो हि मूर्खाणां । प्रकोपाय न शान्तये ॥
पयःपानं भुजङ्गानां केवलं विषवर्द्धनम् ॥१॥

अर्थ—मूर्ख जीवोने करेलो हितोपदेश जे ते, प्रकोपने अर्थे थाय छे. एटले उपदेश देवाथी उलटो गुरु उपर कोप करे छे. जेम सर्पने जे दूध पावुं, ते केवल झेरनुं वधारवुं छे. एटले ते सर्प जेम जेम दूध पीए छे, तेम तेम तेने झेर वधतुं जाय छे. ए रीते मूर्खने जेम जेम हितोपदेश करे छे, तेम तेम ते मूर्ख द्वेष वधारतो जाय छे ॥१॥

माटे तेवा अयोग्य जीवोने उपदेश देवो ते व्यर्थ छे. अर्थात् विपरीतपणाने पामे छे.॥७६॥

४ ३ २ १
कुणसि ममत्तं धणसयणविहवपमुहेसु ऽणंतदुक्खेसु ॥
७ ८ ५ ६ ७
सिढिलेसि आयरं पुण । अणंतसुक्खंमि मुक्खंमि ॥७७॥

अर्थ—हे आत्मन् ! (अणंतदुक्खेसु के०) अनंतुं छे दुःख ते जेणे करीने अथवा जेने अर्थे जे थकी अथवा जेने विषे एवां (धण के०) धन एटले सुवर्णादिक तथा (सयण के०)

माता पितादिक स्वजन. तथा (विहव पमुहेसु के०) हाथी, घोडा प्रमुख विभव, इत्यादिकने विषे (ममत्तं के०) ममत्वभावने तुं (कुणसि के०) करे छे. (पुण के०) परंतु (अणंतसुक्खंमि के०) अनंतु छे सुख ते जेने विषे एवा (मुक्खंमि के०) मोक्षना सुखने विषे (आयरं के०) आदरने तुं (सिढिलेसि के०) शिथिल करे छे. एटले तुं मोक्षनां सुख पामवानो उद्यम नथी करतो. ॥११॥

भावार्थ—रे मूढ आत्मन्! अनंत दुःखनां कारण एवां, स्वजन, विभव, धन इत्यादिकने विषे ममत्व करी महोटा दुःखनो भार तुं माथे उपाडे छे. पण वर्त्तमान कालना स्वजनादिकने जो तुं उपकारी जाणीने ममत्व करतो होय तो, एवी रीतना उपकार करनार तो, अनंता भवमां अनंतां स्वजनादिक थयां छे. माटे ते स्वजनादिकने विषे तुं केम ममत्व नथी करतो? अने ते स्वजनादिकना शया हवाल थया हशे? तेनो पण लगार मात्र विचार नथी करतो! वली फक्त आज भवना स्वजनादिकने अर्थे राग द्वेष करीने खेती, व्यापार, अने सेवादिक के, जेमां प्राणीनो उपघात थाय, एवी न करवा योग्य क्रिया, आ जीव कर्या करे छे. जेम फरशुरामे अनंत वीर्य राजामां आसक्त थएली रेणुकानामे पोतानी मातानुं माथुं

कापी नाख्युं. तथा तेज फरशुरामे पोताना पिता उपर राग होवाथी एकवीशवार नक्षत्री पृथ्वी करी. वळी कोणिक राजाये राज्यना लोभे करीने पोताना पिता जे श्रेणिक राजा, तेमने बंधीखानामां नांख्या. तेमज पोतानी मनोवृत्ति प्रमाणे चालवामां अडचण करनार जाणी-ने, चूलणी राणीये पोतानो पुत्र जे ब्रह्मदत्त, तेने मारवाने अर्थे लाखना मोहोलमां घाली अग्नि सळगाव्यो. वळी एक हार हाथीनी लडाइने माटे, फक्त एक पद्मावतीना वचनथीज एक क्रोडने एशीलाख जीवोनो घात थयो. वळी राज्यना लोभे करीने भरत अने बाहुबली ए बे भाइ वच्चे, महोटुं युद्ध थयुं. ने तेमां हजारो जीवोनो संहार थइ गयो. वळी विषय राग पूरो न थवाथी पोतानो पति जे परदेशी राजा, तेने सुरीकंता राणीये झेर दइने मार्यो. एटलुंज नही पण, छेवटे गळे नख पण दीधो! वळी पुत्रीना स्नेहे करीने जरासंधे श्री कृष्ण वासुदेव संगाथे महोटुं युद्ध करी, पोताना कुलसहित हजारो जीवोनो नाश कर्यो. वळी राज्यना लोभे करीने कनककेतु राजाये पोताना पुत्रोनां सर्व अंग छेदन कर्यां. वळी नीति शास्त्रना कर्त्ता चाणाक्ये राज्यना लोभे करीने पोतानो मित्र जे पर्वत नामे राजा, तेने मारी नांख्यो. वळी पोताना स्वार्थ माटे सुभूम चक्रवर्त्तिये ब्राह्मणोनो अने क्षत्रियोनो

कृय कर्यो. एवी रीतनां अनेक दृष्टांतो छे. ते जो लखवा बेसीए तो तेनो एक महोटो ग्रंथ थतां पण पार न आवे. माटे विचारवानुं आटलुं छे के,

पुत्रो मे भ्राता मे । स्वजनो मे गृहकलत्रवर्गो मे ॥
इतिकृतमेमेशब्दं । पशुमिव मृत्युर्जनं हरति ॥१॥

अर्थ—तुं रात्री दिवस एवुं विचारे छे के, आ महारो पुत्र, आ महारो भाई, आ महारां स्वजन, आ महारुं घर, आ महारां स्त्रीआदिक वाल्हेशरी, परंतु ए प्रकारे बोलनारने जेम घातकी पुरुष, बें बें करता एवा बोकडाने हरण करे छे; तेम मृत्यु जे ते, मे मे(महारुं महारुं) करता प्राणीने पकडीने लेइ जाय छे. ॥१॥

माटे तेना उपर ममत्व करवाथी उलटुं पाप बंधाशे. पण तेमांनुं कोइ मरी जशे, त्यारे तेमांथी कोइ पण ते मरनारने राखवा समर्थ थतुं नथी; एटलुंज नहि पण, पोताना स्वार्थमां खामी आववाथी, थोडा दिवस रुदन करी "गयेलाने भूली जवुं" ए रीवाज प्रमाणे तेज संबंधीयो तेने विसरी जाय छे. जेम पोताना वीश वर्षना पुत्रना मृत्यु समये फक्त मोहना उछाळाथी गाढस्वरे (लांबा रागे बुमो पाडी) रुदन करनार अने छाती कुटनार पिता, पोताना बाळा

पुत्रना लग्न समये, ते मृत्यु पामनारने भूली जइ, वर्त्तमान समयना उत्साहमां पूर्ण हर्षथी दाखल थाय छे. एज रीते अत्यंत स्नेहवाली स्त्री (भार्या)ना मृत्यु पछी, तेज भर्त्तार बीजी स्त्री साथे विवाह करी जाणे आ संबंध सदाकाल रेहेवानोज होय ने शुं! एवा खोटा मोहमां मुंझाइ एटले खुशी थइ, अगाउनी स्त्रीने विसरी जाय छे. तेमज पोताना बंधुना मृत्युथी दुःखी थयानुं बतावनार भ्राता (भाइ) थोडा दिवस पछी ते बंधुना स्नेहने भूली जइ, तेना पुत्रादिकनी साथे द्रव्यादिकना भागमां कपट आदरे छे. एवी रीते स्वजन परिवारनो संबंध पण स्वार्थ युक्त, अल्प मुदतनो, स्थिति पूर्ण थये त्रुटनारो, आपणो राख्यो नहि रेहेनारो, अने परिणामे दुःखदाइ एवो इंद्रजाल समान खोटो छे. तेथी तेने विषे ममत्व धारण करवो ए पण केवल अज्ञानताज छे! एवीज रीते हाथी, घोडा, रथ, पायदल विगेरे ठकुराइ पण अनित्य छे. तेने विषे जे ममत्व करवो, ते पण मोहचेष्टा जाणवी. तेमज धन, सोनुं, रूपुं, हीरा, माणेक, मोती, शंख, प्रवालां, तेना उपर पण जे ममत्व करवो, ते पण परिणामे दुःखनुंज मूल छे. माटे जे जे कृत्य करवुं तेनु परिणाम प्रथमथीज विचारवुं के, आ कृत्यनुं परिणाम शुं निपजशे? ते उपर नीतिशास्त्रमां कह्युं छे के, आखा दिवसमां एवुं काम करवुं

के, जेथी रात्रीये सुखे निद्रा आवे. तथा आठ मासमां एवुं काम करवुं के, जेणे करीने चोमासाना च्यार महिना निवृत्तिथी सुखे सुखे विशेष धर्मध्यान थाय. तथा पूर्व अवस्थामां एवुं काम करवुं के, जेणे करी वृद्धावस्थामां सुखी थवाय. अने जीवतां सूधीमां एवुं काम करवुं के, जेणे करीने परलोकने विषे सुखी थवाय. माटे परलोक संबंधी कार्यमां आदर करवो. ए उपदेश. ॥७७॥

१ २ ३ ५ ४

संसारो दुहहेऊ । दुक्खफलो दुसहदुक्खरूवो य ॥

१० ११ ९ ८ ७ ६

न चयंति तंपि जीवा । अइबद्धा नेहनिअलेहिं ॥७८॥

अर्थ—हे जीव! (संसारो के०) आ संसार जे ते (दुहहेऊ के०) दुःखनुं कारण छे. तथा (दुक्खफलो के०) दुःख एज फल छे जेनुं एवो छे. (य के०) वली (दुसहदुक्खरूवो के०) दुःखे करी सहन थाय, एवुं जे दुःख ते रूप छे. तेमां (नेहनिअलेहिं के०) स्नेहरूप बेडीवडे (अइबद्धा के०) अतिशे बंधायेला एवा (जीवा के०) जीव जे ते (तंपि के०) ते संसारने पण

(न चयंति के०) नथी त्याग करता. अर्थात् संसारने दुःखदायक जाणे छे, तोयपण तेनो त्याग नथी करता. ॥७८॥

भावार्थ–आ संसारमां सर्व बंधन करतां प्रेम बंधन अतिशे महोटुं छे. ते कह्युं छे के,

॥ वसन्ततिलकावृत्तम्. ॥

रात्रिर्गमिष्यति भविष्यति सुप्रभातं । भास्वानुदेष्यति हसिष्यति पङ्कजश्रीः ॥
इत्थं विचिन्तयति कोशगते द्विरेफे । हा हन्त हन्त नलिनीं गज उज्जहार ॥ १ ॥

॥ स्वागतावृत्तम्. ॥

बन्धनानि खलु सन्ति बहूनि । प्रेमरज्जुकृतबन्धनमन्यत् ॥
दारुभेदनिपुणोऽपि षडङ्घ्रि । र्निष्क्रियो भवति पङ्कजकोशे ॥ २ ॥

अर्थ–जेम कमलनो रस पीवाने बेठेलो एवो जे भमरो, ते मनमां विचारे छे के, हवे संध्याकाल पडवा आवी, ने कमल मिंचाइ जशे; माटे हुं उडी जउं तो ठीक, एम विचार करतां करतां संध्याकाल थइ. ने कमल मिंचाइ गयुं; ते वखते ते भमरो विचार करे छे के, रात्री जशे ने सारो प्रभातकाल थशे ने सूर्य उगशे, ने कमलनी लक्ष्मी हसशे एटले प्रफुल्लित थशे. त्यारे हुं उडीश. एवो विचार करे छे. एटलामां पाणी पीवाने माटे आवेला हाथीए

ते कमळने उपाडीने हा इति खेदे!! मुखमां घाली, पेला बिचारा ज्ञमराने दांतवडे चाववा मांड्यो! ॥१॥ ते वखते पेलो ज्ञमरो मरतां मरतां पश्चात्ताप करे ढे के, जगत्मां बंधन तो घणां ढे, पण प्रेमरूप दोरीनुं बंधन तो एक जुदी जातनुंज ढे? केम के, गमे तेवुं काष्ठ होय. तो पण तेने विंधवाने ज्ञमरो समर्थ होय ढे, परंतु हुंतो स्नेहे करीने कमळना दोडाने विषे रहीने क्रिया रहित थयो. एटले ते दोडाने कोरीने नीकळी जवा समर्थ न थयो!॥२॥—वळी ब्रह्मदत्त राजा मरणांतिक रोगनी वेदनादिके करीने पराज्ञव पाम्यो सतो अतिशे, संतापनो अनुज्ञव करे ढे. एटले वेदनाए करीने आंखमांथी आंसु चाल्यां जाय ढे; तोयपण मोहना उदयथी ज्ञोगनी आकांक्षा(इछा)करे ढे. अने पासे बेठेली स्त्रीना उपर हाथ नांखीने पोतानी स्त्रीनुं नाम देतो देतो मरण पामीने सातमी नरकने विषे गयो. अने त्यां पण तीव्र वेदनानो अनुज्ञव करतो सतो, ते स्त्रीनुं नाम वारंवार संज्ञारतो सतो वेदना ज्ञोगवे ढे. एवी रीते ज्ञोगनी आसक्ति त्याग करवी घणी दुष्कर ढे. अने केटलाएक महा सत्ववाळा सनत्कुमार चक्रवर्त्ती जेवा पुरुषो तो, रोगनी वेदना थये सते पण देहने तथा आत्माने जुदो समजीने एवुं विचारता के, आ महारुं करेलुं कर्म मने उदय आव्युं ढे. माटे महारेज ज्ञोगववुं पडशे.

एवो निश्चय करीने समता सहित कर्म भोगवे छे. पण मनमां पीडा उत्पन्न थवा देता नथी. अर्थात् आर्त्तध्यान रौद्रध्यान ध्याता नथी. अने वली एवुं विचारे छे के,

॥ शार्दूलविक्रीडितवृत्त.॥

उप्तो यः स्वत एव मोहसलिलो जन्मालवालोऽशुभो ।
रागद्वेषकषायसंततिमहानिर्विघ्नबीजस्तथा ॥
रोगैरङ्कुरितो विपत्कुसुमितः कर्म्मद्रुमः सांप्रतं ।
सोढा नो यदि सम्यगेष फलितो दुःखैरधोगामिभिः ॥१॥

अर्थ—आ कर्मरूप वृक्ष पोते पोताने हाथेज वाव्यो छे. ने तेमां मोहरूप पाणी सिंच्युं छे. अने ते वृक्षनी जन्मभूमि पण अशुभ कर्मरूप क्यारामां छे. वली राग द्वेष कषाय, तेनी जे संतति एटले श्रेणि, ते रूप बीज छे. ते महोटा विघ्न रहित छे. एटले ए बीजमांथी वृक्ष उत्पन्न थया विना रहेज नहीं; तेवुं छे. अने ए वृक्षने रोगरूप अंकुरा उत्पन्न थया छे. अने विपत्तिरूप पुष्प आव्यां छे. ते विपत्तिरूप पुष्पने जो तुं सम्यक् प्रकारे एटले समभावे नहि सहन करे तो, ते पुष्पमांथी अधोगतिनां दुःखरूप फल उत्पन्न थशे. ॥१॥

वली आम विचारे छे के, जो हुं आवी पडेली आपदाने समभावे नहिं भोगवुं तो,

एमांथी महारे दुर्गतिनां दुःखरूप फल उत्पन्न थशे. माटे हे भव्य जीवो ! आ प्रकारनो विचार करीने संसारने दुःखमय जाणीने संसार घटाडवानो उद्यम करो. ॥७८॥

३ ४ २ १

नियकम्मपवणचालिउ । जीवो संसारकाणणे घोरे ॥

६ ७ ८ ९ १० ५

का का विडंबणाउ । न पावए दुसहदुक्खाउ ॥७९॥

अर्थ–(घोरे के०) घोर (भयानक) एवुं (संसारकाणणे के०) संसाररूप महावनने विषे (निय के०) पोतानुं (कम्म के०) ज्ञानावरणीयादिक कर्म, ते रूप (पवण के०) वायु, तेणे करीने (चलिउ के०) प्रेरणा कर्यो एवो, अर्थात् उडाड्यो एवो (जीवो के०) आ जीव जे ते (दुसहदुक्खाउ के०) दुःखे करीने सहन करवाने अशक्य छे दुःख ते जेनुं एवी का का के०) केइ केइ (विडंबणाउ के०) वध बंधनादिक विटंबना तेने (न पावए के०) नथी पामतो ? अर्थात् सर्वे विटंबनाउने पामे छे. ॥७९॥

भावार्थ–कोइ पुरुष पोतानो लीधेलो नियम (व्रत) कोइ अल्प परिषहथी [मेघ]कुमार-

नी पेठे नागवाने तैय्यार थयो हे. पण तेणे विचार्युं के, आ वार्त्ता गुरुने निवेदन करीने पछी महारो नियम मूकुं. एम धारीने जेटलामां गुरु पासे आवे हे. तेटलाकमां ज्ञानवंत गुरुए उपदेश आपीने निश्चल कर्यो. ते आ प्रमाण के—हे भव्य जीव! अहो हो!! आ घोर भवाटवीने विषे आ जीवे कर्मना वशे करीने शां शां दुःख नथी सहन कर्यां? अर्थात् सर्वे जातिनां वध बंधनादिक दुःख सहन कर्यां हे. अने अनेक प्रकारना अपराधथी राजा प्रमुखे गधेडा उपर बेसारीने नाककान कापीने अने कपालमां डाम देइने इत्यादि घणीज विटंबना पमाडीने नें, आखा शहेरमां फेरवीने शूलिये देवा प्रमुख असह्य दुःख दीधां. त्यां ते परवशपणाथी तेवां दुःख अनंतीवार सहन कर्यां. वली कर्मे करीने जीवने शुं शुं नथी वितनुं? अर्थात् घणुंज वीते हे. जेम के,

निवसइ सायरमज्झे । निवसइ गिरिगुहरकंदरामज्झे ॥
कम्ममहायजीयाणं । कहमावि न हणे विलग्गं तु ॥१॥
मायंगघरे हरिचंदराइणो पंसवाण वणवामो ॥
मुंजस्स भिरकभमणं । कीरइ जं कम्मुणा मंचं ॥२॥
राउ करेइ रंको । रंको पुण करेइ रायमारिन्नो ॥

जं न धरं जइ हीयए । कीरइ तं कम्म जीवाणं ॥३॥

अर्थ–जो कदापि आ जीव कर्मना जयथी समुद्र मध्ये वास करे, अथवा पर्वतनी महोटी गुफामां वास करे, तोयपण कर्मनी साथे वलगेला एटले कर्मथी आवरण पामेला ते जीवोने, वलगेलां कर्म कोइ प्रकारे नाश पामतां नथी. अर्थात् निकाचित कर्म जोगव्या विना छुटतां नथी. ॥१॥ वली जुन के, कर्मने वशे करीने हरिश्चंद्र राजा चंमालने घेर रह्या तथा पांच पांमवो वनवास पाम्या. तथा मुंजराजाये घेर घेर जिक्षा मागी. माटे जे कर्म करे ते सत्य छे. अर्थात् कर्म कोइने पण मूकतु नथी. ॥२॥ वली कर्म केवां छे? ते कहे छे. थोडीवारमां राजाने रंक करे छे. अने रंकने राजा जेवो करे छे. वली जेना घरमां, कोइए जे हिताऽहितकारी वात हृदयमां न धारी होय;ते वातने, जीवोनां कर्म जे ते थोडीवारमां करी देखाडे छे. एटले जेनुं मनमां पण चिंतवन नथी, एवुं शुजाशुज उचिंतु एकदम थइ आवे छे. तेनु कारण पण कर्म छे. माटे कर्मने कांइ शरम नथी. ॥३॥ माटे तें कर्मने वश थइने अनेक दुःख सहन कर्यां छे. तेना आगल आ धर्मकृत्य करतां थएलुं अल्प दुःख श्या हिसाबमां छे? एम उपदेश देइने धर्मने विषे दृढ कर्यो. एम समजी बीजा जीवोए पण धर्मने विषे दृढता

राखवी: आ ठेकाणे मेघकुमारनुं दृष्टांत जाणवुं. ते दृष्टांत प्रसिद्ध छे माटे लख्युं नथी.॥७ए॥

३ ४ ५

सिसिरंमि सीयलानिल। लहरिसहस्सेहि भिन्नघणदेहो ॥

१ २ ६ ७ ८

तिरियत्तणंमि ऽरणे । अणंतसो निहणम ऽणुपत्तो ॥८०॥

अर्थ–हे जीव! (तिरियत्तणंमि के०) तिर्यंचना जवमां (अरणे के०) अरण्य (अटवी) ने विषे (सिसिरंमि के०) शिशिर रुतु (शियालो) आवे सते (सीयलानिल के०) शीतल (टाढो) वायु, तेनी (लहरिसहस्सेहि के०) हजारो लहेरोवडे (भिन्नघणदेहो के०) भेदायो छे. एटले पीडायो छे दृढ एवो पण देह ते जेनो, एवो थयो सतो, तुं (अणंतसो के०) अनंतीवार (निहणं के०) नाशने (अणुपत्तो के०) पाम्यो छुं. ॥८०॥

जावार्थ–हे आत्मन्! तुं पूर्वे अनुजवेलां दुःखने, लगार विचारी जो के, तिर्यंचना जवमां तहारो देह, खूब मजबूत हतो,. तोयपण पोष महा महिनानी अत्यंत टाढथी, (हिम पडवाथी) अनंतीवार मरण पाम्यो. एटले आ जीव अनेक प्रकारना रसायण जेवां के, त्रांबु

हरिताल विगेरे खाइने शरीरने मजबूत तथा पुष्ट करवुं धारे छे; तोयपण ते शरीर घोडा जेवुं, अथवा पाडा जेवुं कदिपण थतुं नथी. तो पण ते शरीरने घोडानी तथा पाडानी उपमा अपाय छे. तेवा घोडा विगेरे तिर्यंचोनां शरीर पण, अत्यंत ताढथी नाश पामे छे. ते नाश पामवादिक दुःख तें अनंतीवार सहन कर्यां. तो आ भवमां धर्मसाधन निमित्ते अल्प एवो पण शीत (ताढनो) परिषह तुं केम सहन नथी करतो? ॥८०॥

३ २ ५ ६ ४

गिम्हायवसंतत्तो । ऽरणे छुहिऊ पिवासिऊ बहुसो ॥

१० १ ७ ९ ८

संपत्तो तिरियभवे । मरणदुहं बहु विसूरंतो ॥८१॥

अर्थ–हे जीव! तुं (तिरियभवे के०) तिर्यंचना भवने विषे (अरणे के०) अटवीमां (गिम्हायव के०) ग्रीष्मऋतुना तडकावडे (संतत्तो के०) सारी पेठे तप्यो एवो, अने (बहुसो के०) घणी घणी (छुहिऊ के०) क्षुधा वेदनाने सहन करतो एवो, अने (पिवासिऊ के०) घणी घणी तृषा वेदनाने सहन करतो एवो, ने (बहु के०) घणो घणो (विसूरंतो के०) खेद पा-

मतो सतो (मरणडुहं के०) मरणनां डुःखने (संपत्तो के०) पाम्यो हतो. ॥८१॥

भावार्थ—हे आत्मन्! जेम तें तिर्यंचना भवमां शीत परिषह सहन कर्यो. तेम उष्ण कालमां (ग्रीष्मऋतुमां) एटले वैशाख जेठ महिनाना आकरा तापमां तें उष्ण परिसह सहन कर्यो. तेमां वली अतिशे तृषा वेदनी तथा अतिशे क्षुधा वेदनी तेणे करीने, तुं अत्यंत खेद पामतो सतो अनंतीवार मरण पाम्यो. परंतु ते डुःखने विसरी जइने, आ भवमां थोडा तापने पण न सहन करतो, तुं पंखा प्रमुखे करीने वायुकायना जीवोनो घात करे छे. पण एम नथी विचारतो के, तिर्यंच भवने विषे तथा नरक भवने विषे में अनंतां तापनां डुःख सहन कर्यां छे. ते डुःखना आगल आ तापनुं डुःख, श्या हिसाबमां छे? एवो विचार तने लेशमात्र पण आवतो नथी! ॥८१॥

२ ३ ४ ५
वासासु ऽरसमभे । गिरिनिझरणोदगेहि बझंतो ॥
६ ० ८ १ ७
सीयानिलमझविज । मउसि तिरियत्तणे बहुसो ॥८२॥

अर्थ–रे जीव! तुं (तिरियत्तणे के०) तिर्यंचपणाने विषे (वासासु के०) वर्षाऋतुमां एटले चोमासामां (अरणमज्झे के०) अटवीने विषे रह्यो सतो (गिरिनिज्झरणोदगेहिं के०) पर्वतनां निर्झरण एज पाणीवडे (बझंतो के०) वहन थतो. एटले तणातो, अर्थात् चारे पासे. पाणीमां अथडातो एवो, अने (सीयानिल के०) अतिशे शीतल एवा वायुवडे अर्थात् हिमवडे (ऊझविज्ञ के०) दाऊलो सतो (वहुसो के०) घणीवार (मउसि के०) मरण पाम्योछे. ॥८२॥

नावार्थ–हे जीव! तुं तिर्यंचना नवने विषे, चोमासानी ऋतुमां वृक्ष प्रमुखने विषे रात्री दिवस निर्गमन करतां वरसातनी धाराउनां कष्ट सहन करी आव्यो छे. वली हिम पडवाथी बलीने मरण पण पाम्यो छे.ने नदीयोमां तणातां तणातो अनेक प्रकारनी वेदना पामीने अथडाइ कुटाइने पराणे प्राण त्याग कस्या छे.ए सघलां कष्टने तुं आज केम विसरी जाय छे?॥८२॥

१ २ ४ ३

एवं तिरियनवेसु । कीसंतो डुक्कसयसहस्सेहिं ॥

८ ७ ५ ६

वसियो अणंतखुत्तो । जीवो नीसणनवारणे ॥८३॥

अर्थ-(एवं के०) ए प्रकारे· एटले पूर्वे कह्युं ते प्रकारे (तिरियभवेसु के०) तिर्यंचना भवोने विषे (दुक्खसयसहस्सेहिं के०) लाखो गमे दुःखे करीने (कीसंतो के०) क्लेश पामतो एवो (जीवो के०) आ जीव जे ते (भीसणभवारण्णे के०) भयानक एवी संसाररूप अटवीने विषे (अणंतखुत्तो के० अनंतीवार (वसियो के०) निवास करी आव्यो छे· ॥८३॥

भावार्थ-हे आत्मन्! तुं तिर्यंचना भवोने विषे पण अनंतां दुःख भोगवी आव्यो छे. ॥८३॥

२ ३ ४

दुठ्ठकम्मपलया।निलपेरिउ भीसणंमि भवरण्णे ॥

५ ६ ७ ८ १ ९

हिंडंतो नरएसु वि । अणंतसो जीव पत्तोसि ॥८४॥

अर्थ-(जीव के०) हे जीव! तुं (दुठ्ठकम्म के०) दुष्ट एवां जे आठ कर्म. एटले दुष्ट फलने आपनारां ज्ञानावरणीयादिक आठ कर्म ते रूप (पलयानिल के०) प्रलय कालना वायु वडे (पेरिउ के०) प्रेरणा कर्यो.एवो, अने (भीसणंमि के०) भयानक एवी (भवरण्णे के०) संसाररूप अटवीने विषे (हिंडंतो के०) चालतो सतो (नरएसु वि के०) नरकने विषे

पण, पूर्वोक्त दुःख (अणंतसो के०) अनंतीवार (पत्तोसि के०) पाम्यो छे. ॥८४॥

भावार्थ—हे आत्मन्! तें ज्ञानावरणीयादिक आठ कर्मे करीने नरकादिक गतिने विषे, अनंतीवार दुःख भोगव्यामां खामी राखी नथी. तोपण वली पाछां तेनांतेज दुःख प्राप्त थाय, तेवा उपाय करे जाय छे. माटे हवे तेवां दुःखो भोगववां पडे नहि, तेवो उपाय करजे. ॥८४॥

२ ३ १

सत्तसु नरयमहीसु । वज्जानलदाहसीयवियणासु ॥

७ ६ ५ ४

वसियो अणंतखुत्तो । विलवंतो करुणसद्देहिं ॥८५॥

अर्थ—हे जीव ! तुं (वज्जानलदाह के०) वज्राग्निनो छे दाह ते जेने विषे. एटले अतिशे तीक्ष्ण छे अग्नि ते जेने विषे, अने (सीयवियणासु के०) अतिशे शीतनी छे वेदना ते जेने विषे, एवी (सत्तसु के०) सात (नरयमहीसु के०) नरक पृथ्वीओने विषे (करुणसद्देहिं के०) करुण शब्दवडे (विलवंतो के०) विलाप करतो सतो (अणंतखुत्तो के०) अनंतीवार (वसियो के०) वस्यो छे. ॥८५॥

भावार्थ—हे आत्मन्! तुं साते नरक पृथ्वीयोमां निवास करी आव्यो छे. अने त्यां त्यां उष्ण वेदना तथा शीत वेदना, आ नीचे लख्या प्रमाणे अनंतीवार सहन करी आव्यो छे.

जेम ग्रीष्मऋतुना छेल्ला समयमां आकाशनी मध्ये आवेलो, मेघरहित, घणा आकरा किरणवालो सूर्य, देदिप्यमान सते, जेना शरीरने विषे पित्तनो प्रकोप थयो छे, तेवा पुरुषने, च्यारे बाजु खेरना अंगारानो अग्नि सलगावीने तेनी वच्चे राखीए, ने तेने जेवी उष्णवेदना थाय, ते करतां पण अनंतगुणी उष्णवेदना, नरकने विषे नारकीना जीवो भोगवे छे. ते नारकीना जीवोने त्यांथी उपाडीने जो कदापि आहिंना धगधगता खेरना अंगारामां सुवारीए, तो जेम शीतल चंदननो लेप कर्यो होय, ने तेथी जेम अत्यंत सुखथी निद्रा आवे, तेवी रीतनी निद्रा ते नारकीना जीवने आवे छे. एवीज रीते पोष महिनानी रात्रीने विषे मेघरहित आकाश थए सते, हृदयादिकमां कंपाराना रोगवाला पुरुषने आवरण रहित, हिमाचलनी पृथ्वीने विषे राख्यो होय, अने वली त्यां अत्यंत वायराना झपाटा चालता होय, ते वखत ते जीवने जेवी शीतवेदना थाय, तेथी पण अनंतगुणी शीतवेदना नरकने विषे नारकीना जीवो भोगवे छे. ते नारकीना जीवोने पूर्वे कहेला, हिमाचल पृथ्वीना स्थानमां

राख्यो होय, तो जेम वायरा विनाना स्थानमां शियालाने विषे निद्रा आवे, तेम ते नारकीना जीवोने निद्रा आवी जाय छे. माटे एवां दुःख तुं अनंतीवार सहन करी आव्यो छे.

माटे तेथी त्रास पामीने फरीथी त्यां न जवुं पडे, एवा धर्मकृत्यमां सावधान था ! ॥८५॥

३ ४ ६ ५
पियमायसयणरहिउ । दुरंतवाहिहिं पीडिउ बहुसो ॥
२ १ ७ ८ १० ९ ११
मणुअनवे निस्सारे । विलाविउ किं न तं सरसि ॥८६॥

अर्थ—रे जीव ! (निस्सारे के०) असार एवा (मणुअनवे के०) मनुष्यनवने विषे (पियमाय के०) पिता माता. अने (सयण के०) स्वजन तेणे करीने (रहिउ के०) रहित एवो, अने (दुरंतवाहिहिं के०) दुःखे करीने छे अंत ते जेनो, एवा व्याधिये करीने (बहुसो के०) घणीवार (पीडिउ के०) पीडा पाम्यो एवो. एज कारण माटे (विलाविउ के०) विलाप करतो एवो, तुं जे ते (तं के०) ते मनुष्यनवने (किं न सरसि के०) केम नथी संनारतो ? ॥८६॥

नावार्थ—हे जीव ! तुं मनुष्य नवमां पण माता पिता स्वजनादिक प्रिय वस्तुनो वियोग

थवाथी, तथा अनेक प्रकारना शरीरना व्याधिथी विलाप करी करीने मरण पाम्यो हतो, ते वातने तुं केम विसरी जाय छे ? मनुष्यभव आश्रीने अहं ममत्व तथा मोहपणा सहित निर्भाग्यपणा विषे एक सोमिल ब्राह्मणनी कथा टीकामां लखी छे. ते नीचे प्रमाणे जाणवी.

कथा. ७

कौशांबी नगरीमां सोमिल नामे ब्राह्मण जन्मथी दरिद्री एवो रहेतो हतो. ने तेने स्त्री, पुत्र, पुत्री, इत्यादिक घणु कुटुंब हतुं. ते कुटुंबनी प्रेरणाथी एक दिवस धन कमाववाने अर्थे देशांतर गयो. त्यां तेणे व्यापारादिके रहित एवो, पण दानभोगे सहित, एटले महोटा दानेश्वरी जेवो, एक योगी पुरुष दीठो. ते योगिये द्रव्यनी चिंताथी आकुल व्याकुल थएला ब्राह्मणने पूछ्युं के, तहारे शी चिंता छे ? त्यारे तेणे कह्युं के, दारिद्र्य एज महारे चिंता छे. त्यारे योगी बोल्यो के, जो तुं महारुं कह्युं करे, तो हुं तने महोटो धनाढ्य करुं. त्यारे ते वात ते ब्राह्मणे कबूल करी. पछी ते बे जण पर्वतनी तहलाटीमां (गुप्त स्थानकमां) गया त्यां योगी बोल्यो के, आ सुवर्णसिद्धि थवानो रस छे. एटले योगीए पूर्वे ताढ तडको भूख तृषादिक वेठीने अने घणा काल सूधी सूकां एवा कंदमूल फल इत्यादिकनुं भोजन करीने, एवी रीते महा मेहेनत करीने अने समडीना पांदडानो पडियो करीने ते वडे रसकुंपिकामांथी लेइने घणे काले घणा प्रयासथी ते रस तुंबडीमां भरी राख्यो हतो. ते पेला दरिद्री ब्राह्मणने देखाड्यो. ने कह्युं के, आ सहस्रवेधी रस छे. एटले त्रांबानां हजार पत्रां अग्निमां तपावीने उपरा उपरी खडकीने मूक्यां होय, तेमां आ रसनुं एक टींपु मूक्युं होय तो, ते सर्व पत्रामां रस वेंधइ जाय. एटले

पहोची जाय. अर्थात् तेज वखत ते सर्व पत्रां सुवर्णमय थइ जाय. एवी रीते योगिए वारंवार कह्युं. त्यारे ते निर्भागी ब्राह्मणने उलटो क्रोध चड्यो, ने तेथी बे हाथे झालीने पेलुं रसनुं तुंबडुं, सादडवृक्षना पांनडामां ढोळीदीधुं. त्यारे ते योगिये ते ब्राह्मणने घणोज अयोग्य जाणीने तेनो त्याग कर्यो. अने ते ब्राह्मण पण पृथ्वीमां भ्रमण करतो करतो एटले पैसा पैसा एम पोकार करतो करतो मरण पाम्यो, पण ते मल्या नही.

आ कथानुं तात्पर्य एछे के, जेम निर्भाग्य जीवने घणुं धन पामवानो अवसर आवे तोयपण तेने ते धन लेवुं सूझे नही. तेम आ जीवने पण मनुष्य भवमां जिनधर्मरूप धन ग्रहण करवानो अवसर आव्यो छे, तोयपण बहुलकर्मिपणाथी जिनधर्मरूप सुवर्णसिद्धिनो रस लेवानुं मन नथी थतुं, ए बहु आश्चर्यकारक छे!! ॥८६॥

७ ८ ६ ९ १० २ १

पवणु व्व गयणमग्गे । अलक्खिओ भमइ भववणे जीवो ॥

३ ५ ४

ठाणट्ठाणंमि समुज्झिऊण धणसयणसंघाए ॥ ८७ ॥

अर्थ– हे आत्मन्! (जीवो के०) आ जीव जे ते (भववणे के०) संसाररूप अटवीने विषे (ठाणट्ठाणंमि के०) स्थान स्थानने विषे(धणसयणसंघाए के०)धन तथा स्वजन तेना

संमूहने (समुञ्झिऊण के०) त्याग करीने (गयणमग्गे के०) आकाश मार्गने विषे (पवणु व के०) पवननी पेठे (अलक्खिउ के०) अदृशरूप थयो सतो (ज्ञमइ के०) ज्ञमे ठे. ॥७३॥

ज्ञावार्थ—जेम आकाश मार्गमां वायु फरे ठे, तेम आ जीव पण ज्ञवाटवीमां अदृश्यपणाथी एटले आ पूर्वे महारो कोण सगो हतो? तेवा अजाणपणाथी अनेक स्थानने विषे ज्ञमण करे ठे. तेमां अनेक ज्ञवने विषे मलेलां धन तथा स्वजन इत्यादिकनो त्याग करीने एटले तेमनी शी गति हशे? एवी चिंता मूकीने वर्त्तमानकालनां स्वजनादिकने सुखी करवाने तथा धन मेलववाने अर्थे देशोदेश ज्ञमे ठे. अर्थात् वायुवडे पांनडुं जेम पराधीन थइने उडे ठे. तेम केटलाएक पुरुषो धनने अर्थे शरीरनुं दुःख पण न गणतां, कोइ विलायत जाय ठे. कोइ चीन जाय ठे. कोइ लंकामां जाय ठे. कोइ ब्रह्मदेशमां जाय ठे. इत्यादिक अनेक देशमा जाय ठे. तेवामां त्यां अनेक प्रकारनां निमित्त मलवाथी मरण पामे ठे. एवी रीते आ जीव नजरे देखे ठे, तो पण कर्म उपर विश्वास राखीने संतोष राखी धर्मसाधन करतो नथी. ॥७३॥

६ ५ ४
विच्छिज्जंता असयं । जम्मजरामरणतिक्खकुंतेहिं ॥

८ ९ ७ १ २ ३
दुहम ऽणुहवंति घोरं । संसारे संसरंत जिआ ॥८८॥

१ ८ ५ ६ ३ ४
तहवि खणंपि कयावि हु । अन्नाणभुयंगडंकिया जीवा ॥

७ ९ १० २
संसारचारगाउ । नय उव्विज्जंति मूढमणा ॥८९॥ युग्मम्.

अर्थ–(संसारे के०) च्यारगतिरूप संसारने विषे (संसरंत के०) पर्यटन करता एवा (जिआ के०) जीव जे ते (जम्मजरामरण के०) जन्म जरा मरणरूप (तिक्खकुंतेहिं के०) तीक्ष्ण नालाये करीने (असयं के०) वारंवार (विच्छिज्जंता के०) विंधाता सता (घोरं के०) रौद्र.(आकरा) एवा (दुहं के०) दुःखने (अणुहवंति के०) अनुभवे ले. ॥८८॥ (तहवि के०) तोयपण.एटले पूर्वे कह्युं तेवुं दुःख भोगवे ले तोयपण (मूढमणा के०) मूढ ले मन ते जे-

मनुं एवा. अर्थात् मूर्ख एवा, अने (अन्नाणभुयंगमडंकिया के०) अज्ञानरूप सर्पे मश्या एवा (जीवा के०) जीव जे ते (कयावि के०) कोइ वखत पण (हु के०) निश्चे (संसारचारगाउ के०) संसाररूप बंधिखानाथी (खणंपि के०) क्षणमात्र पण (नय उव्विअंति के०) उद्वेग नथी पामता. एटले वैराग्य नथी पामता! आते केटलुं बधुं आश्चर्य? ॥८९॥

भावार्थ—जेम कोइ भालो मारे, ने तेनी वेदना थती होय, तेवामां वली बीजो भालो मारे एवी रीते उपरा उपरि वागवाथी जेवुं दुःख भोगवे, तेवी रीते आ संसारी जीव पण जन्म जरा मरण इत्यादिकनां घणां भयानक दुःख उपरा उपरि भोगवे छे.॥८८॥ तोयपण अज्ञानरूप सर्पे मशेला एवा मूढ जीव, संसाररूप बंधिखानाथी कोइ वखत पण क्षणमात्र उद्वेग पामता नथी. आ केटलुं बधुं आश्चर्य छे !!! ॥८९॥

३ २ १ ४ ५
कीलसि कियंतवेलं। सरीरवावीइ जत्थ पइसमयं ॥
६ ८ ७
कालरहट्टघडीहिं। सोसिज्जइ जीवियंभोहं ॥ ९० ॥

अर्थ—हे जीव ! तुं (सरीरवावीइ के०) शरीररूप वाव्यने विषे (कियंतवेलं के०)केटला काल सूधी (कीलसि के०) क्रिया करीश ? (जह्व के०) जे शरीररूप वाव्यने विषे (पइसमयं के०) समय समय प्रत्ये (कालरहट्टंघडीहि के०) कालरूप रहेंटनी घडीयो वडे (जीवियंजोहं के०) जीवितरूप जलनो प्रवाह(सोसिज्जइ के०)शोष पामेछे. अर्थात् सुकाइ जायछे. ॥९०॥

नावार्थ—जेम रहेंट वडे वाव्यमांथी जेम जेम पाणी काढीए, तेम तेम ते पाणी उंडुं थतुं जाय छे. तेम हे जीव ! तें पण जेटलुं आयुष्य बांधीने जन्म लीधो छे, ने तेमांथी जे जे समय जाय छे, तेटलुं आउखुं उंडुं थतुं जाय छे. कहेवत छे के मावाप जाणे के, महारो दिकरो महोटो थाय छे; पण ते दिवसे दिवसे आउखुं घटवाथी नहानो थतो जाय छे. ए प्रमाणे विचारतां तो, आउखानो अंत आवतां वार नहि लागे. केमके, समये समये घटवापणुं छे माटे.जेमके,कोइने शूली देवा लेइ जाय छे.अने ते शूली सो मगलां छेटी छे.त्यारे ते माणस जेम जेम शूली सन्मुख पगलां भरे छे, तेम तेम तेने मृत्यु नजिक नजिक आवतुं जाय छे. अने ते वखत तेने खानपानादिक कांइपण गमतुं नथी. केमके, एने मृत्यु नक्की ढुकडुं जाएयुं छे माटे. तेम हे चेतन ! तहारां पण जेम जेम वर्ष जाय छे, तेम तेम तहारे पण मृत्यु

सन्मुख आवे जाय छे. एटले जो कदि तहारुं आयुष्य सो वर्षनुं होय, अने तेमांथी जे जे वर्ष गयां, तेटलुं आयुष्य सो वर्षमांथी ओछुं थयुं जाणवुं. अर्थात् आ अल्प आयुष्य ऊपाटाबंध पुरु थशे. अने मनना मनसुबा मनमां रही जशे. अने पाछलथी घणोज पश्चात्ताप थशे ! माटे प्रमाद छोडीने परलोकनुं साधन करवामां सावधान था. ॥९०॥

एज वातने मूल ग्रंथकार पण जणावे छे के,

१ २ ३ ६ ५ ७ ४

रेजीव बुज्झ मामुज्झ मा पमायं करेसि रेपाव ॥

११ ९ १० १२ ८

किं परलोए गुरुदुक्खभायणं होहिसि अयाण ॥९१॥

अर्थ—(रे जीव के०) हे जीव ! तुं (बुज्झ के०) धर्मने विषे बोध पाम्य. पण (मामुज्झ के०) मोह न पाम्य. जे कारण माटे (रेपाव के०) हे पाप जीव ! (पमायं के०) प्रमादने (मा करेसि के०) न करीश. (अयाण के०) हे अजाण ! एटले हे मूढ ! प्रमाद करीने (परलोए के०) परलोकने विषे (गुरुदुक्खभायणं के०) महोटा दुःखने रहेवाना भाजनरूप (किं के०) केम

(होहिसि के०) थाय छे? ॥ ए१ ॥

नावार्थ—हे आत्मन्! तुं अदृष्टनावशथी डुर्लनएवा मनुष्यनवने पामीने तेमांवली जैनधर्म पामीने धर्मनेविषे प्रमाद न करय. तेमछतां जो प्रमाद करीश, तो महा डुःखने पामीश. ॥ए१॥

३ १ २ ६ ५ ४

बुझसु रेजीव तुमं। मामुझसि जिणमयंमि नाऊणं ॥

७ ए १० ११ १२ ८

जम्हा पुणरवि एसा। सामग्गी डुल्लहा जीव ॥ए२॥

अर्थ—(रे जीव के०) हे जीव (तुमं के०) तुं (बुझसु के०) धर्मने विषे बोध पाम्य. अने (नाऊणं के०) धर्मने जाणीने (जिणमयंमि के०) जिनशासनने विषे (मामुझसि के०) मोह न पाम्य. एटले सम्यक् प्रकारे जिनधर्म अंगीकार करय. (जम्हा के०) जे हेतु माटे (जीव के०) हे जीव! (पुणरवि के०) फरीने पण (एसा के०) आ (सामग्गी के०) धर्म सामग्री जे ते(डुल्लहा के०)डुर्लन छे. एटले फरी फरीने धर्म सामग्री मलवी महा डुर्लन छे.॥ए२॥

नावार्थ—हे आत्मन्! धर्म साधन करवाना अंगरूप एटले मनुष्यनो नव, गुरु श्रद्धा,

संजम, अने तेने विषे वीर्यनुं फोरववुं, ते फरी फरीने चक्रवेधनी पेठे, मलवुं महा डुर्लन ठे. एटले काकतालीय न्यायथी एक वखत तने मल्युं ठे; ते फरीथी मलवुं अत्यंत डुर्लन ठे.॥ए२॥

डुल्लहो पुण जिणधम्मो । तुमं पमायायरो सुहेसी य ॥
डुसहं च नरयडुक्खं । कह होहिसि तं न याणामो ॥ए३॥

अर्थ—हे जीव! आ (जिणधम्मो के०) आ पामेलो जिनधर्म जे ते, (पुण के०) वली फरीथी पामवो (डुल्लहो के०) महा डुर्लन ठे. अने (तुमं के०) तुं (पमायायरो के०) प्रमादनी खाण ठुं. अने (य के०) वली (सुहेसी के०) सुखनी वांठा करे ठे. एटले प्रमाद करीने सुखनी वांठा राखे ठे, ते सुख तने क्यांथी मलशे? (च के०) अने (नरयडुक्खं के०) नरकनां डुःख जे ते (डुसहं के०) डुःखे करीने पण सहन करवां कठण ठे. माटे (तं के०) ते (न याणामो के०) हुं नथी जाणतो के, (कह होहिसि के०) तुं किये प्रकारे थइश? एटले तहारी शी गति थशे? ते हुं नथी जांणतो. ॥ए३॥

भावार्थ—श्री आवश्यक निर्युक्तिमां कह्युं छे के, आळसथी साधु पासे जइने धर्म सांभळी शकतो नथी. तथा मोहथकी घरनी जंजाळने विषे मूढ थइने रह्यो छे. अर्थात् साधु पासे जइ नित्य शुं सांभळवुं छे? घणीवार सांभळेलुं छे. एम धारीने धर्म सांभळवानी अवज्ञा करे छे. तथा जात्यादिकना अभिमानथी तथा क्रोधथी तथा प्रमादथी एटले मद्यादिक कुव्यसन सेववाथी तथा कृपणपणाथी एटले जो उपाश्रे जइशुं, तो कोइ धर्ममार्गनी टीपमां लोकलाजथी कांइ आपवुं पडशे. तथा भयथी एटले जो उपाश्रे जइशुं, तो नरकादिकनां दुःख सांभळवां पडशे. तथा शोकथी तथा अज्ञानथी एटले भाइबंध दोस्तदारना ना कहेवाथी तथा व्याक्षेपथी एटले जाणी जोइने घणी जंजाळ ऊभी करवाथी तथा कुतूहलथी एटले गीत नाटकादिकना छंदमां पडवाथी तथा रमणथी एटले जनावरनी साथे क्रीडा करवाथी इत्यादिक अनेक कारणोथी पामेलुं एवुं पण मनुष्यपणुं एळे गमावे छे. एटले भव समुद्रथी तारनार अने सकळ सुखने आपनार एवा जिनधर्मने करतो नथी. अने संसारिक सुखनी वांछा करे छे. पण हे जीव! तुं सामान्य दुःख पण सहन करी शकतो नथी, त्यारे नरकनां दुसह दुःख तहाराथी केम सहन थशे? अने परलोकमां तहारी शी गति

थशे ? एम गुरु महाराज उपदेश करे छे. ॥९३॥

२ ६ ३ ७ ४ ८

अथिरेण थिरो समलेण निम्मलो परवसेण साहीणो ॥

५ १ १० ९ ११ १२ १३ १४

देहेण जइ विढप्पइ। धम्मो ता किं न पज्जत्तं ॥९४॥

अर्थ—रे जीव ! (जइ के०) जो (अथिरेण के०) अस्थिर एवा, तथा (समलेण के०) मलसहित एवा. अने (परवसेण के०) परवश एवा (देहेण के०) देहवडे (थिरो के०) स्थिर एवो. अने (निम्मलो के०) निर्मल एवो. अने (साहीणो के०) पोताने स्वाधीन एवो (धम्मो के०) धर्म जे ते (विढप्पइ के०) उपार्जन थइ शके छे, तो (ता के०) तहारे (किं न पज्जत्तं के०) शुं न प्राप्त थयुं ? अर्थात् सर्वे प्राप्त थयुं. ॥९४॥

भावार्थ—हे जीव ! आ अशाश्वता देहवडे परलोकमां निरंतर सहायकारी एवो धर्म उपार्जन थाय छे, तो शुं न परिपूर्ण थयुं? अर्थात् सर्वे परिपूर्ण थयुं. एटले घणो महोटो लाभ मल्यो, एम जाणवुं. तेमज आ मलमूत्र भरेला देहवडे निर्मल एवो जिनधर्म उपार्जन थाय तो,

शुं परिपूर्ण लाभ न मल्यो कहेवाय? अर्थात् जगत्मां जेटला लाभ कहेवाय छे, ते सर्वे लाभ मली चूक्याज कहेवाय. तेमज रोगादिकने आधीन एवा देहवडे जो स्वाधीन एवो जिनधर्म मले, तो शुं एने कांइपण मलवानी खामी रही कहेवाय? अर्थात् नज कहेवाय. ते कह्युं छे के,

चिन्तारत्नमनर्घ्यं चेत्प्राप्यते काचमंचयैः ॥
रेणुना चेद्धिरण्यं चेन्सुधाब्धिर्नीरबिन्दुना ॥१॥
ग्रहेण यदि साम्राज्यं देहेन सुकृतं यदि ॥
कस्तदा तन्न गृह्णीयात्तत्त्वातत्त्वविचारकः ॥२॥ युग्मम्.

अर्थ—तत्त्व अने अतत्त्वनो विचार करनार (बुद्धिमान्) पुरुष जे ते, काचना ककडा साटे, अमूल्य एवा चिंतामणि रत्नने कोण न ग्रहण करे? तथा धूल आपीने सोनुं कोण न ग्रहण करे? तथा पाणीनो बिंदु आपीने अमृतना समुद्रने कोण न ग्रहण करे? तथा पोताने रहेवानुं झुंपडुं आपीने चक्रवर्त्तिनुं राज्य कोण न ग्रहण करे? अर्थात् तत्त्वा तत्त्वना विचारनार तो तरतज ग्रहण करे! तेवीज रीते आ मलमूत्रादिके करीने भरपूर एवा देह वडे, पूर्वे कहेला चिंतामणी रत्न समान जैनधर्मने कोण न ग्रहण करे? अर्थात् जे महा मूर्ख होय तेज न ग्रहण करे. ॥१॥२॥

एवी रीते विचारीने आ महामलिन एवा शरीर उपरथी मोह उतारीने, जेम बने तेम शुद्ध एवा धर्मने ग्रहण करवु. ॥९४॥

२ ३ ४ ५ ६ ७ १

जह चिंतामणिरयणं । सुलहं न हु होइ तुच्छविहवाणं ॥

९ १० ८ ११

गुणविहववज्जियाणं । जियाण तह धम्मरयणंपि ॥९५॥

अर्थ—हे जीव! (तुच्छविहवाणं के०) तुच्छ विभव वालाने (जह के०) जेम (चिंतामणिरयणं के०) चिंतामणि रत्न जे ते (सुलहं के०) सुलभ एवुं (न हु होइ के०) नज होय. (तह के०) तेम (गुणविहववज्जियाणं के०) गुण रूप वैभवे करीने रहित एवा (जियाण के०) जीवाने (धम्मरयणंपि के०) धर्मरत्न जे ते पण, सुलभ न होय. ॥९५॥

भावार्थ—तुच्छ विभववाला जीवोने एटले पशुपाल जेवा स्वल्प पुण्यवाला प्राणियोने; जेम चिंतामणि रत्न सुखे पामवा जोग्य न होय, अर्थात् पुण्यहीन जीवो, जेम चिंतामणि रत्न पामी शके नहीं, तेम सम्यक्त्वादि गुणरूप विभवे करीने रहित एवा प्राणियो, शुद्ध

धर्मरूप रत्नने पामी शके नही. जे जयदेव कुमारनी पेठे घणा पुण्यरूप गुणोए करीने भरेला होय, तेज प्राणियो, आ मनुष्य गतिने विषे चिंतामणि रत्न समान सद्धर्म प्रत्ये पामे छे.॥८५॥

कथा.८ .

इहां पशुपाल अने जयदेवनुं वृत्तांत आ नीचे प्रमाणे.

हस्तिनापुर नगरने विषे नागदेव नामा शेठनी वसुंधरा भार्यानी कुखमां उत्पन्न थएलो जयदेव नामे पुत्र हतो. तेणे बार वर्ष सुधी रत्ननी परीक्षानो अभ्यास कर्यो. त्यार पछी ते शास्त्रना अनुसारे महा प्रभाववालु चिंतामणि रत्न जाणीने बीजा मणियोने पथरा तुल्य गणीने तेज चिंतामणि रत्नने मेलववा माटे सर्व नगरने विषे हाट हाट अने घर घर प्रत्ये भमतो हतो. परंतु ते रत्न क्यांहि पण पाम्यो नही. त्यारे खेद पामीने माता पिताने कहेतो हवो के, महारुं चित्त चिंतामणी रत्नने विषे लाग्युं छे. माटे हुं तेने अर्थे बीजे ठेकाणे जइश. त्यारे माता पिताए कह्युं. हे पुत्र! आतो निश्चे कल्पनाज छे. परंतु परमार्थ थकी चिंतामणी नथी. ते कारण माटे तुं पोतानी खुशी प्रमाणे बीजां रत्नोथी व्यापार करय. एवी रीते बहु कह्युं, परंतु जयदेव चिंतामणी पामवानो निश्चय करीने हस्तिनापुरथी नीकलीने घणा पर्वत, नगर, गाम, खाण, करबट, पत्तन, समुद्रतीर एटला स्थानकोने विषे ते चिंतामणीने खोलतो सतो घणा काल भम्यो. परंतु क्यांहि ते रत्न पाम्यो नही. पछी उदास मनवालो थइने पोताना मनमां विचार करवा लाग्यो के, शुं! आ चिंतामणी रत्न सांचुं छे? के, जुठुं छे? जे माटे क्यांहि पण देखवामां आवतुं नथी!! अथवा शास्त्रमां कहेलुं ते मणिनुं

ठतापणु फेरफार न होय. माटे क्यांहि पण हशे. एवो निश्चय करीने फरीने पण घणी मांणनी खाणो जोतो सतो.ते रत्ननी घणी खोल करवा लाग्यो. त्यार पछी एक दहाडो कोइक वृद्ध पुरुषे तेने कह्युं के, हे जड! इहां एक मणीनी खाण छे. तेने विषे जे पुण्यवंत प्राणी होय, ते चिंतामणी पामे. पछी जयदेव तेना वचनथी त्यां जइने चिंतामणी खोलवा लाग्यो. ते अवसरे त्यां एक मंदबुद्धिवाला पशुपालना हाथमां गोल आकारवालो पथरो देखीने ते पथराने शास्त्रमां कहेला लक्षणोये करीने चिंतामणी जाणीने, ते जयदेवे ते पशुपालनी पासे माग्यो. त्यारे पशुपाले कह्युं. तमारे आ पथरानुं शुं काम छे? जयदेवे कह्युं. हुं महारे घेर जइने छोकरांउने रमवा आपीश. पछी पशुपाले कह्युं. इहां आवा घणा पथरा पड्या छे. ते तमे पोतेज केम लेता नथी? जयदेव बोल्यो. हमणां महारे घेर जवानी उतावल छे. माटे एज मने आप्य. तुं इहांथी बीजो पामीश. एवी रीते कह्युं, तोपण ते पशुपाले परने उपकार करवाना स्वभावे रहितपणे करीने तेने न आप्यो. पछी जयदेवे उपकार बुद्धिये करीने तेने कह्युं. हे जड! जो तुं मने नथी आपतो, तो तुं पोतेज ए चिंतामणी रत्ननुं आराधन करय. जेथी आ चिंतामणी तने पण वांछित फल आपे. त्यारे पशुपाले कह्युं. जो आ चिंतामणी साचुं छे, तो महारुं चिंतवन करेलुं बहु, बोरडीना फलनुं चूरणादिक शीघ्र आपो. त्यारे लगारेक हसीने जयदेवे कह्युं अहो! एम न विचारीये. त्रण उपवास करीने संध्या समये ए माणेने शुद्ध पाणीथी पखालीने शुद्ध भूमिये उंचे स्थानके स्थापन करीने चंदन, बरास, फुलादिक वडे पूजीने अने वली नमस्कार करीने पछी एनी आगल जे पोताने इष्ट होय, ते चिंतवन करीए. ते सर्व पण प्रातःकालमां पामीये. ए प्रकारे सांभलीने ते पशुपाल पोतानी बोकडियोना समूहने लेइने गामना सन्मुख गयो. त्यार पछी ज-

यदेवे निश्चय करयो के, पुंण्य रहित एवा आना हाथमां आ चिंतामणी रत्न नहीं रहे एम विचारीने जयदेव पण तेनी पूंठे चाल्यो. हवे पशुपाल मार्गने विषे चालतो सतो कहेवा लाग्यो के, हे मणे! हमणां आ बोकडियो वेचीने बरास इत्यादिक लावीने तहारी पूजा करीश. तहारे पण महारो चिंतित अर्थ पूरवाने विषे उद्यम करवो. वली हे मणे! हजी गाम पण छेटे छे. माटे मार्गमां कांइक कथा कहे. अने जो तुं न जाणतो होय तो हुं तने कहुं. तुं सांभलय. एक नगरने विषे एक हाथनुं देहेरुं.अने तेमां च्यार हाथना देव छे. ए प्रकारे वारंवार मणिनी आगल कह्यु, तो पण ते मणि बोलतो नथी. तेटलामां ते मूर्ख, रोष चढावीने ते मणिने कहेतो हवो. अरे! जो तुं हुंकारो पण आपतो नथी, तो वांछित अर्थ निष्पन्न करवाने विषे ताहारी शी आशा!! अथवा तहारुं नाम चिंतामणी ए साचुं.छे. जूठुं नथी. केम के,तने पाम्यो त्यांथी मांडीने महारा मननी चिंता जती नथी!! वली जे हुं राब अने छाश विना क्षण मात्र पण रही न शकुं, ते हुं तहारा माटे करवा मांड्या एवा त्रण उपवासे करीनेज मरण पामुं. ए माटे हुं एम मानुं छुं के, आ वाणिये मने मारवाने माटे तहारुं वर्णन करयुं जणाय छे! ते माटे तुं त्यां जा. के, ज्यां फरीने महारे देखवो न पडे. एम कहीने तेणे ते मणिने छेटे नांखी दीधो. ते अवसरे जयदेव आनंद पामीने तत्काल नमस्कार करीने चिंतामणी ग्रहण करीने, संपूर्ण थयो छे मनोरथ ते जेनो एवो सतो पोताना नगरने सन्मुख चाल्यो. मार्गमां महापुर नगरने विषे मणिना प्रभावथी जेने घणुं द्रव्य प्राप्त थयुं छे एवो ते कुमार सुबुद्धि शेठनी रत्नवती नामे पुत्री तेने परणीने बहु परिवार सहित हस्तिनापुर नगरे आव्यो. आवीने पोताना माता पिताने पगे लाग्यो. ते अवसरे तेवी समृद्धि सहित तेने जोइने माता पिता आनंद पाम्यां. अने तेनी प्रशंसा करवा

लाग्यां. अने कुटुंबी लोको तेनु सन्मान करवा लाग्यां. अने बीजा लोको पण तेनी स्तवना करवा लाग्या. पोते जावज्जीव सुधी सुखी थयो. ए प्रकारे धर्मरूप रत्ननी प्राप्तिने विषे पशुपाल अने जयदेवनो उपनय कह्यो.

१ ४ ५ ६ २ ३

जह दिठीसंजोगो । न होइ जच्चंधयाण जीवाणं ॥

७ ९ १० ११ ८

तह जिणमयसंजोगो । न होइ मिछंधजीवाणं ॥९६॥

अर्थ–(जह के०) जेम (जच्चंधयाण के०) जन्माराथीज अंध एवा (जीवाणं के०) जीव जे तेमने (दिठीसंजोगो के०) दृष्टिनो संयोग जे ते. एटले आंखे करीने देखवुं (न होइ के०) न होय. (तह के०) तेम (मिछंधजीवाणं के०) मिथ्यात्वे करीने आंधला एवा जीवोने (जिणमयसंजोगो के०)जिनमतनो संयोग जे ते. एटले जिनमतनीप्राप्ति(न होइ के०)न होय.॥९६॥

भावार्थ–जेम जन्माराथी अंध थएला पुरुषोने स्थूल पदार्थ पण देखवामां आवतो नथी, तेम मिथ्यात्वरूप कुवासनाये करीने विवेकरूप चक्षुये रहित थएला जीवोने पण, जिनशासनरूप सूर्य दीठामां आवतो नथी. एटले जिनशासननी प्राप्ति थती नथी. ॥९६॥

१ . २ ३ ५ ४

पच्चक्खम ऽणंतगुणे । जिणिंदधम्मे न दोसलेसोवि ॥

६ ८ ७ १२ १३ ११ १० ८.

तहवि हु अन्नाणंधा । न रमंति कयावि तंमि जिया ॥८७॥

अर्थ—(पच्चक्खं के०) प्रत्यक्ष प्रमाणे करीने सिद्ध एवो. अने (अणंतगुणे के०) अनंता छे गुण ते जेने विषे एवो (जिणिंदधम्मे के०) जिनेंद्रनो धर्म तेने विषे (दोसलेसोवि के०) अपयश प्रमुख दोषनो लेश पण (न के०) नथी. (तहवि के०) तोयपण (अन्नाणंधा के०) अज्ञाने करीने आंधला एवा (जिया के०) जीव जे ते (हु के०) निश्चे (तंमि के०) ते जिनेंद्रनाषित धर्मने विषे (कयावि के०) क्यारे पण. एटले कोइ वखत पण (न रमंति के०) नथी रमता. एटले नथी जोडाता ! ॥८७॥

नावार्थ—आ लोकने विषे यश, अने परलोकने विषे स्वर्ग तथा मोक्षनां सुख आपवारूप गुणवाला, अने जेने विषे कांइपण दोष नथी एवा, श्री जिनेंद्रधर्मने प्रत्यक्षपणे देखे छे, तोयपण अज्ञाने करीने आंधला एवा जे पुरुषो, ते जेम जे वस्तु छे, तेम ते वस्तुने जणाव-

नार एवा श्री जिनधर्मने अंगीकार नथी करता. ॥९७॥

१ ३ २ ४ ८ ७ ५ ६
मिच्छे अणंतदोसा । पयडा दीसंति न वि य गुणलेसो ॥
९ १२ १३ ११ १५ १० १४
तहविय तं चेव जिया । ही मोहंधा निसेवंति ॥ ९८ ॥

अर्थ-(मिच्छे के०) मिथ्यात्वने विषे (पयडा के०) प्रकट एवा (अणंतदोसा के०) अनंत दोष जे ते (दीसंति के०) देखाय छे. (य के०) वली. तेमां (गुणलेसो वि के०) गुणनो लेश मात्र पण (न के०) नथी (तहविय के०) तोयपण (मोहंधा के०) मोहे करीने आंधला एवा (जिया के०) जीव जे ते (तं चेव के०) ते मिथ्यात्वनेज (निसेवंति के०) सेवे छे. ते (ही के०) निश्चे घणुंज आश्चर्य छे!!! ॥९८॥

भावार्थ-कुगुरु कुदेव अने कुधर्म तेमनो अंगीकार करवारूप अध्यवसायने विषे एटले मिथ्यात्वने विषे नरकपातादिक अनंत दोष प्रकट देखाय छे, पण तेमां गुणनोतो लवलेश पण देखातो नथी. तोयपण मोहे करीने अंध थएला जीवो, ते मिथ्यात्वनोज आश्रय करेछे.

एटले ते मिथ्यात्वनेज अंगीकार करे छे, परंतु जिनधर्मने अंगीकार नथी करता, ते घणुंज खेदकारक छे. !!! ॥ ९८ ॥

१२ ६ ७ ८ ९. १० ११

धिद्धी ताण नराणं । विन्नाणे तह गुणेसु कुसलत्तं ॥

१ ३ २ ४ ५

सुहसच्चधम्मरयणे । सुपरिक्खं जे न जाणंति ॥९९॥

अर्थ–(सुहसच्चधम्मरयणे के०) सुखकारी अने सत्य एवा धर्मरूप रत्नने विषे (जे के०) जे पुरुषो (सुपरिक्खं के०) रूडी रीते परीक्षाने (न जाणंति के०) नथी जाणता. अर्थात् नथी जाणी शकता, (ताण के०) ते (नराणं के०) पुरुषोना (विन्नाणे के० विज्ञानने विषे (तह के०) तथा (गुणेसु के०) गुणाने विषे, (कुसलत्तं के०) कुशलपणाने (धिद्धी के०) धिक्कार थाउ! धिक्कार थाउ!! ॥ ९९ ॥

भावार्थ–जगत्ने विषे जे पुरुषोनुं शिल्पचातुर्य, कलाकौशल्य, औदार्य तथा शौर्य धैर्यादिकने विषे कुशलपणु घणुंज वखणाय छे. एटले रत्नादिकनी परीक्षा करवामां घणा माह्या

कहेवाय छे, ते पुरुषो सुखकारी अने सत्य एवा धर्मरूप रत्ननी परीक्षा, जो न करी शक्या, तो तेमना सघला महापणपणाने अतिशे धिक्कार थाओ!! धिक्कार थाओ!!! ते उपर शास्त्रमां कह्युंछे के, बहोतेर कलामां कुशल एवा पंमित पुरुषो होय, तोपण जो तेमणे सर्व कलामां श्रेष्ठ एवी जे धर्मनी कला नथी जाणी, तो ते निश्चे अपंमितज जाणवा. माटे सर्व परीक्षा करतां धर्मरूप रत्ननी परीक्षा करवी, तेज श्रेष्ठ परीक्षा छे. ॥९९॥

॥ अनुष्टुप् वृत्तम्. ॥

२ १ ३ ४ ५

जिणधम्मो ऽयं जीवाणं । अप्पुवो कप्पपायवो ॥

७ ८ ९ ६

सग्गापवग्गसुक्खाणं । फलाणं दायगो इमो ॥१००॥

अर्थ—(अयं के०) आ (जिणधम्मो के०) जिनधर्म जे ते (जीवाणं के) जीवोने (अप्पुवो के०) अपूर्व एटले अप्रसिद्ध एवो (कप्पपायवो, के०) कल्पवृक्ष छे. केमके, (इमो के०) ए जिनधर्मरूप कल्पवृक्ष जे ते (सग्गापवग्गसुक्खाणं के०) स्वर्ग एटले देवलोक अने अपव-

र्ग एटले मोक्ष तेना सुखरूप (फलाणं के०) फलने (दाइगो के०) आपनारो छे. ॥१००॥

भावार्थ—आ जिनधर्मरूप कल्पवृक्ष अपूर्व छे. एटले प्रसिद्ध कल्पवृक्ष तो, फक्त आ लोकने विषे रहेलां पुद्गलिक सुखनेज आपनार छे. परंतु आ धर्मरूप कल्पवृक्षतो, स्वर्गादिक फलने तथा मोक्ष फलने आपनार छे. माटे अपूर्व कल्पवृक्ष कह्यो. एवुं जाणीने तेनोज आश्रय करवो. ॥१००॥

१ २ ४ ३ ६ ५ ७ ८
धम्मो बंधु सुमित्तो य । धम्मो य परमो गुरु ॥
१० ९ ११
मुक्खमग्गपयट्ठाणं । धम्मो परमसंदणो ॥१०१॥

अर्थ—रे जीव! (धम्मो के०) आ जिनधर्म जे ते (बंधु के०) बंधु (भाई) समान छे. (य के०) वली (सुमित्तो के०) सारा मित्र समान छे. (य के०) वली (धम्मो के०) धर्म जे ते (परमो गुरु के०) उत्कृष्टा गुरु समान छे. वली ते (धम्मो के०) धर्म जे ते (मुक्खमग्गपयट्ठाणं के०) मोक्ष मार्गने विषे प्रवर्त्तेला पुरुषोने (परमसंदणो के०) उत्कृष्टा रथ समान छे. ॥१०१॥

भावार्थ–जेम आपद् काळने विषे भाई सहायता करे छे, तेम संसाररूप आपद्काळमां, आ जिनधर्म पण सहायता करे छे, माटे भाई समान छे. तथा सारो मित्र जेम हितकारी अर्थने मेळवी आपवाथी सुख करे छे, तेम आ धर्मरूप मित्र पण मनोवांछित सुख मेळवी आपवाथी सुमित्र समान छे. तथा गुरु जेम असत्मार्गथी पाछो वाळे छे, तेम आ जिनधर्म पण, नरक तिर्यंचादिक दुर्गतिमां जवाथी पाछो वाळे छे. माटे उत्कृष्ट गुरु समान छे.तथा रथे करीने जेम मार्गमां सुखे सुखे जवाय छे,तेम धर्मरूप रथे करीने मोक्ष मार्गमां सुखे सुखे जइ शकाय छे.माटे धर्मने परम रथ समान कह्यो छे. एवुं जाणीने आवा जैनधर्मने विषे उद्यम करवो. ॥१०१॥

॥ आर्यावृत्तम्. ॥

२ १
चउगइणंतदुहानल। पलित्तभवकाणणे महाभीमे ॥
७ ३ ४ ६ ५
सेवसु रे जीव तुमं । जिणवयणं अमियकुंभसमं ॥१०२॥

अर्थ-(महाभीमे के०) महा भयंकर एवुं (चउगइणंतदुहानल के०) च्यार गतिमां रहे-लां एवां अनंतां दुःखरूप महोटा अग्निये करीने (पलित्तभवकाणणे के०) लागतुं एवुं जे संसाररूप वन, तेने विषे (रेजीव के०) हे जीव! (तुमं के०) तुं (अमियकुंभसमं के०) अमृतना कुंभ समान (जिणवयणं के०) जिनराजना वचनने (सेवसु के०) सेवन करच. एटले सिद्धांतमां कहेला अनुष्ठानने विधि सहित अंगीकार करच. ॥१०२॥

भावार्थ-आ संसाररूप भयंकर दावानलथी दाझेलो एवो जे तुं ते जिनवचनरूप अमृतना कुंभमां मग्न था. अर्थात् रूडा अनुष्ठानने ग्रहण करच. जेथी तने अपूर्व सुखशांति थशे. ॥१०२॥

२ ४ ३

विसमे भवमरुदेसे । अणंतदुहगिम्हतावसंतत्ते ॥

६ ८ ७ १ ५

जिणधम्मकप्परुक्खं । सरसु तुमं जीव सिवसुहदं ॥१०३॥

अर्थ-(जीव के०) हे जीव! (विसमे के०) विषम एटले चालनारने दुःखकारी एवा, अने (अणंतदुहगिम्हतावसंतत्ते के०) अनंतां दुःखरूप ग्रीष्मऋतुना तापवडे सारी पेठे त-

पेला एवा (नवमरुदेसे के०) संसाररूप मारवाड देशने विषे (सिवसुहदं के०) मोक्ष सुखने आपनारं एवा (जिणधम्मकप्परुरकं के०) जिनधर्मरूप कल्पवृक्षने (तुमं के०) तुं (सरसु के० आश्रय करय. (आ जग्याये टीकाकारे कल्पवृक्षनुं स्मरण करय. एवो अर्थ कर्यो छे; ते विचारवा योग्य छे.) ॥१०३॥

भावार्थ—हे जीव ! संसारनां अनेक दुःखरूप मारवाड देशनी तपेली रेती, तेमां भ्रमण करता प्राणियोने महोटा भाग्ये प्राप्त थयेलो जिनधर्मरूप कल्पवृक्ष, तेज आश्रय करवा योग्य छे. के, जेथी सकल वांछित सुखनी सिद्धि थाय. ॥१०३॥

किं बहुणा जिणधम्मे । जइयवं जह भवोदहिं घोरं ॥
लहु तरियम ऽणंतसुहं । लहइ जिउ सासयं ठाणं ॥१०४॥

अर्थ—हे आत्मन् ! (किं बहुणा क०) घणुं कहेवे करीने शुं ! ते प्रकारे (जिणधम्मे के०) जिनधर्मने विषे (जइयवं के०) यत्न करवो. (जह के०) जेम (जिउ के०) जीव जे ते (घोरं

के०) नयानक एवा (नवोदहिं के०) संसाररूप समुद्रने (लहु के०) शीघ्रपणे (तरियं के०) तरीने (अणंतसुहं के०) अनंतु छे सुख ते जेने विषे एवुं (सासयं ठाणं के०) शाश्वतुं स्थान एटले मोक्ष तेने (लहइ के०) पामे. ॥१०४॥

नावार्थ—हे नव्य जीवो! आखा ग्रंथनो सारमां सार एटलोज कहेवानो छे के, जिनधर्मने विषे प्रमाद रहितपणे प्रयत्न करो. के, जेथी तमने मोक्षनुं शाश्वतुं सुख प्राप्त थाय. ते सुखनुं वर्णन थइ शके तेम नथी. तेम छतां जो तेना स्वरूपने जाणवानी मरजी होय तो, श्री आचारांगजी सूत्रना पांचमा लोकसार नामा अध्ययनमां जोइ लेज्यो. ॥१०४॥

आ ग्रंथना ५८ मा तथा ६० मा गाथानी पुंठिमां जणाव्युं छे के, सागरोपमनुं तथा पुद्गलपरावर्त्तनुं स्वरूप ग्रंथने अंते जणावीशुं; ते इहां जणावीए छीए.

अति सूक्ष्मकालने एक समय कहे छे. तेवा असंख्याता समये एक आवली थाय. तेवी (१६७७७२१६) एकक्रोड सडसठलाख शित्तोतेरहजार बशेंने सोल आवलीये, एक मुहूर्त

थाय छे. तेवा त्रीश मुहूर्त्ते एक अहोरात्रीरूप दिवस थाय छे. तेवा पंदर अहोरात्रीये एक पखवाडियुं थाय छे. तेवा बे पखवाडियें एक महिनो थाय छे. तेवा बार महिने एक वर्ष थाय छे. तेवा असंख्याता कोडाकोडि वर्षे एक *पल्योपम थाय छे. तेवा दश कोडाकोडि पल्योपमे एक अद्धा सागरोपम थाय. ॥इति सागरोपम प्रमाणम्.॥

एज रीते एटले पूर्वे कह्या तेवा दश कोडाकोडि सागरोपमे, उत्सर्प्पिणी अने बीजा दश कोडाकोडि सागरोपमे, अवसर्प्पिणी थाय. ए बे मलीने वीश कोडाकोडि सागरोपमे, एक कालचक्र थाय. एवा अनंता कालचक्रे एक पुद्गलपरावर्त्त थाय. ॥इतिपुद्गलपरावर्त्तप्रमाणम्.॥

---

*इहां पल्योपम त्रण प्रकारना छे. ते कहे छे. १ उद्धार पल्योपम. २ अद्धा पल्योपम. ३ क्षेत्र पल्योपम. तेमां वली एकेकना बादर अने सूक्ष्म एवा बे बे भेद छे. तेमांना अद्धा पल्योपमनुं स्वरूप जणावीए छीए. केम के, आ बादर अद्धा पल्योपमे करीनेज जीवोनां आउखां, कायस्थिति, कर्मस्थिति, पुद्गलस्थिति आदिकनुं प्रमाण गणाय छे माटे. ते अद्धा पल्योपमना पण सूक्ष्म अने बादर एवा बे भेद छे. तेमां प्रथम बादर अद्धा पल्योपमनुं स्वरूप कहीए छीए:

देवकुरु उत्तरकुरु क्षेत्रमां जन्मेलां जुगलियाना वाल ते एवा के, जे जुगलने जन्मे एक बे यावत् सात

दिवस थया होय, तेवा जुगलियाना केश (वाल) लेइने तेना एवा ककडा करवा के, ते ककडानो बीजो ककडो थइ शके नही. तेवा वालाग्रने च्यार गाउनो लांबो, च्यार गाउनो पहोलो अने च्यार गाउनो ऊंडो एवा कूवामां ते वालाग्रने एवा ठांशीठांशीने भरीये के, तेना उपर थइने चक्रवर्तिनुं सैन्य चाले, तो पण ते वालाग्र हाली शके नही. तथा अग्निये बली शके नही, तथा पाणीए करी भींजाय नही. एटले तेनी अंदर पाणी उतरी शके नही, तथा वायरे करी ते वालाग्र उडी शके नही. एवा ठांशी ठांशीने भरया होय, पछी ते वालाग्रनो एकेको ककडो सो सो वर्षे काढीए. ते काढतां काढतां ज्यारे ते कूवो तमाम खाली थाय, त्यारे एक अद्धा बादर पल्योपम थाय. तेनां संख्यातां कोडाकोडि वर्ष थाय. आ दृष्टांत कथन मात्र छे. केम के, आ प्रमाण गणत्रीमां आवतुं नथी. गणत्रीमां तो सूक्ष्म अद्धा पल्योपम आवे छे. तेनुं स्वरूप निचे कहीए छीए.

पूर्वे कह्या एवा जुगलियाना एकेका वालाग्रना, असंख्याता खंड कल्पवा. ते वालाग्रना खंडे करी पूर्वे कह्या प्रमाणे, ते कूवो ठांशी ठांशीने भरीये. पछी तेमांथी पूर्वनी पेठे एकेको वालनो ककडो सो सो वर्षे काढीए. पछी ज्यारे ते कुवो तमाम खाली थाय, त्यारे एक सूक्ष्म अद्धा पल्योपम थाय. तेनां असंख्यातां कोडाकोडि वर्ष थाय. तेवा दश कोडाकोडि सागरोपमे एक अद्धा सागरोपम थाय. एवी रीतना सागरोपमनुं प्रमाण आ जग्याए जाणवुं. आ वात्तनो विशेष विस्तार श्री अनुयोगद्वार सूत्र तथा पांचमा कर्म ग्रंथमां छे. त्यांथी विस्तारना अर्थिये जोइ लेवुं.

आ ग्रंथनो बाळावबोध करनार कहे छे के,—

॥ उपजाति वृत्तम् ॥

प्रबन्धचिन्तामणि,धर्मबिन्दु।श्रीहारिभद्राष्टकसंघपट्टाः ॥
भाषान्तरेणाभियुता यतः स्युः । सोयं प्रभावो मयि संघदृष्टेः ॥ १ ॥

॥ अनुष्टुप् वृत्तम् ॥

मन्मुखान्निर्गतो यावान् । अस्यार्थो लिखितो निशि ॥
विद्याभ्यासवतां तुष्ट्यै । कचरा गोपाल श्रेष्ठिना ॥ २ ॥

॥ इति श्री जैनीय अध्यापक, शास्त्री रा.[illegible] दीनानाथ विरचित
श्री वैराग्यशतकनो दंमान्वय सहित बालावबोध समाप्त. ॥

॥ श्री जैन बोल विचार. ॥

बोल १ लो.

१ आतमा ॥ १ समय ॥ (उंडामां उंडो काल.) ॥ १ प्रदेश ॥ (जेनो विभाग नथी थतो) १ परमाणु. (जेनाथी बीजी कोइ पण झीणी वस्तु नथी,) १ सिद्धसिला ॥ १ असंयम ॥

बोल २ जो.

१ राग, ने २ द्वेष ॥ १ सापेक्ष, ने २ निरपेक्ष ॥ १ निश्चे, ने २ व्यवहार ॥ १ सिद्धना जीव, ने २ संसारी जीव ॥ १ पर्याप्ता, ने २ अपर्याप्ता ॥ १ प्रत्येक, ने २ साधारण ॥ १ गद्य, ने २ पद्य ॥ १ लोक, ने २ अलोक ॥ १ द्रव्य, ने २ भाव ॥ १ उत्सर्ग ने २ अपवाद ॥ १ जीवराशि, ने २ अजीवराशि ॥ १ श्वेतांबर, ने २ दिगंबर ॥ १ सूक्ष्म, ने २ बादर ॥ १ त्रस ने २ थावर ॥ १ उत्सर्प्पिणी, ने २ अवसर्प्पिणी ॥ १ संज्ञी, ने २ अ-

संज्ञी ॥ १ बाह्य तप, ने २ आभ्यंतर तप ॥ १ सामान्य,ने २ विशेष ॥ १ कृष्णपक्षी जीव, ने २ शुक्लपक्षी जीव ॥ १ शाश्वत, ने अशाश्वत ॥ १ आरंभ, ने परिग्रह ॥ १ अर्थदंड, ने २ अनर्थदंड ॥ १ कालिक सूत्र, ने २ उत्कालिक सूत्र ॥ १ सरागी संयम, ने २ वीतरागी संयम ॥ १ छद्मस्थ, ने २ केवली ॥ १ परित संसारी, ने २ अनंत संसारी ॥ १ सुलभबोधि जीव, ने २ दुर्लभबोधि जीव ॥ १ देश विरति धर्म, ने २ सर्व विरति धर्म ॥

बोल ३ जो.

त्रण गुप्ति. १ मन गुप्ति, २ वचन गुप्ति, ने ३ काय गुप्ति ॥ ३ त्रण दंड. १ मन दंड, २ वचन दंड, ने ३ काय दंड ॥ त्रण तत्त्व. १ देव तत्त्व, २ गुरु तत्त्व, ने ३ धर्म तत्त्व ॥ त्रण शल्य. १ माया शल्य, २ नियाण शल्य, ने ३ मिथ्यादर्शन शल्य ॥ त्रण लिंग. १ स्त्री लिंग, २ पुरुष लिंग, ने ३ नपुंसक लिंग ॥ त्रण दृष्टि. १ समकित दृष्टि. २ मिथ्या दृष्टि, ने ३ मिश्र दृष्टि ॥ त्रिपदी. १ उत्पाद, २ व्यय, ने ३ ध्रुव ॥ त्रण वस्तु. १ हेय, २ ज्ञेय, ने ३ उपादेय ॥ त्रण दंड. (शिक्षा.) १ हकार, २ मकार, ने ३ धिक्कार ॥ त्रण अज्ञान. १ मतिअज्ञान, २ श्रुत अज्ञान, ने ३ विभंग ज्ञान ॥ त्रण प्रकारना आहार. १ ओज आहार,

२ लोम आहार, ने ३ कवल आहार ॥ त्रण प्रकारना आत्मा. १ अंतरात्मा, २ बहीरात्मा, ने ३ परमात्मा ॥ त्रण गारव. १ ऋद्धिगारव, २ रसगारव, ने ३ शातागारव ॥ त्रण विराधना. १ ज्ञान विराधना, २ दर्शन विराधना, ने ३ चारित्र विराधना ॥ त्रण प्रकारना जीव. १ भव्य, २ अभव्य, ने ३ नोभव्य नोअभव्य ॥ त्रण वचन. १ एकवचन, २ द्विवचन, ने ३ बहुवचन ॥ त्रण दर्शन. १ समकित दर्शन, २ मिथ्या दर्शन, ने ३ मिश्र दर्शन ॥ त्रण मनोरथ. १ क्यारे हुं आरंभ परिग्रहने छांडीश? २ क्यारे हुं अणगार थइश? अने ३ क्यारे हुं आलोवी निंदी पंडित मरणे मरीश? ॥ त्रण लोक. १ ऊर्ध्व लोक, २ अधो लोक, ने ३ तिर्छो लोक ॥ त्रण प्रकारना जड. १ ऋजुजड, २ वक्रजड, ने ३ ऋजुप्राज्ञ ॥ त्रण लोक. १ स्वर्ग, २ मृत्यु, ने ३ पाताल ॥ १ द्रव्य, २ गुण, ने ३ पर्याय ॥ त्रण प्रकारना भव्य. १ निकटभव्य, २ मध्यभव्य, ने ३ दुर्भव्य ॥ त्रण प्रकारना जीव. १ भवाभिनंदी, २ पुद्गलानंदी, ने ३ आत्मानंदी ॥ त्रण विकलेंद्रि. १ बेइंद्रि, २ तेइंद्रि, ने ३ चौरेंद्रि ॥ त्रण प्रकारना वैराग्य. १ दुःख गर्भित, २ मोह गर्भित, ने ३ ज्ञान गर्भित ॥ १ जघन्य, २ मध्यम, ने ३ उत्कृष्ट ॥ समकिती पुरुषनां त्रण लिंग. १ सिद्धांत सांभलवानी अतिशे अभिलाषा,

२ चारित्र धर्म (व्रत पच्चरकाण करवा) नी अतिशे अनिलाषा, ने ३ देव गुरु प्रमुख उत्तम पुरुषोनी वैयावृत्य करवामां सावधान ॥ तिर्यंच पंचेंद्रिना त्रण नेद. १ जलचर, थलचर, ने ३ खेचर ॥ मनुष्यना त्रण नेद. १ कर्म नूमिना, २ अकर्म नूमिना, ने ३ अंतरद्वीपना ॥

बोल ४ थो.

च्यार कषाय. १ क्रोध, २ मान, ३ माया, ने ४ लोन ॥ च्यार नाषा. १ सत्य नाषा, २ असत्य नाषा, ३ मिश्र नाषा, ने ४ व्यवहार नाषा ॥ च्यार अनुयोग. १ चरण करणानुयोग, २ द्रव्यानुयोग, ३ धर्मकथानुयोग, ने ४ गणितानुयोग ॥ च्यार प्रमाण. १ प्रत्यक्ष प्रमाण, २ अनुमान प्रमाण, ३ उपमा प्रमाण, ने ४ आगम प्रमाण ॥ च्यार गति. १ नरक २ तिर्यंच, ३ मनुष्य, ने ४ देवता ॥ च्यार ध्यान. १ आर्त्त ध्यान, २ रौद्र ध्यान, ३ धर्म ध्यान, ने ४ शुक्ल ध्यान ॥ च्यार वेद. १ ऋग्वेद, २ यजुर्वेद, ३ सामवेद, ने ४ अथर्वण वेद ॥ च्यार प्रकारनी बुद्धि. १ उत्पातकी, २ विनयकी, ३ कार्मणकी, ने ४ परिणामकी ॥ च्यार प्रकारनी स्त्रीयो. १ पद्मणी, २ हंसणी, ३ चित्रणी, ने ४ शंखणी ॥ च्यार तीर्थ. १ साधु, २ साध्वी, ३ श्रावक, ने ४ श्राविका ॥ च्यार प्रकारनी कथा. १ आक्षेपिणी, २ विक्षेपिणी,

३ निर्वेदिनी, ने ४ संवेदिनी ॥ च्यार प्रकारनुं अदत्त. १ तीर्थंकर अदत्त, २ गुरु अदत्त, ३ स्वामी अदत्त, ने ४ जीव अदत्त ॥ च्यार विकथा. १ स्त्री कथा, २ भक्त कथा, ३ देश कथा, ने ४ राज कथा ॥ च्यार जातिना देवता. १ भवनपति, २ वाणव्यंतर, ३ जोतिषी, ने ४ वैमानिक ॥ च्यार प्रकारना आहार. १ अशन, २ पान, ३ खादिम, ने ४ स्वादिम ॥ च्यार निक्षेपा. १ नाम, २ स्थापना, ३ द्रव्य, ने ४ भाव ॥ च्यार असल वर्ण. १ ब्राह्मण, २ क्षत्रिय, ३ वैश्य, ने ४ शूद्र ॥ च्यार प्रकारनी चतुरंगी सेना. १ हाथी, २ घोडा, ३ रथ, ने ४ पायदल ॥ च्यार जातिना पुरुषो. १ उगीने उग्या. ते भरतेश्वर. २ उगीने आथम्या, ते ब्रह्मदत्त चक्रवर्त्ती. ३ आथमीने उग्या, ते हरिकेशी अणगार. ने ४ आथमीने आथम्या, ते कालिकसूर कसाइ ॥ च्यार प्रत्येक बुद्ध. १ करकंडु, २ दुम्मुह, ३ नमि, ने ४ निग्गइ ॥ च्यार प्रकारनो धर्म. १ आचार धर्म, २ दया धर्म, ३ क्रिया धर्म, ने ४ वस्तु धर्म ॥ धर्मनां च्यार कारण. १ दान, २ शील, ३ तप ने ४ भावना ॥ १ द्रव्य, २ क्षेत्र, ३ काल, ने ४ भाव. १ नारकीना जीवने महावेदना, ने अल्प निर्जरा जाणवी. २ साधुने महावेदना, ने महा निर्जरा गजसुकुमारनी पेठे, ३ देवताने अल्प वेदना, ने अल्प निर्जरा, ने ४ सेलेशी करणे

४ अपराजित, ने ५ सर्वार्थसिद्ध ॥ पांच चारित्र. १ सामायिक चारित्र, २ छेदोपस्थापनीय चा० ३ परिहारविशुद्धिक चा० ४ सूक्ष्मसंपराय चा० ने ५ यथाख्यात चारित्र ॥ पांच प्रकारना देव. १ नविय द्रव्यदेव, २ नरदेव, ३ धर्मदेव, ४ देवाधिदेव, ने ५ नावदेव ॥ पांच ज्ञान. १ मति ज्ञान, २ श्रुत ज्ञान, ३ अवधि ज्ञान, ४ मनःपर्यवज्ञान, ने ५ केवलज्ञान ॥ पंचांगी. १ सूत्र, २ निर्युक्ति, ३ नाष्य, ४ चूर्णी, ने ५ टीका ॥ पांच समकित. १ उपशम समकित, २ क्षयोपशम स० ३ क्षायिक स० ४ सास्वादान स० ने ५ वेदक स० ॥ पांच प्रकारना विषय. १ शब्द, २ रूप, ३ रस, ४ गंध, ने ५ स्पर्श ॥ पांच समिति. १ इर्या समिति, २ नाषा समिति, ३ एषणा समिति, ४ आदानमत्त नंम निक्षेपना समिति, ने ५ उच्चार पासवण खेलजल्ल सिंघाण पारिठावणिया समिति ॥ पांच आचार. १ ज्ञान आचार, २ दर्शन आचार, ३ चारित्र आचार, ४ तप आचार, ५ ने वीर्य आचार ॥ पांच निर्ग्रंथ. १ पुलाक, २ बकुश, ३ कुशील, ४ निर्ग्रंथ, ने ५ स्नातक ॥ तीर्थंकरनां पांच कल्याणक. १ च्यवन, २ जन्म, ३ दीक्षा, ४ केवल, ने ५ निर्वाण ॥ पांच स्थावरनां गोत्र. १ पृथ्वीकाय, २ अप्काय, ३ तेउकाय, ४ वायुकाय, ने ५ वनस्पतिकाय ॥ हवे तेनां नाम कहे छे. १ इंदिथावर काय, २

बंबीथावर काय, ३ सर्पीथावर काय, ४ सुमति थावर काय, ने ५ पयावच्च थावर काय ॥ पांच जातिना तिर्यंच. १ जलचर, २ स्थलचर, ३ खेचर, ४ उरः परिसर्प, ने ५ नूज परिसर्प. ए पांच गर्भज तिर्यंच, अने एवा पांच सम्मूर्छिम तिर्यंच पंचेंद्रिय; एम दश नेद ॥ पांच प्रकारना जोतिषी देवो. १ चंड, २ सूर्य, ३ ग्रह, ४ नक्षत्र, ने ५ तारा ॥ पांच प्रकारनां दान. १ अनय, २ सुपात्र, ३ अनुकंपा, ४ उचित, ने ५ कीर्त्ति ॥ पांच प्रकारना पासत्था. १ पासत्थो, २ उसन्नो, ३ कुशीलियो, ४ संसत्तो, ने ५ अहछंदो ॥ पांच प्रकारनां दूषण. १ शंका—वीतरागना वचनमां संदेह, २ कांक्षा—जिनमत विना वीजा मतनी वांछा करवी, ३ विचिकित्सा—धर्मना फलने विषे संदेह करवो, ४ अन्यतिर्थिनी प्रशंसा, ने ५ अन्यतीर्थिनो परिचय ॥ पांच नूषण. १ जिनमार्गने विषे कुशल होय, २ जिनशासनने दिपाववुं तथा वृद्धि थाय तेम करवुं, ३ तीर्थनी सेवा करवी, ४ जिनधर्मने विषे दृढता राखवी, ने ५ देव गुरु तथा सिद्धांतनो विनय वैयावृत्य करवो ॥ पांच लक्षण. १ उपशम एटले च्यार कषायनुं टालवुं, २ संवेग एटले मोक्षना सुखनी अनिलाषा राखवी, ३ निर्वेद एटले संसारना दुःखथी उदास रहेवुं, ४ अनुकंपा एटले जीवने दुःखथी निवारण करवानी इ-

ह्वा, ने ५ आस्तिक्य एटले वीतरागना वचन उपर दृढ आस्था राखवी ॥

बोल ६ ठो.

६ आवश्यक. १ सामायिक, २ चउविसत्थो, ३ वंदना, ४ पडिक्कमणं, ५ काउस्सग्ग, ने ६ पच्चक्खाण ॥ ६ संघयण. १ वज्रऋषभनाराच, २ ऋषभनाराच, ३ नाराच, ४ अर्द्धनाराच, ५ कीलिका, ने ६ छेवठुं ॥ ६ लेश्या. १ कृष्ण, २ नील, ३ कापोत, ४ तेजो ५ पद्म, ने ६ शुक्ल ॥ ६ काय. १ पृथ्वीकाय, २ अप्काय, तेउकाय, ४ वायुकाय, ५ वनस्पतिकाय, ने ६ त्रसकाय ॥ ६ संस्थान. १ समचतुरस्र, २ न्यग्रोध परिमंडल, ३ सादि, ४ कुब्ज, ५ वामन, ने ६ हुंडक ॥ ६ पर्याप्ति. १ आहार पर्याप्ति, २ शरीर प० ३ इंद्रिय प० ४ श्वासोश्वास प० ५ भाषा प० ने ६ मनःपर्याप्ति ॥ ६ आरा. १ सुखम सुखमा, २ सुखमा, ३ सुखम दुःखमा, ४ दुःखम सुखमा, ५ दुःखमा, ने ६ दुःखम दुःखमा ॥ ६ द्रव्य. १ धर्मास्ति काय, २ अधर्मास्ति काय, ३ आकाशास्ति काय, ४ जीवास्ति काय, ५ पुद्गलास्ति काय, ने ६ अद्धा समय काल ॥ ६ भाषा. १ मागधी भाषा, २ प्राकृत भाषा, ३ संस्कृत भाषा, ४ शौरशेनी भाषा, ५ पैशाची भाषा, ने ६ अपभ्रंश भाषा ॥

श्रावकना ६ आगार. १ राजाने कारणे, २ ज्ञाति आदिकने कारणे, ३ बळवंत चोर तथा म्लेच्छादिकने कारणे, ४ देवताने कारणे, ५ अटवीने विषे आजीविकाने कारणे, ने ६ माता पिताने कारणे ॥ साधु ६ कारणे आहार करे. १ क्षुधानी वेदनाये, २ आचार्यादिकनी वैयावच्च करवाने अर्थे, ३ इर्यासमिति शोधवा माटे, ४ संयम पाळवा माटे, ५ जीवितव्य रक्षा माटे, ने ६ शुभ ध्यान करवा माटे ॥ साधु ६ कारणे आहार न करे. १ ज्वरादिक रोग आवे, २ मावापने उपसर्ग रूप कारणे, ३ ब्रह्मचर्य राखवा माटे, ४ तप करवा माटे, ५ जीव दया पाळवा माटे, ने ६ अंत संलेषणाये शरीर छांडवा माटे ॥ षट् कारक. १ कर्त्ता, २ कार्य (कर्म), ३ कारण, ४ संप्रदान, ५ अपादान, ने ६ आधार ॥ ६ प्रकारना दिग् आहार. १ अधो दिशि आहार, २ ऊर्ध्व दिशि०, ३ पूर्व दिशि०, ४ पश्चिमदिशि०, ५ उत्तर दिशि०, ने ६ दक्षिण दिशि० ॥ समकितनी ६ प्रकारनी जावना. १ आ समकित, धर्मरूप वृक्षनुं मूळ छे. २ आ समकित, धर्मरूप नगरनुं द्वार छे, ३ आ समकित धर्मरूप मंदिरनो मूळ पायो छे ॥ ४ आ समकित, धर्मने रहेवानो आधार छे, ५ आ समकित, धर्मनुं जाजन एटले पात्र छे, ने ६ आ समकित, धर्मनो निधि छे ॥ ६ प्रकारनां स्थान. १ जीव छे,

२ ते जीव नित्य छे. ३ ते जीव कर्मनो कर्त्ता छे, ४ ते जीव पोताना करेलां कर्म प्रत्ये जोग वे, ५ ते जीवने मोक्ष छे, ने ६ ते जीवने मोक्षनो उपाय एटले कर्म रहित थवानुं रुडुं साधन छे ॥ छ प्रकारनी जतना. अन्यतीर्थि, अन्यतीर्थिना देव, अने अन्यतीर्थिए ग्रहण करेलां अरिहंतनां चैत्य तेमने बे हाथ जोडी वंदन करवुं नही, २ पूर्वे कह्या तेमने नमस्कार करवो नहीं, ३ तेमनी साथे बोलाव्या विना बोलवुं नही, ४ तेमनी साथे वारंवार बोलवुं नही, ५ तेमने अशनपानादि धर्म बुद्धिए आपवुं नहीं, ने ६ तेमने गंध पुष्पादि मोकलवां नही।

बोल ७ मो.

सप्त भंगी. १ स्याद् अस्ति, २ स्याद् नास्ति, ३ स्याद् अस्ति नास्ति. ४ स्याद् अवक्तव्य, ५ स्याद् अस्ति अवक्तव्य, ६ स्याद् नास्ति अवक्तव्य, ने ७ स्याद् अस्तिनास्ति युगपत् अवक्तव्य ॥ सात नय. १ आलोक नय, २ परलोक नय, ३ आदान नय, ४ अकस्मात् नय, ५ अजीव नय, ६ मरण नय, ने ७ पूजाश्लाघा नय ॥ सात नरकनां नाम. १ घमा, २ वंशा, ३ सेला. ४ अंजणा, ५ रिठा, ६ मघा, ने ७ माघवती ॥ तेनां सात गोत्र. १ रत्नप्रभा, २ शर्कराप्रभा, ३ वालुकाप्रभा, ४ पंकप्रभा, ५ धूमप्रभा, ६ तमःप्रभा,

ने ७ तमस्तमःप्रभा ॥ सात व्यसन. १ जुवारुं, २ मांस, ३ मदिरा, ४ वेश्यानो संग, ५ महोटी जीवहिंसा, ६ चोरी, ने ७ परस्त्री सेवन ॥ सात नय. १ नैगम, २ संग्रह, ३ व्यवहार, ४ ऋजुसूत्र, ५ शब्द, ६ समभिरूढ, ने ७ एवंभूत ॥ सात समुद्घात ॥ १ वेदना समुद्घात, २ [illegible] ३ मारणांतिक०, ४ वैक्रिय०, ५ तैजस०, ६ आहारक०, ने ७ केवली समुद्घात ॥ आयुष्य घटवाना सात प्रकार. १ सराग स्नेहना भयथी, २ दंड शस्त्रादिकना घातथी, ३ अत्यंत आहार करवाथी, नेत्र अने शूलादिकनी वेदनाथी, ५ पराघातथी, ६ सर्पादिकना स्पर्शथी, ने ७ श्वासोश्वास रुंधवाथी ॥

बोल ८ मो.

आठ सिद्धि. १ अणिमा सिद्धि. २ महिमा सिद्धि, ३ लघिमा सिद्धि, ४ गरिमा सिद्धि, ५ प्राप्ति सिद्धि, ६ प्राकाम्य सिद्धि, ७ ईशित्व सिद्धि, ने ८ वशित्व सिद्धि ॥ आठ मद. १ जाति मद. २ कुल मद, ३ बल मद, ४ रूप मद, ५ तप मद, ६ श्रुत मद, ७ लाभ मद, ने ८ ऐश्वर्य मद ॥ आठ कर्म. १ ज्ञानावरणी, २ दर्शनावरणी, ३ वेदनी, ४ मोहनी, ५ आयुः ६ नाम, ७ गोत्र, ने ८ अंतराय कर्म ॥ इत्यादि. ॥

॥ अथ श्री मूर्ख प्रतिबोध सझाय. ॥

ज्ञान कदि नवि थाय, मूरखने ज्ञान कदि नवि थाय; कहेतां पोतानुं पण जाय, ॥ मू० १ ॥ ए टेक ॥ श्वान होय ते गंगा जलमां, सो वेला जो न्हाय; अडसठ तीरथ फरि आवे पण, श्वानपणुं नवि जाय ॥ मू० के० २ ॥ क्रूर सर्प पय पान करंतां, संतपणु नवि थाय; कस्तूरिनुं खातर जो कीजे, वास लसण नवि जाय ॥ मू० के० ३ ॥ वृषा समे सुग्री ते पक्षी, कपि उपदेश कराय; ते कपिने उपदेश न लाग्यो, सुग्री गृह विंखाय ॥ मू० के० ४ ॥ नदि मांहे निशि दिन रहे पण, पाषाणपणु नवि जाय; लोह धातु टंकण जो लागे, अग्नि तुरत झराय ॥ मू० के० ५ ॥ काग कंठमां मुक्ताफलनी, माला ते न धराय; चंदन चर्चित अंग करीजे, गर्धव गाय न थाय ॥ मू० के० ६ ॥ सिंह चरम कोइ शियाल सुतने, धारे वेश बनाय, शियाल सुत पिण सिंह न होवे, शियालपणु नवि जाय ॥ मू० के० ७ ॥ ते माटे मूरखथी अलगा, रहे ते सुखीया थाय; ऊखर भूमि बीज न होवे, उलटुं बीज० ते जाय ॥ मू० के० ८ ॥ समकितधारी संग करीजे, भव भय भीति मिटाय; मयाविजय सद्गुरु सेवाथी, बोधि बीज सुख पाय ॥ मू० के० ९ ॥ इति श्री सझाय संपूर्णम् ॥

॥ इति श्री वैराग्यरत्नाकर भाग १ लो. ॥

॥ समाप्त. ॥